

NOT FOR SALE

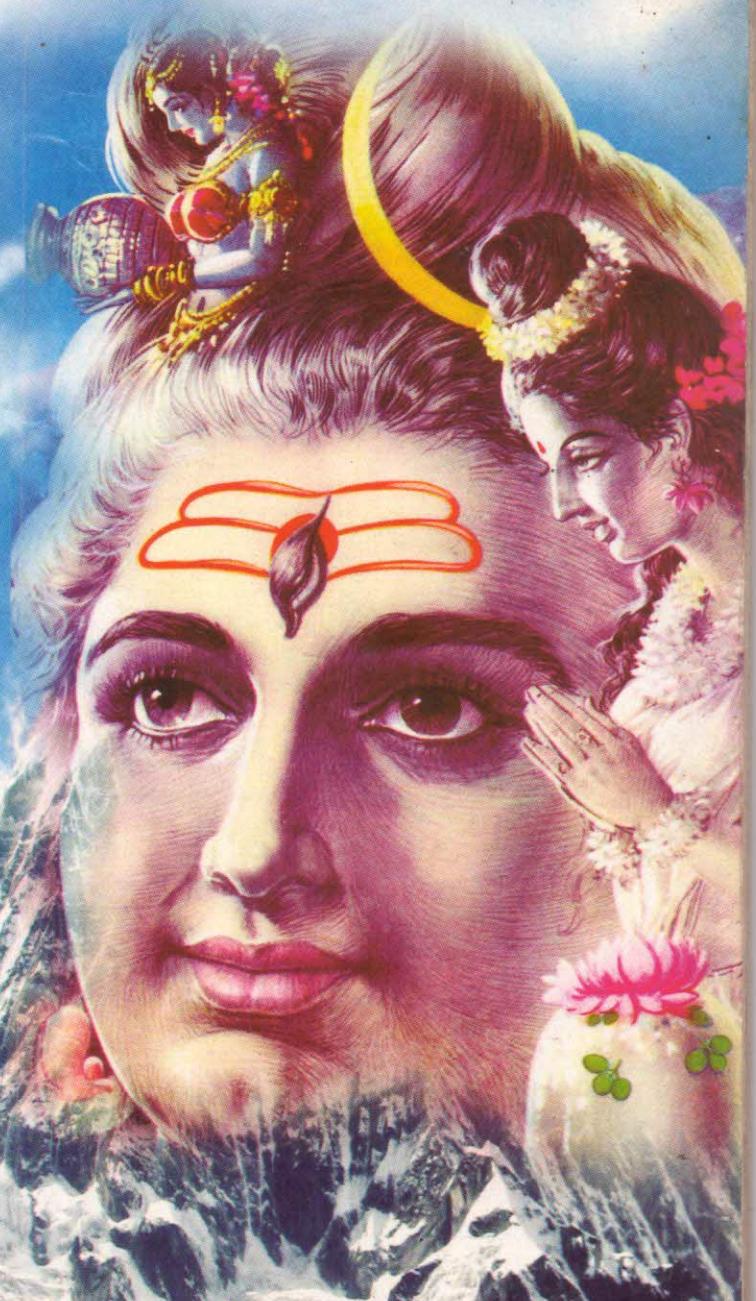
# निखिलेश्वर शिवाङ्कु

जनवरी 2008

मूल्य : 18/-

# मंत्र मंत्र यात्रा

विज्ञान



- महाशिवरात्रि पूजन अभिषेक
- चमत्कारिक साबर प्रथोग
- दस महाविद्या सिद्धि स्तोत्र
- वंसतोत्सव - अवंग उत्सव
- लुट्र-चम्बक-महाकाल साधना



## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

ॐ ग्रन्थं लिखता हूँ सजीव, सप्तां



# सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां



ये ग्रंथ कोरि कागजों पर स्थाही से नहीं लिखे हैं,  
अपितु चेतना से, शिष्यों के हृदय पट पर गहराई में झूब कर लिखे हैं

★ मूलाधार से सहस्रार तक	150/-	★ मैरव साधना	40/-
★ फिर दूर कहीं पायल खनकी	150/-	★ दीक्षा संस्कार	30/-
★ गुरु गीता	150/-	★ तांत्रोक्त गुरु पूजन	30/-
★ ज्योतिष और काल निर्णय	150/-	★ सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ विधान	20/-
★ ध्यान धारणा और समाधि	150/-	★ महाकाली साधना	20/-
★ हस्त रेखा विज्ञान और पंचागुली साधना	120/-	★ ओडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-
★ निरिलेश्वरानन्द स्तवन	120/-	★ तंत्र साधना	20/-
★ भौतिक साधना और सफलता	120/-	★ भुवनेश्वरी साधना	20/-
★ विश्व की श्रेष्ठ दीक्षाएं	96/-	★ मैं सुगन्ध का झोंका हूं	20/-
★ निरिलेश्वरानन्द सहस्रनाम	96/-	★ हंसा उड़हुं गगन की ओर	20/-
★ विश्व की आलीकि साधनाएं	96/-	★ मैं बाहे फैलाये खड़ा हूं	20/-
★ लक्ष्मी प्राप्ति	60/-	★ अप्सरा साधना	20/-
★ अमृत बुद्ध	60/-	★ बगलामुखी साधना	20/-
		★ धन वार्षिणी तारा (महासरस्वती)	20/-

→ → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ←  
मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)  
फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः  
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उत्तिः, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका।

# श्रीगुरु-प्रकाश

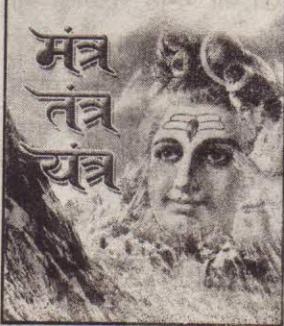
॥ श्री परम तत्त्वाय बास्यत्यथाय गुरुभ्यो नमः ॥



सद्गुरुदेव  
सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ	
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
बाराहमिहिर	63
जीवन सरिता	64
इस मास जोधपुर में	80
एक दृष्टि में	84

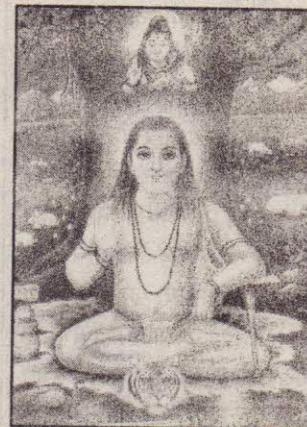
वर्ष 28	अंक 01
जनवरी 2008	पृष्ठ 88



साधना	
रुद्र प्रयोग	34
महाकाल प्रयोग	38
शिव व्यम्बक अनुष्ठान	40
एकादश तंत्रात्मक	
शिव प्रयोग	46
कामदेव-रति साधना	55
सावर साधनाएं	68
Bhuvaneshwari	
Sadhana	82
Santaan Prapti	
Mangla Sadhana	83



विशेष	
सद्गुरु... प्रेम पंथ	23
आया है वसंत पर्व	50
योग सूत्र - संयम	66
सद्गुरु निखिल	
आप कहां	75



दस महाविद्या कवच 58

## पूजन

महाशिवरात्रि  
शिव अभिषेक-पूजन 27



प्रकाशक एवं स्वामित्व  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
द्वारा  
सुदर्शन प्रिन्टर्स  
487/505, पीरागढ़ी,  
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87  
से मुद्रित तथा  
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हार्डकोर्ट  
कॉलेजी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)  
एक प्रति: 18/-  
वार्षिक: 195/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हार्डकोर्ट कॉलेजी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtyv@siddhashram.org](mailto:mtyv@siddhashram.org)

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धुमककड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद मैं, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## ★ प्रार्थना ★

वस्त्राङ्के च विभाति भूधरसुता देवायगा मस्तके  
भाले बातविद्युर्जले च जरलं वस्त्रोरसि व्यालराट्।  
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा  
शर्वः सर्वज्ञतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकर पातु मात्॥  
जिनकी गोद में हिमाचलसुता पार्वतीजी, मस्तक पर गङ्गाजी,  
ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा, कण्ठ में हलाहल विष और वक्ष  
स्थल पर सर्पराज शेषजी सुशोभित हैं, वे भस्म से विभूषित,  
देवताओं में श्रेष्ठ, सर्वेश्वर, संहारकर्ता, सर्वव्यापक, कल्याणरूप,  
चन्द्रमा के समान शुभ्रवर्ण श्रीशंकरजी सदा मेरी रक्षा करें।

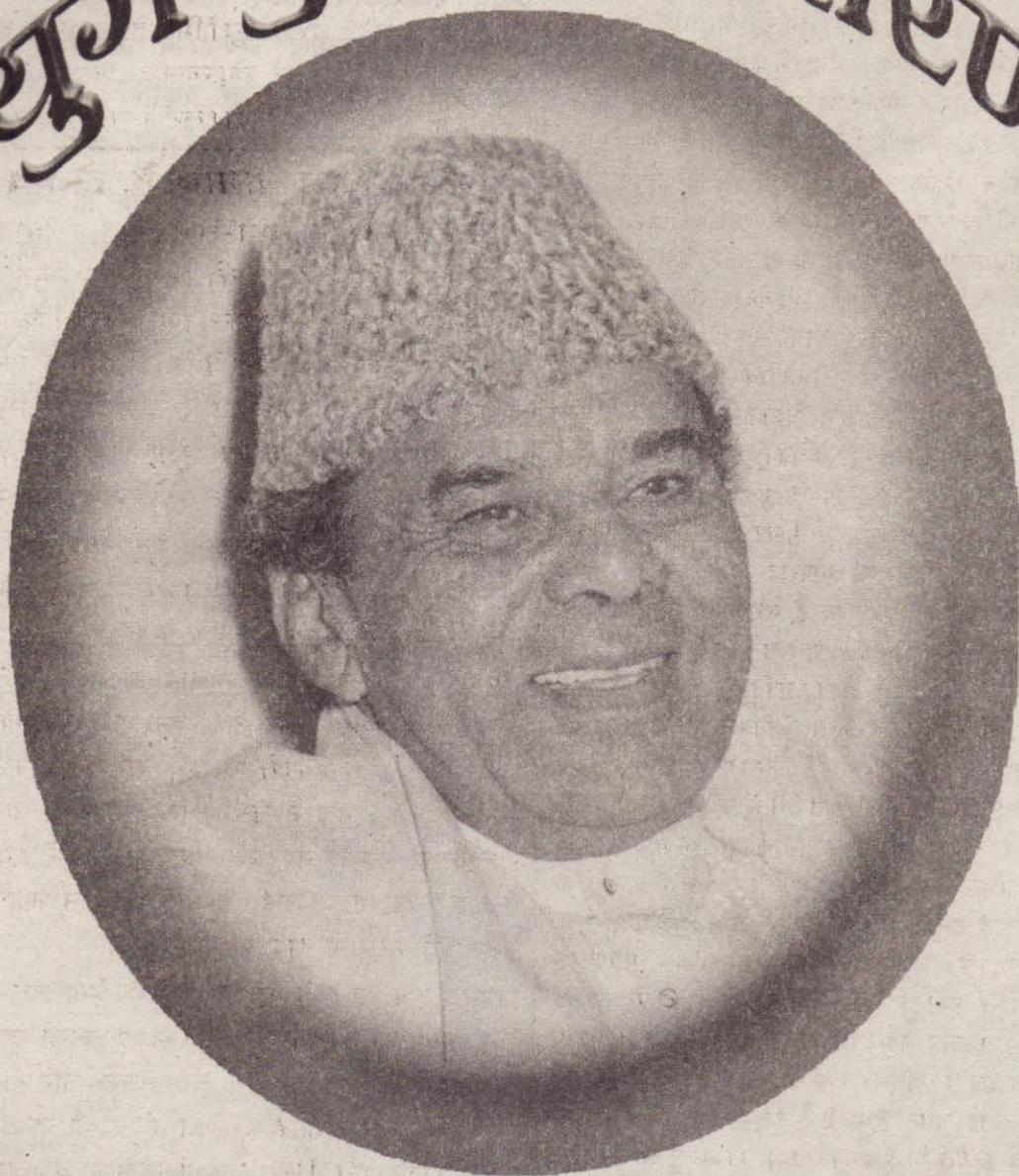
## ★ जीवन-मृत्यु शाश्वत है, तो भय क्यों ★

माना जाता है कि बुद्धापा-अभिशाप है, लेकिन यह इस पर निर्भर करता है कि बुद्धापे को किस तरह जिया जा रहा है। जीवन की यह अवस्था सामान्यतया मृत्यु के निकट मानी जाती है और मन का स्वभाव होता है कि वह मृत्यु के बारे में सोचना ही नहीं चाहता। एक सज्जन थे, जीवनभर तपस्वी की तरह रहे। सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ था कि वृद्धावस्था में ये सज्जन इतने उदास और निरांश क्यों नजर आते हैं?

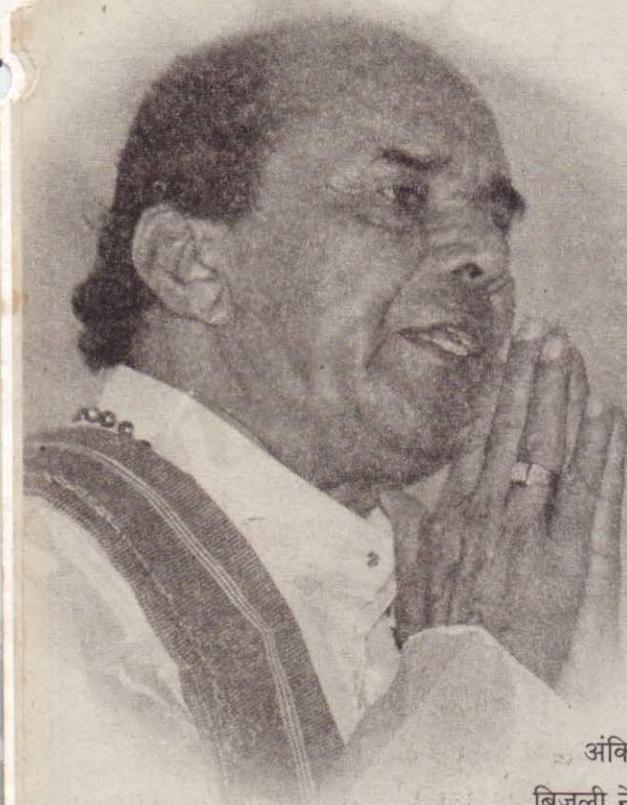
वृद्धावस्था में उनकी भेंट एक युवा संत से हुई और उन्हें अपना गुरु बना लिया। एक दिन उन्होंने अपनी समस्या अपने गुरु के सामने रखी कि मैं बुद्धापे में शरीर से उतना नहीं थका, जितना मन से थक गया। यह उम्र का वह दौर है, जब जीवन और मृत्यु में कोई अंतर नहीं रहना चाहिए, लेकिन अभी भी जीवन के बारे में सोचते-सोचते मृत्यु पर आकर मन ठिक जाता है। तब गुरु ने उन्हें समझाया न तो हम जीवन को समझते हैं, न मृत्यु को। बस समय काटना ही हम जीवन मान लेते हैं। जब जीवन सही रूप से समझ नें नहीं आता, तभी मनुष्य को मृत्यु का भय सताता है।

मृत्यु जब आती है तब आती है पर भय जीवन में सदा के लिए आ जाता है। जिस भी क्षण से हम इच्छा पर नहीं, बल्कि स्वाभाविक तौर पर सरलतापूर्वक जीवन जीने लगते हैं, उसी क्षण भय चला जाता है। ऐसे में इच्छा की जगह सरलता का जीवन जिया जाय, जिसे कहते हैं समर्पण। वृद्धावस्था में अनेक इच्छाएं फिर पैदा होने की कोशिश करती हैं किन्तु यदि समर्पण भाव है, सहजता है तो हम उन्हें नियन्त्रित कर सकेंगे और मृत्यु का ठीक से स्वागत कर सकेंगे। इसके बाद उन सज्जन के चेहरे पर फिर कभी पेरशानी नहीं दिखी। अतः जिस तरह बचपन, जवानी में अभ्यास आवश्यक है वैसा वृद्धावस्था में भी जरूरी हो जाता है।

શ્રી પુરાણ અવતાર



ખંડ્યુજદૈવ શતકં નામાસી



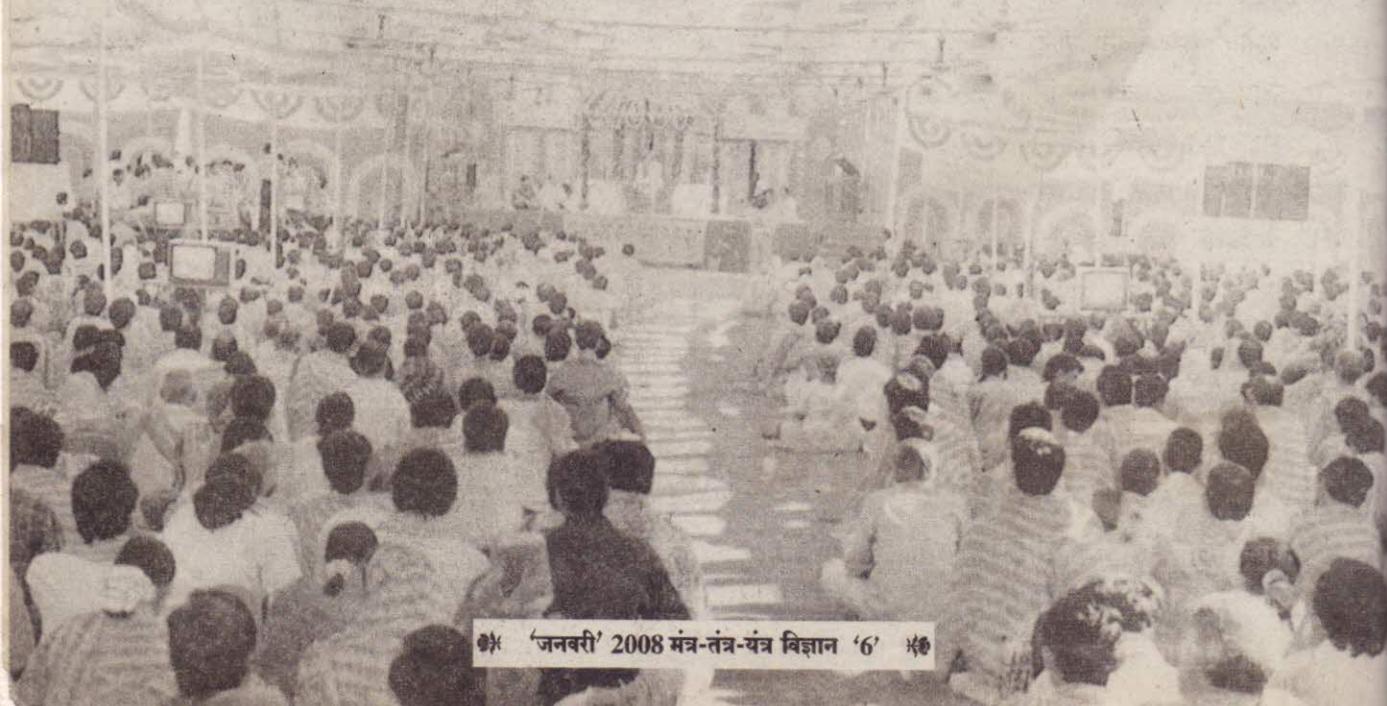
मनुष्य जीवन बुद्धि और ज्ञान से आभृषित होता है और प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में क्रिया करता है। युग पुरुष किस प्रकार धरती पर अवतरित होकर मानव जाति का कल्याण करते हैं, उन्हीं तथ्यों को स्पष्ट करते हुआ, पूज्य सद्गुरुदेव के अमृत वचन, उन्हीं की अनूठी ओजस्वी शैली में -

अद्वैत स्थापनमर्थं शंकर लोक सद्गुरुं  
प्रस्थानं त्रै भाष्यादि ग्रंथकासम् नमामयम्  
अहं ब्रह्म स्वरूपिणम्, मतं प्रकृति  
पुरुषात्मकम् जगत् शून्यं च शून्यं च॥

जीवन क्षण भंगुर है, नाशवान है, और धीरे-धीरे काल उस देह को अपने जबड़ों में फंसाता हुआ शरीर को समाप्त कर देता है, परन्तु अक्षर और उनसे रचित स्तोत्र एवं ग्रंथ कालयजी होते हैं क्योंकि वे स्तोत्र काल के भाल पर विराट रूप में अंकित होते हैं। वे स्तोत्र ऐसे होते हैं, जैसे पूरे आकाश मंडल में बिजली ने उन ग्रंथों की पंक्तियां लिख दी हों, और सारा विश्व उन पंक्तियों

को पढ़कर चमत्कृत होने लग गया हो। ये श्लोक ऐसे ही होते हैं, जैसे कि एक सुगंध ने पूरे वायुमंडल में अद्वितीय अष्टगंध से इन श्लोकों को अंकित किया हो।

ये श्लोक ऐसे भी होते हैं कि काल की छाती पर पैर रखकर जब काव्यकार, स्तोत्र रचयिता, अपने अक्षरों और पंक्तियों के माध्यम से जो कुछ लिखता है उसको काल मिटा नहीं सकता। यह उसके बस की बात नहीं होती, क्योंकि अक्षर दो प्रकार के होते हैं, शब्द दो प्रकार के होते हैं, पंक्तियां दो प्रकार की होती हैं स्तोत्र दो प्रकार के होते हैं और उच्च कोटि के विद्वान उन स्तोत्रों को, उन पंक्तियों को कुछ इस प्रकार से पूरे ब्रह्माण्ड में अंकित करते हैं, जो किसी भी दृष्टि से मिटाए नहीं जा सकते।

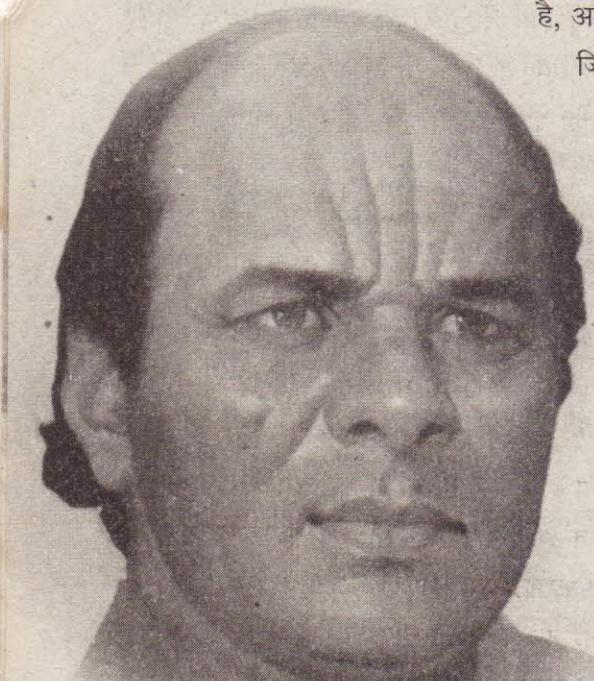


प्रयत्न तो प्रत्येक क्षण करता है। यमराज नहीं चाहता कि कोई वस्तु जीवित रहे, यमराज नहीं चाहता कि यह शरीर लम्बे समय तक इस पृथ्वी पर विचरण करे। यमराज इस बात को भी नहीं चाहता कि ग्रंथ अपने आप में गतिशील हों परन्तु सामान्य प्राणी यमराज से मुकाबला नहीं कर पाते, संघर्ष नहीं कर पाते और उनके ये अक्षर धूमिल हो जाते हैं, धीरे-धीरे काल उन अक्षरों को, उन पंक्तियों को समाप्त कर देता है और यह देश, यह विश्व उन पंक्तियों से वंचित रह जाता है परन्तु ये पंक्तियां मिटने लायक ही होती हैं, क्योंकि इन पंक्तियों में वह ताकत, वह क्षमता, वह ऊर्जा, वह चेतना, वह प्राणस्विता नहीं होती जो यमराज के ललाट को ड़सने में आबद्ध हों, ये पंक्तियां वैसी नहीं होतीं कि यमराज की छाती पर पद प्रहार कर उनको लिखा जाए।

ये पंक्तियां ऐसी भी नहीं होती हैं कि जिन्हें आने वाली पीढ़ियां प्रयत्न करके भी, सभाल सकें। ऐसी पंक्तियां तो वह लिख सकता है जो कालजयी पुरुष होता है। ऐसे स्तोत्रों की रचना वह कर सकता है जिसने काल पर विजय प्राप्त की हो। ऐसे ग्रंथ वह विद्वान रच सकता है, जो अपने आप में इस विश्व से, इस काल से, यम से संघर्ष कर इस बात को सिद्ध कर देता है, कि व्यक्ति तो एक सामान्य चीज है, उसकी पंक्तियों को काल भी समाप्त नहीं कर सकता, मिटा नहीं सकता।

परन्तु ऐसे पुरुष बहुत कम होते हैं, सैकड़ों हजारों वर्षों के बाद कोई एक व्यक्तित्व अवतरित होता है जो इस प्रकार की पंक्तियों की, पदों की रचना कर हमेशा-हमेशा के लिए आकश मंडल में टांग देता है, वायु में सुगंध के द्वारा लिख देता है, पृथ्वी पर छोटी-छोटी बूँदों के माध्यम से अंकित कर देता है, फूलों में पराग-कणों की भाँति स्थायित्व दे देता है और विश्व को अद्वितीय बनाने, सौन्दर्ययुक्त बनाने और श्रेष्ठतम बनाने के लिए उसके मुँह से जो कुछ भी निकलता है, वह अपने आप में अमिट होता है।

यदि उसकी तुलना ही कर दी जाए, यदि उसके समान और किसी ग्रंथ की या श्लोक की रचना कर दी जाए तो उसका व्यक्तित्व भी अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, क्योंकि अर्थवत्ता उस वस्तु की होती है, जिसके अंदर प्राण होते हैं और प्राण नश्वर देह में भी होते हैं, परन्तु इस प्रकार के पदों में, इस प्रकार के स्तोत्रों में महाप्राण होते हैं और महाप्राण को यमराज स्पर्श नहीं कर पाते, महाप्राण को संसार विस्मृत नहीं कर पाता। क्योंकि महाप्राण तो अजन्मा है, अगोचर है अद्वितीय



है, अद्वेत है, और पूरे वायुमंडल में अंकित है। वह युगं धन्य हो उठता है जिस युग में ऐसे महापुरुष प्रादुर्भूत होते हैं, ऐसे अद्वितीय युग पुरुष अवतरित होते हैं। काल के भाल पर अपना नाम अंकित करने वाले महापुरुष इस पृथ्वी पर आकर कुछ समय तक विचरण कर, फिर दूसरे लोक में चले जाते हैं क्योंकि वे तो एक लोक के ही नहीं किन्तु ब्रह्माण्ड के समस्त लोकों में उनकी गति होती है - वह चाहे ब्रह्म लोक हो, विष्णु लोक हो, भगवान शंकर का शिव लोक हो, रंभा, उर्वशी, अप्सराओं से युक्त इंद्र लोक हो, या कोई अन्य लोक हो, जो अज्ञेय है, अगोचर है।

ऐसे युग पुरुषों को युग प्रणाम करता है, ऐसे युग पुरुषों को दिशाएं सिर झुका कर वर मालाएं पहनाती हैं, दसों दिशाएं ऐसे व्यक्तित्व का श्रृंगार करती हैं, आकाश छाया की भाँति उस पर झुककर अपने आप को सौभाग्यशाली समझता है, और जहां-जहां भी उनके पैर बढ़ते हैं, पृथ्वी स्वयं ही नतमस्तक हो जाती है, प्रणम्य हो जाती है और इस बात का अनुभव करती है कि वास्तव में मेरे इस विराट फलक का, मेरी इस विराट पृथ्वी का वह भाग कितना सौभाग्यशाली है, कि जहां इस प्रकार के युग-पुरुष ने चरण चिन्ह अंकित किए।

प्रकृति निरंतर इस बात के लिए प्रयत्नशील होती है कि ऐसा युग आये कि ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व का प्रादुर्भाव हो, और यह निश्चित है कि कई सौ-हजार वर्षों के बाद ऐसे महापुरुष, ऐसे युग-पुरुष का, ऐसे श्लाघा पुरुष का अवतरण होता है।

साधारणतः एक अनुभव होता है कि एक पुरुष ने जन्म लिया, ऐसा विश्वास होता है कि देहधारी ने इस पृथ्वी पर जन्म लेकर कुछ कार्य किया। ऐसा अनुभव होता है कि जैसे सैकड़ों हजारों, लाखों व्यक्ति जन्म लेते हैं और



निरंतर गतिशील होते हुए काल के गर्भ में समा जाते हैं, परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या काल सभी को हृदयंगम कर सकता है? प्रश्न यह उठता है कि काल में क्या इतनी क्षमता होती है कि ऐसे व्यक्तियों को, ऐसे युग-पुरुषों को दमित कर सके? क्या यह संभव हो सकता है कि काल की दाढ़ों में ऐसे व्यक्तित्व समाहित हो सकें?

यह संभव नहीं है, यह कदापि संभव नहीं है!.

ऐसा संभव हुआ ही नहीं - इसलिए, कि ऐसे युग-पुरुष का काल स्वयं अभिनन्दन करता है, दसों दिशाएं एकटक उस युग-पुरुष की ओर ताकती रहती है, पृथ्वी और आकाश दोनों मिलकर उस व्यक्तित्व की महिमा को मंडित करने की सफल-असफल कोशिश करते रहते हैं। मेघ अपनी बूँदों के माध्यम से इस बात का एहसास कराता है कि वास्तव में ही यह एक अद्वितीय व्यक्तित्व है। इन्द्र स्वयं इस बात से ईर्ष्या करता है कि ऐसे महापुरुष के पैरों के नीचे जो रजकण आ गए हैं, वे रजकण धन्य हैं, हीरे-मोतियों से भी ज्यादा मूल्यवान हैं, माणिक्य और अन्य रत्नों से भी ज्यादा श्रेष्ठ हैं क्योंकि उन रजकणों में सुंगध होती है, उन रजकणों में विराटता होती है, उन रजकणों में एक अद्वितीयता होती है, और उस अद्वितीयता को प्राप्त करने के लिए योगी, यति, सन्न्यासी, लालायित रहते हैं - भले ही वे योगी और सन्न्यासी उन पंच भूतात्मक व्यक्तियों को दिखाई नहीं देते हों। भले ही वे गोचर या अगोचर हों, भले ही वे इस पृथ्वी पर गतिशील होते हुए अनुभूत नहीं होते हों।

...परन्तु उनमें और इस प्रकार के युग-पुरुष में एक बहुत बड़ा अंतर होता है, जिस अंतर को काल मिटा नहीं सकता, यमराज समाप्त नहीं कर सकता और युग उस अंतर को 'नहीं' नहीं कह सकता क्योंकि ऐसा इतिहास पुरुष गोचर होते हुए भी अगोचर है, अगोचर होते हुए भी गोचर है। वह दिखाई देते हुए भी नहीं दिखाई देता है, और वह नहीं दिखाई देते हुए भी दिखाई देता है; क्योंकि वह देहगत अवस्था में जीवित नहीं रहता, क्योंकि वह इस चर्ममय शरीर का दास नहीं होता, क्योंकि वह इस शरीर के आवरण में ढका हुआ नहीं होता है जो कि होते हुए भी नहीं दिखाई देते हैं।



...और मनुष्य तो एक सामान्य व्यक्तित्व है। वह व्यक्ति सामान्य है जो उत्पन्न होता है, और मृत्यु के गर्भ में समा जाता है। वह व्यक्ति सामान्य है जो योनिज होता है और एक दिन शमशान में जाकर सो जाता है, वह व्यक्ति सामान्य है, जो जन्म लेता है और उसको किसी प्रकार का कोई भान नहीं होता है, और निरन्तर समाप्त होने की प्रक्रिया में गतिशील होता है। ऐसे मनुष्यों का कोई मूल्य नहीं होता। युग ऐसे मनुष्यों का अभिनन्दन नहीं करता। आकाश ऐसे व्यक्तियों के चरणों में अपना सिर नहीं झुकाता, पृथ्वी ऐसे व्यक्ति के चरणों के प्रति नमन

नहीं हो पाती। परन्तु सम्पूर्ण प्रकृति युग-पुरुषों का अभिनन्दन करती है, क्योंकि वे केवल मात्र व्यक्तित्व नहीं होते अपितु सम्पूर्ण युग को समेटे हुए एक विराट व्यक्तित्व होते हैं, जिनको देखने के लिए, स्पर्श करने के लिए, अनुभव करने के लिए देवगण भी तरसते रहते हैं।

देवता और मनुष्य, गंधर्व और यक्ष, किन्नर और ये सभी इस बात के लिए लालायित रहते हैं कि वे इस पृथ्वी पर अवतरित हों, वे इस पृथ्वी की लीलाएं देख सकें, वे इस पृथ्वी पर गतिशील हो सकें, और वे इस पृथ्वी को कुछ प्रदान कर सकें। परन्तु यह संभव नहीं हो पाता क्योंकि देवताओं में इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि वे जन्म ले सकें, देवताओं में वह क्षमता नहीं हो पाती कि वे इस पृथ्वी पर अवतरित हो सकें। उन देवताओं में यह विशेषता भी नहीं होती कि किसी प्रकार के मनुष्य बनकर पृथ्वी पर गतिशील होने की क्रिया करें।

यह एक कठिन कार्य है, यह कांटों भरा कार्य है। यह ठीक वैसा ही कार्य है जैसे शूलों की शर-शैय्या पर लेटा हुआ व्यक्ति हो, यह एक ऐसा ही कार्य है जैसे अंधड़ और तूफान में व्यक्ति निरंतर अपने गंतव्य मार्ग पर गतिशील हो, यह एक ऐसा ही कार्य है जहां घटाटोप अंधकार में भी प्रकाश बिन्दु बनकर दृश्यमान हो सके।

देवताओं में इतना सामर्थ्य नहीं होता, देवताओं में इतनी क्षमता नहीं हो पाती। हमने उनको देवता शब्द से सम्बोधित किया है, और देवता का तात्पर्य



है, जो कुछ प्राप्त करने की क्रिया करता है वह देवता है, और वह देवता प्राप्त करता है इस देहधारी मनुष्य से जप-तप, पूजा-पाठ, ध्यान, समाधि, स्तोत्र और विभिन्न प्रकार के मंत्रों के उच्चारण से।

क्योंकि देवता का तात्पर्य ही लेना है, स्वीकार करना है। परन्तु क्या देवता पुनः देने में समर्थ है?

शास्त्रों में ऐसा विधान नहीं है। देवता ऐसा प्रदान नहीं कर सकते क्योंकि उनके नाम से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वे केवल लेने की क्रिया जानते हैं, स्वीकार करने की क्रिया जानते हैं, प्राप्त करने की क्रिया जानते हैं, परन्तु प्रदान करने की क्रिया का भान उन्हें नहीं होता।

जिस प्रकार से चन्द्रमा स्वयं प्रकाशवान नहीं है, वह सूर्य के प्रकाश से दैवीप्यमान है। यदि सूर्य नहीं है, तो चन्द्रमा का भी अस्तित्व नहीं होता, यदि सूर्य नहीं है, तो चन्द्रमा की किरणें भी पृथ्वी पर नहीं छिटकतीं, यदि सूर्य नहीं है तो चन्द्रमा दिखाई नहीं दे सकता। चन्द्रमा का सारा आधार बिन्दु सूर्य है। ठीक उसी प्रकार देवताओं का आधार बिन्दु ऐसे उच्कोटि के युग-पुरुष होते हैं जो इन देवताओं से ऊपर होते हैं, जिनकी देवता अभ्यर्थना करते हैं, जिनकी देवता प्रार्थना करते हैं, जिनके सामने देवता हाथ बांध कर खड़े होते हैं क्योंकि देवताओं की द्युति, देवताओं का प्रकाश, देवता के द्वारा प्रदान करने की क्षमता इस प्रकार के उच्कोटि के क्रषियों और महापुरुषों के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।

...और इस प्रकार के महापुरुष इसलिए पृथ्वी पर अवतरित होते हैं कि देवता लोग इस पृथ्वी पर विचरण करने के लिए लालायित होते हैं। वे इस बात को अनुभव करना चाहते हैं कि

दुःख होते हैं, सुख क्या है, हर्ष क्या है, विषाद क्या है, प्रेम क्या है,  
अश्रु क्या है, हृदय की उद्गेलना क्या है, और एक दूसरे की  
सामीप्यता क्या है ये संचारी भाव देवताओं में नहीं होते, ये  
संचारी भाव दैत्यों में भी नहीं होते। ऐसा वरदान तो  
केवल मनुष्य जाति को ही मिला है। और जो इन  
संचारी भावों में गतिशील है वह अपने आप में एक  
आनन्द अनुभव करता है क्योंकि आनन्द की  
अनुभूति प्रेम के द्वारा संभव है, क्योंकि आनन्द  
की अनुभूति सौन्दर्य के द्वारा संभव है।

...और जहां प्रेम है, जहां हर्ष है, वहां विषाद  
भी है, जहां मिलन है वहां विरह भी है, वहां  
तड़फ है, वहां बेचैनी भी है, और यह तड़फ,  
यह बेचैनी, यह उच्छृंखलता, यह वियोग, यह  
मिलन जीवन का सौन्दर्य है और जो इस  
सौन्दर्य को प्राप्त नहीं कर पाते, वे अपने आप में  
अभागे होते हैं, और देवता लोग इन तत्वों से परे  
होते हैं, वे इन तत्वों को समझ नहीं पाते, वे इन  
तत्वों में समाविष्ट नहीं हो पाते। जब तक समाविष्ट  
नहीं हो पाते तब तक देवता एकांगी होते हैं; और एक

ही प्रकार के रंग से बना हुआ चित्र अद्वितीय नहीं बन सकता। जिसमें विविध रंग होते हैं, विविध आयाम होते हैं, विविध श्रेष्ठता होती है और विभिन्नता होती है, उस विविधता को सौन्दर्य कहते हैं।

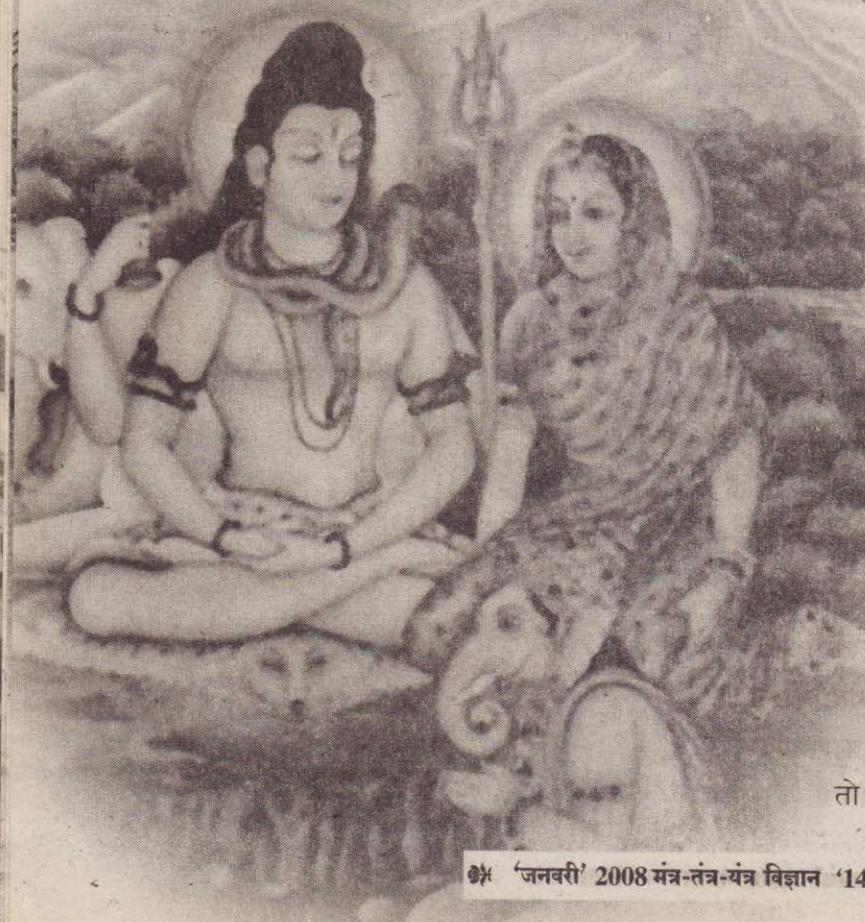
प्रत्येक देवता सौन्दर्यवान बनना चाहता है; और वह सौन्दर्यवान तभी हो सकता है जब उसमें कोमलता हो, जब उसमें स्नेह हो, जब उसमें आदर की भावना हो, जब उसमें प्रेम करने की क्षमता हो, जब उसमें सौन्दर्य को समझने की चेतना हो। यह सब मनुष्य के द्वारा ही संभव है और अभी तक भी मनुष्य जन्म लेने के बाद मृत्यु की पगड़ंडी पर गतिशील होने के लिए ही बाध्य होता है क्योंकि जो उत्पन्न होता है, उसका नाश अवश्यंभावी है।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है, परन्तु कुछ महापुरुष, कुछ अद्वितीय पुरुष, कुछ युग पुरुष ऐसे होते हैं, जो मृत्यु की पगड़ंडी पर नहीं चलते, अपितु अमृत के सागर पर पांव रखते हुए गतिशील होते हैं। वे युग-पुरुष पृथ्वी पर नहीं चलते, अपितु वायुमंडल पर अपने चरण-चिह्नों को छोड़कर गतिशील होते हुए भी अगतिशील रहते हैं, क्योंकि सामान्य व्यक्तित्व ऐसे युग-पुरुषों को नहीं समझ पाता और ऐसे ही युग-पुरुष अयोनिज कहलाते हैं।

ऐसा लगता है कि जैसे किसी मां के गर्भ से जन्म लिया, ऐसा लगता है कि जैसे किसी मां के उदर में वृद्धि को प्राप्त हुआ, परन्तु ऐसा अनुभव ही होता है, वास्तविकता कुछ और ही होती है।

उसके गर्भ में केवल उतना ही वजन रहता है जितना एक गुलाब के पुष्प का होता है। भगवान सदाशिव जब पार्वती को अमर कथा सुना रहे थे जब उन्होंने डमरु नाद किया तो सारे पक्षी, कीट, पंतग उस स्थान से सैकड़ों-हजारों मील दूर चले गए। एक भी प्राणी वहां रहा नहीं, क्योंकि जगत-जननी पार्वती के हठ की वजह से औढ़रदानी भगवान शिव उसे अमरत्व का ज्ञान देना चाहते थे, उसे बताना चाहते थे कि किस प्रकार से अमरत्व प्राप्त किया जा सकता है, उसे बताना चाहते थे कि किस प्रकार से व्यक्ति जन्म लेकर के मृत्यु के गर्भ में समाहित नहीं होता, उसे बताना चाहते थे कि किस प्रकार से व्यक्ति काल की दाढ़ों में नहीं फँस सकता।

परन्तु ऐसा ज्ञान प्रत्येक प्राणी को तो दिया जाना संभव नहीं है। तब तो इस सृष्टि पर करोड़ों-करोड़ों व्यक्तित्व



खड़े हो जाएंगे और पृथ्वी उन अवांछनीय व्यक्तियों के बोझ से दबकर रसातल में चली जाएगी। इसलिए व्यक्ति जन्म लेता है और पुराना होकर समाप्त हो जाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर भगवान् सदाशिव ने डमरु का निनाद किया और उसके निनाद से, उसकी चोट से, उसकी आवाज से सैकड़ों-सैकड़ों मील दूर तक देवता, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, जीव, कीट, पतंग, पशु और पक्षी रहे ही नहीं। और जब ऐसा भगवान् शिव ने अनुभव किया तो अमरनाथ के पास स्वयं अमरत्व बनकर सदाशिव उस अद्वितीय ज्ञान को देने के लिए प्रकट हुए, जिसे अमरत्व कहा जाता है जिसके माध्यम से व्यक्ति जरा मरण से रहित हो जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अयोनिज बन जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति वृद्धता की ओर गतिशील नहीं हो पाता, जिसके माध्यम से व्यक्ति काल की ओर नहीं जा पाता।

और जब ऐसा हुआ, विपुरारी ने उस अमर कथा, उस गुह्य कथा को, उस गोपनीय रहस्य को उद्घाटित करने का निश्चय किया, जो अत्यंत रहस्यमय है, अत्यंत गोपनीय है, अत्यंत दुर्लभ है। उस समय एक कबूतरी और एक कबूतर बैठे हुए थे और डमरु के निनाद से वे दोनों उड़ गए, परन्तु एक अंडा कबूतरी के उदर से निकला। अंडज वहीं रह गया क्योंकि उस अंडे में यह क्षमता नहीं थी कि वह गतिशील हो सके, उड़ सके और ज्योंही अमर कथा प्रारंभ हुई त्योंही वह अंडा फूट गया, और उसमें से जो जीवन निकला उसने उस अमरत्व कथा का श्रवण किया।

कुछ ही समय के बाद सदाशिव को भान हुआ कि मेरे और पार्वती के अलावा भी कोई प्राणी है जो इस रहस्य को सुन रहा है, और समझ रहा है। उन्होंने विशूल फेंका और वह कबूतर वहां से उड़ा।

उसी समय वेद व्यास की पत्नी भगवान् सूर्य को अर्घ्य दे रही थी। मंत्र उच्चारित करने के लिए उनका मुख खुला था, कि वह प्राणी उनके मुंह के माध्यम से उदरस्थ हो गया। सदाशिव वेद व्यास के घर के बाहर विशूल गाढ़कर बैठ गये कि जब भी यह व्यक्ति, यह बालक बाहर निकलेगा तभी इसको समाप्त करना आवश्यक होगा क्योंकि इसने उस गुप्त विद्या को समझ लिया है जो कि अत्यंत गोपनीय है। इस प्रकार इक्कीस वर्ष बीत गए।

बहुत बड़ी अवधि! अंदर जो शिशु गतिशील हो रहा था, उसने मां से पूछा - 'अगर मेरे भार से तुम व्यथित हो रही हो तो मैं बाहर निकल सकता हूँ। भगवान् सदाशिव मेरा कुछ भी अहित नहीं कर सकते, क्योंकि मैं उस अमरत्व को समझ चुका हूँ।'



वेद व्यास की पत्नी ने कहा - 'गुलाब के फूल से भी कम वजन मुझे अपने पेट में अनुभव हो रहा है।' ठीक उसी प्रकार, जो अवतरित होते हैं, उसकी माँ के गर्भ में भी कोई वजन अनुभव नहीं होता। उतना ही वजन होता है, जितना कि एक गुलाब के फूल का होता है। ऐसे प्राणियों का, ऐसे व्यक्तियों का जन्म कभी-कभी ही होता है, ऐसे युगपुरुष यदा-कदा ही पृथ्वी लोक पर विचरण करते हैं और वे नित्य लीला विहारिणी के इंगित पर अपनी लीलाओं का समापन करते हुए अपने प्रवचनों से, अपने कार्यों से, अपनी विद्वता और ज्ञान से जनमानस को प्रभावित करते हुए इस भौतिकता के अंधकार को दूर कर आध्यात्मिकता के प्रकाश को फैलाने में सहायक होते हैं।

पिछले अध्याय में मैंने इंगित किया था कि देवता लोग भी मनुष्य योनि में जन्म लेकर मनुष्य रूप में अवतरित होकर इस पृथ्वी पर विचरण करने का सफल-असफल प्रयास करते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वे सफल हो ही जाएं। फिर भी देवता लोग भी इस पृथ्वी तल पर आने के लिए मचलते हैं, प्रयत्न करते हैं और सफल होते हैं। परन्तु ऐसा तब होता है जब ऐसे महापुरुष का अविर्भाव होता है।

मैंने शुकदेव की कथा के माध्यम से बताया कि वेद व्यास की पत्नी के गर्भ में इक्कीस वर्ष तक रहने के बाद उस गर्भस्थ बालक शुकदेव ने कहा - 'यदि मेरी वजह से तुम्हें अपने पेट में कोई भार अनुभव हो रहा हो तो मैं बाहर निकलने के लिए तैयार हूं क्योंकि मैं अमर कथा का श्रवण कर चुका हूं और यह भी मुझे जात है कि भगवान शिव का त्रिशूल मुझे समाप्त नहीं कर सकता। यह अलग बात है कि भगवान की अकृपा या उनका तीसरा नेत्र मुझे भस्म कर सकता है, मुझे श्राप दे सकता है, परन्तु मेरा समाप्तन नहीं कर सकता क्योंकि मैंने अपने जीवन में भगवान सदाशिव, मदनान्तक त्रिपुरारी और पराम्बा जगत् जननी माँ पार्वती के दर्शन किए हैं और उनके पारस्परिक संवाद और परिसंवादों को सुना है, हृदयंगम किया है और मुझे यह जात हुआ है कि अमरत्व क्या है, अमर होने की कला क्या है, बुद्धापे को कैसे परे धकेल सकते हैं, यौवन को किस प्रकार से अक्षुण्ण रखा जा सकता है और मृत्यु रूपी पाश से अपने आपको कैसे बचाया जा सकता है?'

और वेद व्यास की पत्नी ने जो उत्तर दिया वह अपने आप में मनन योग्य है।

उसने कहा - 'तुम मेरे गर्भ में हो, और इक्कीस वर्ष से हो। नौ महीनों से नहीं, साल भर से भी नहीं, पांच वर्षों से भी नहीं, इक्कीस वर्षों से हो, मगर इक्कीस वर्षों में भी मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि गुलाब के फूल से भी ज्यादा वजन मेरे उदर में हो।'



इस प्रसंग के द्वारा मैं यह स्पष्ट करने का प्रयत्न कर रहा हूं कि इस प्रकार के युग-पुरुष, इस प्रकार के देव-पुरुष, इस प्रकार के महापुरुष अयोनिज होते हैं। वे योनि के द्वार से जन्म नहीं लेते। यह बात तो सत्य है कि वे किसी न किसी मां के गर्भ का चयन करते हैं और लीला विहारी के रूप में मां के गर्भ में नौ महीने रहते भी हैं परन्तु जिस समय जन्म का क्षण आता है उससे पहले तक मां को यह भान नहीं होता कि मेरे पेट में किसी प्रकार का वजन है, उस मां को भान ही नहीं होता कि मेरे पेट में किसी प्रकार का दर्द है, उस मां को यह चिंतन ही नहीं रहता कि मैं किसी प्रकार से प्रसव पीड़ा से युक्त हूं।

उसको तो ऐसा लगता है कि जैसे मैं सामान्य रूप से कार्य कर रही हूं और ठीक उस समय, जब वह बालक, जब वह महापुरुष जब वह युग-पुरुष जन्म लेने की क्रिया का प्रारंभ करते हैं तो उस समय मां लगभग अवचेतन मानस में चली जाती है या दूसरे रूप में कहे तो तंद्रा रूप में परिवर्तित हो जाती है। सही शब्दों में कहा जाए तो वह जगत-जननी के पार्श्व में अपने आप में समेट लेती है। यह क्षण ऐसा होता है, जब न निद्रा होती है, न जाग्रत अवस्था होती है तथा उसे कुछ भान ही नहीं रहता। उसे भान तो तब होता है जब युग पुरुष अवतरित होकर के उसके पार्श्व में लेट जाता है और उसका शिशु-रुदन सुनकर मां की तंद्रा भंग हो जाती है और अचानक उसे एहसास होता है जैसे मेरे गर्भ से एक बालक की उत्पत्ति हुई है।

वही संचारी भाव, वही चिंतन, वही प्रक्रिया जो एक मां की होती है ठीक वैसी ही क्रिया और प्रतिक्रिया का प्रारंभ हो जाता है और वह उस बालक को, शिशु को अपने स्तनों से लगा देती है, अपने वक्षस्थल से लगा देती है।

उसे एहसास होता है, कि इस बालक ने मेरे गर्भ से जन्म लिया है और वही मातृत्व उसके पूरे शरीर को और मन को आच्छादित कर देता है। जब ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं, तो केवल ब्रह्माण्ड में उसके जन्म लेने की क्रिया ही सम्पन्न नहीं होती, अपितु सैकड़ों-सैकड़ों देवता उसी क्षण किसी न किसी गर्भ से, किसी न किसी स्थान पर जन्म लेते हैं, परन्तु वे आस-पास के क्षेत्र में ही जन्म लेते हैं, जहां युग-पुरुष अवतरित होते हैं, क्योंकि उन देवताओं का चिंतन तो यह है कि वे मृत्यु लोक में रहें भी, और उन भगवान एवं युग-पुरुष की नित्य लीलाओं को देखकर के नेत्रों को सुख पहुंचा सकें, आत्मा को प्रसन्नता दे सकें और अपने जीवन को धन्य कर सकें।

इससे भी बढ़कर यह बात होती है कि वे मनुष्य योनि में जन्म लेकर उन सारे संचारी भावों का अनुभव करते हैं, जिनमें हर्ष, विषाद, सुख-दुःख, हानि और जितनी भी क्रियाएं, प्रतिक्रियाएं होती हैं, उनका भान



करते हैं, उनका अनुभव करते हैं और ज्यादा से ज्यादा उस युग-पुरुष के पास रहने का प्रयत्न करते हैं, चाहे वे बाल रूप में हों, चाहे शिशु रूप में हों, और वे चाहे अन्य रूपों में हों।

जिस प्रकार देवता अयोनिज होते हैं उसी प्रकार अप्सराएं भी अयोनिज होती हैं। उन सभी अप्सराओं का यह चिंतन रहता है कि वे जन्म लेकर उस महापुरुष के आस-पास विचरण करें, अपने सौन्दर्य, अपने यौवन, अपनी रूपोज्ज्वला, अपनी प्रसन्नता और अपनी चेष्टाओं से उस युग पुरुष के पास ज्यादा से वे रहने का प्रयत्न करती हैं।

वे अप्सराएं भी उस स्थान के आस-पास ही जन्म लेती हैं। उनकी क्रियाएं भी वैसी ही होती हैं जैसी क्रियाएं देवता लोग करते हैं, और वे शनैः शनै काल के प्रवाह के साथ-साथ बड़ी होती हैं, यौवनवान होती हैं, सौन्दर्य का आगार होती है और अद्वितीय बनकर उस लीला विहारी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हैं और ज्यादा से ज्यादा उनकी समीपता का अवसर ढूँढती रहती है, अवसर प्राप्त करती है और उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा करती है।

भगवान श्री कृष्ण के साथ भी यही हुआ। जब उन्होंने जन्म लिया, या दूसरे शब्दों में कहूँ कि अवतरित हुए तो सैकड़ों देवताओं और अप्सराओं ने आस-पास के क्षेत्र में ही जन्म लिया। गोपों के रूप में, बालिकाओं के रूप में और कई रूपों में। यहीं चिंतन राम के समय में हुआ, यहीं चिंतन बुद्ध के समय में हुआ और यहीं चिंतन सभी अवतारों के साथ हुआ। हमारे शास्त्रों में चौबीस अवतारों की गणना की गई है।

प्रश्न यह उठता है कि एक सामान्य व्यक्ति, एक सामान्य मानव, एक योनिज व्यक्ति किस प्रकार से अनुभव करे, कौन-सी प्रक्रिया अपनाएं जिससे उन्हें यह ज्ञात हो सके कि कौन व्यक्ति युग पुरुष के रूप में अवतरित हुआ है?

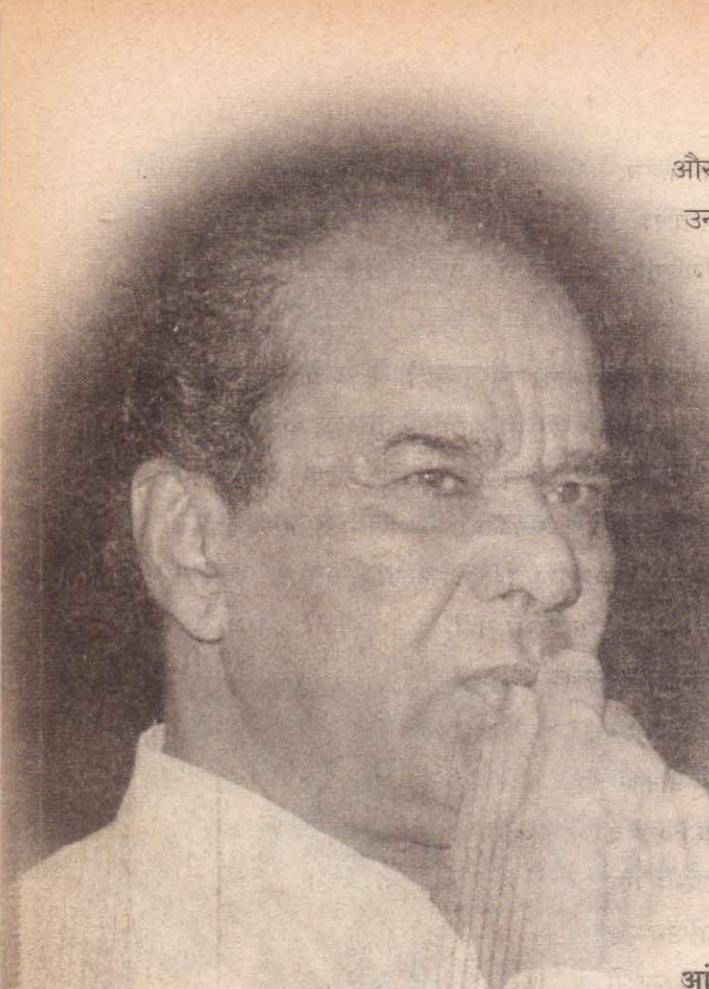


सामान्य पुरुष के पास, सामान्य बालक के पास दिव्य दृष्टि नहीं होती, कोई चेतना दृष्टि नहीं होती, कोई पूर्ण दृष्टि नहीं होती, कोई कुण्डलिनी जागरण अवस्था नहीं होती और कोई ऐसी क्रिया नहीं होती, जिसकी वजह से वह ज्ञात कर सके कि यह बालक केवल बालक नहीं है, अपितु एक अद्वितीय युग-पुरुष है जो इस पृथ्वी लोक पर आकर एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए, अपने कर्मक्षेत्र को आगे बढ़ाने की ओर सचेष्ट है, प्रयत्नशील है। इसके सात बिन्दु शास्त्रों ने निर्धारित किए हैं, जिन के माध्यम से एक साधारण मनुष्य भान कर सकता है कि इस भीड़ में, इन सैकड़ों शिशुओं में इन हजारों बालकों में वह कौन-सा शिशु या बालक है, जो अयोनिज है, या जो युग-पुरुष है, जो देव-पुरुष है, जो अद्वितीय व्यक्तित्व है।

ये चिंतन, ये विचार बिन्दु कोई कठिन नहीं है। आवश्यकता है भगवती नित्य लीला विहारिणी की कृपा की, आवश्यकता है इसकी ओर चेष्टारत होने की, आवश्यकता है चर्म चक्षुओं के माध्यम से समझने की, क्षमता प्राप्त करने की और इस बात की चेष्टा करने की कि उस युग-पुरुष के प्रति पूर्ण श्रद्धानन्त हों, विश्वासगत हों क्योंकि ब्रह्म और माया का अस्तित्व हजारों-हजारों वर्षों से गतिशील है।

जहां ब्रह्म है; वहां माया भी है, और माया उस व्यक्ति की आंखों पर एक परदा डाले रहती है, उसके मन में संशय - असंशय का भाव जाग्रत किए रहती है, उसके मन में विश्वास और अविश्वास की दीवार खड़ी किए रहती है। वह सहज ही विश्वास नहीं कर पाता कि यह व्यक्ति, यह बालक, यह शिशु, यह पुरुष जो हमारे ही समान हंसता है, मुस्कुराता है, रोता है, खाता है, पीता है, विचरण करता है और वैसी ही लीलाएं, वैसी ही क्रियाएं करता है जैसा एक व्यक्ति करता है, एक साधारण व्यक्ति करता है, क्या वह एक युग-पुरुष हो सकता है?

और मैंने कहा कि यह तो पराम्बा की कृपा होती है कि हर व्यक्ति के मन में यह चिंतन, यह विचार, यह भाव, यह धारणा स्पष्ट होती है, और जब स्पष्ट होती है तब उस देव-पुरुष को पहचानने की क्षमता प्रारंभ हो जाती है। जब उसके मन में यह ज्ञात हो जाता है कि जिस बालक को मैं देख रहा हूं जिस व्यक्ति को मैं अपनी इन गोचर इन्द्रियों, इन आंखों के माध्यम से देख रहा हूं वह सामान्य नहीं है, उसकी सामान्यता में भी असामान्यता है, उसकी क्रिया में भी अक्रिया है, उसके हास्य में भी एक विशेष गंभीरता है, उसकी आंखों में अथाह करुणा है, उसकी वीणा में अजस्र प्रवाह है और उसकी वक्तृत्व कला में एक चुम्बकीय आकर्षण है, तो उन छोटी-छोटी परन्तु गंभीर चेष्टाओं के माध्यम से वह लगभग समझ लेता है कि शिशुओं की इस भीड़ में यह बालक कुछ हटकर है, एवं अद्वितीय है।



और शास्त्रों ने जो चिह्न इंगित किए हैं, वे देवताओं के लिए उन अप्सराओं के लिए, उन सामान्य मानवों के लिए स्पष्ट संकेत करते हैं कि यही युग-पुरुष है, यही देव-पुरुष है जिनकी सामीप्यता के लिए हम उस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं।

प्रथम तो यह कि उसका व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा हटकर होता है - उसकी लम्बाई, उसकी चौड़ाई उसका कद, उसकी काठी और उसका सारा शरीर अपने आप में पूर्ण पुरुषोचित, स्पष्ट दिखाई देता है। उस अप्सरा का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक अलग ढंग से आभासित होता है।

दूसरा चिन्तन अथवा क्रिया (चिह्न) यह होती है कि उसके मुख-मंडल पर एक अपूर्व तेज होता है, एक प्रकाश होता है। ऐसा प्रकाश नहीं कि जो आंखों को चौंधिया दे। ऐसा प्रकाश भी नहीं कि जो आंखों को अंधेरे से ग्रस्त कर दे, अपितु ऐसा प्रकाश, जो अत्यंत शीतल है, जो चन्द्रमा की तरह, अमृत बिन्दुओं से

#### अभिसिंचित

है, परन्तु सूर्य के समान दैदीप्यमान भी है, तेजस्विता भी है, क्षमतावान भी है और उसके चेहरे पर कुछ ऐसा भाव है, कुछ ऐसी विशेषता है जो अन्य लोगों में नहीं है। वह भले ही अन्य बालकों की तरह लीला करे, वह भले ही अन्य बालकों की तरह विचरण करे, वह भले ही अन्य बालकों की तरह रोए, हँसे, खिलखिलाए, मुस्कराए और वे सब क्रियाएं करे, जो एक सामान्य बालक करता है।

परन्तु उसकी क्रिया में भी अक्रिया होती है, उसके कार्य में भी अकार्य होता है, उसका प्रत्येक क्षण अपने आप में सजीव एवं चैतन्ययुक्त होता है क्योंकि उसकी आंखों में अथाह करुणा होती है। शीतलता, तेजस्विता अथाह

करुणा से भरी आंखें अपने आप में इंगित कर देती हैं कि यह बालक, यह शिशु सामान्य नहीं है, यह बालिका एक सामान्य लड़की नहीं है, अपितु अवश्य ही अप्सरा का प्रारंभ और स्पष्ट रूप है, निश्चय ही देवता है... और जिसके चेहरे पर तेजस्विता, शीतलता, अथाह करुणा, गरिमा, गंभीरता और पूर्णता होती है वह निश्चय ही युग-पुरुष होता है।

शास्त्रों ने इस प्रकार के युग-पुरुष को पहचानने के लिए तीसरी क्रिया स्पष्ट की है कि उसकी वाणी में एक अलग प्रकार का प्रवाह होता है; और ऐसा प्रवाह जो गतिशील होते हुए भी सामने वाले और सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को अपनी ओर खींचता है, अपने समीप लाने की कोशिश करता है, क्योंकि उसके शब्द, मात्र खोखले शब्द नहीं होते अपितु वे स्वयं ब्रह्म स्वरूप होते हैं। उनके प्रत्येक शब्द में चुम्बकीय आकर्षण होता है। वे शब्द ऐसे नहीं होते कि सुनकर हवा में उड़ा दिए जाएं, वे शब्द ऐसे नहीं होते, जो निरर्थक होते हैं, वे शब्द ऐसे भी नहीं होते कि जिनके पीछे कोई अर्थवत्ता नहीं हो, और इसके माध्यम से यह जाना जा सकता है कि यह निश्चय ही अद्वितीय युग-पुरुष है।

जो व्यक्ति इस प्रकार की क्रियाओं के माध्यम से, इस प्रकार की चेष्टाओं के माध्यम से, इस प्रकार के बिन्दुओं का अवलोकन कर थोड़ा-सा विचार करते हैं, चिंतन करते हैं वो निश्चय ही उस भीड़ में से उस युग-पुरुष को ढूँढ़ निकालते हैं जो पृथ्वी का उद्धारक होता है, जो उस युग का नियंता होता है, जो उस अंधकार में प्रकाश की किरण फैलाने के लिए अवतरित होता है, और जो अपने आपमें युग-पुरुष, इतिहास-पुरुष, देव-पुरुष और अद्वितीय व्यक्तित्व पुरुष होता है। (शेष अगले अंक में)

मैं आपको पूर्ण आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने शिष्यत्व को उच्चता की ओर अग्रसर करते हुए पूर्णत्व प्राप्त करें।

आशीर्वाद आशीर्वाद आशीर्वाद

- सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी।

# वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर  
आप पार्देंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

# कृष्णकु धार्या चंद्र

वर्तमान क्षामाजित पवित्रेश के अनुकाव जीवन के चाक पुकषार्थों में अर्थ ही महत्ता क्षर्वाधिक अनुभव होती है, परंतु जब भाव्य या प्रावृद्ध के आवण जीवन में अर्थ की न्यूनता व्याप हो, तो क्षाधक के लिए यह आवश्यक हो जाता है, कि वह किसी दैविक क्षहायता का क्षाका लेकर प्रावृद्ध के लेख को छलते हुए उसके क्षान पर मनचाही करना अवे। अनधिकारा यंत्र एक ऐसा अद्भुत यंत्र है, जो गवीष के गवीष व्यक्ति के लिए भी धन के खोत खोल ढेता है। यह अपने आप में तीव्र क्षर्वाकर्षण के गुणों को क्षमाविष्ट किए हुए है। लक्ष्मी के क्षम्बन्धित क्षभी ग्रंथों में इसकी महिमा गायी गई है। शंखकावार्य ने भी निर्धन भ्राह्मणी के घक क्षर्वण वर्षा हेतु इस यंत्र की ही चमत्कारिक शक्तियों का प्रयोग किया था।

## साधना विधि

साधक को चाहिए कि इस यंत्र को किसी बुधवार को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। नित्य इसका कुंकुम, अक्षत उवं धूप से पूजन कर इसके समक्ष 'ॐ ह्रीं सहस्रददने कनकेश्वरि शीघ्रं अतर्व अगच्छ अ॒ फट् स्वहा' मंत्र का 21 बार जप करें। उसा 3 बुधवार तक करें, फिर यंत्र को तिजोरी में रख लें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage  
Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) 0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) 0291-2432010

# झद्गुल

प्रेम पंथ का पंथी मैं  
तुम सागर सरिता बनू मैं

झक तरफ जहां सारा, झक तरफ प्रेम रे।  
दौलते जहां बस नाम की, सांचा बस झक प्रेम रे॥

यदि मानव जीवन की पूर्णत प्राप्त करनी है, तो वासना के दलदल से बाहर निकल कर प्रेम को पहचानना होगा, अपने झट्ट के चरणों में, अपने गुरु के चरणों में 'स्व' का विसर्जन करना होगा, उक नदी के समान हरहराते हुए, मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को हटाते हुए जा कर समुद्र में मिलना होगा, अपने आपको मिटाने की क्रिया करनी होगी, तभी प्राप्त हो पायेगा जीवन का वास्तविक अर्थ, तभी प्राप्त हो पायेगी जीवन की श्रेष्ठता, तभी मिल पायेगी अद्वितीयता और तुम बन जाओगे समुद्र के समान विशाल, अनन्त, सर्वश्रेष्ठ, तब तुम सक्षम हो जाओगे काल के भाल पर अपना नाम स्वर्णक्षणों में अंकित करने में...

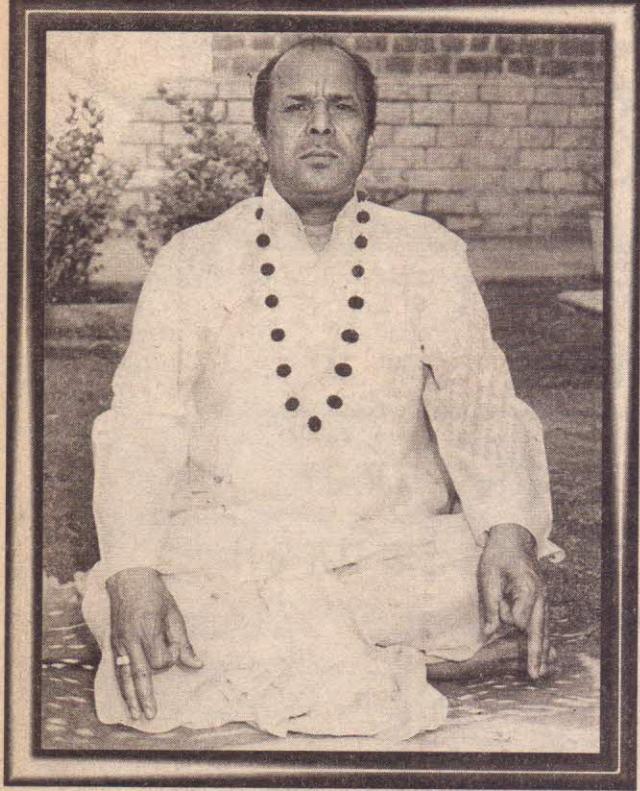
प्रिय की प्रियता प्राप्त हो, हर दिल की यही चाहत होती है। जीवन का सुमधुर संगीत, हृदय पुष्प का पराग, जो श्वासों में स्वतः ही वेग से समाता चला जाता है, वही प्रियता जाने-अनजाने चुम्बक की तरह खींचती, सहज भाव से अपनी मासूमियत से रिझाती, मन-आंगन में प्रेम फुहारों की वर्षा कर, जीवन-कली को सराबोर कर एक नवीन लोक में पहुंचा देती है।

यह है प्रेम लोक, जहां नित्य आनन्द, उल्लास, उमंगों के पुष्प बरसते ही रहते हैं, जिनकी अलौकिक खुशबूओं से सुवासित यहां का दिव्य वातावरण प्रत्येक हृदय को एक तृप्ति भरी मस्ती से भर देता है।

यहां कोई बन्धन नहीं है, छटपटाहट नहीं है, कोई अनृत्यि की किरण नहीं है, सिर्फ पूर्णता, अलौकिक प्रेम की पूर्णता, हृदय पुष्प की पूर्णता, तृप्तियों की पूर्णता, मधुरत्व की पूर्णता। इस दिव्य प्रेम लोक में भौतिक दुनिया का कोई छल-प्रपञ्च नहीं है, यहां है सिर्फ मासूमियत और भोलेपन का दिव्य साम्राज्य। एक बार जो यहां आ जाये, वह खुद को भी नहीं देख पाता, उसे तो हर क्षण बस प्रिय का ही चेहरा दिखाई पड़ता रहता है, सिर्फ उसकी ही शक्ल नजर आती है।

दिव्य प्रेम लोक का यह दिव्य नजारा।

यहां खुद को नजर अत्तर बस रुप तुम्हारा॥



इस लोक में जो एक बार आ गया, वह सदा के लिए नहीं का हो कर रह जाता है। अमरता यहां के वाशिन्दों को खुद अमरत्व का जल पिलाती है, मृत्यु की छाया भी यहां स्पर्श नहीं कर सकती। इसे ही पाना तो जीवन का अंतिम लक्ष्य है, ध्येय है, पूर्णता है।

### यह 'प्रेम' है क्या, यहले यह तो जान लो।

मैं उस प्रेम की बात नहीं कर रहा, जो आज के भौतिक युग में सड़ी-गली मानसिकताओं के साथ प्रचलित है, जो सिर्फ देह से शुरू होता है और देह पर ही खत्म हो जाता है। मैं उस प्रेम की बात कर रहा हूं, जो मीरा ने किया, जो कबीर ने किया, जो चैतन्य महाप्रभु ने किया।

प्रेम तो जीवन पुष्प का पल्लवन है, इसके बिना जीवन पल्लवित नहीं होता, जीवन में आनन्द की कलियां नहीं खिलतीं, पंखुड़ियों पर आळाद का गुलाबी रंग नहीं चढ़ता, हृदय में बसन्ती बयार प्रवाहित नहीं होती, उमंग और उत्साह रूपी भौंर मिलन को व्यग नहीं होते।

प्रेम तो पूर्ण विश्वास, अटूट श्रद्धा और सम्पूर्ण समर्पण का नाम है। प्रेम कुछ लेने की क्रिया नहीं है, बस देना ही देना है, इसमें तो हिसाब-किताब भी नहीं होता।

प्रेम बसे जो दिल में, फैले तो सारा जहां इसमें है। लेकर बन्दे से खुदा तक की हर डोर इसके बस में है। स्रोत है, जो भी प्रेम से जुड़ा, वह अमर हो गया। चाहे वे राम

प्रेम बस भौतिक नहीं, अलौकिक है, अनिर्वचनीय है, तभी तो अपनी दिव्य रश्मियों के साथ यह जिस पर मेहरबान हो जाय, उसे अपनी ही मस्ती में डुबाये रखता है और वह भी डूबता ही चला जाता है, इसकी स्वप्निल दुनिया में खोता ही चला जाता है, आंखों में गुलाबी स्वप्न तैरने लगते हैं, हृदय-वाटिका में प्रेम का स्रोत बहने लगता है, जीवन में सुगन्धित पुष्प स्वतः ही खिलने लगते हैं।

...और जब प्रेम से सराबोर हो जाता है तन-मन, तो सब कुछ प्रियमय ही नजर आने लगता है, जिथर देखो, उसी का बिम्ब दिखाई पड़ता है, हर पल उसी के आने की आहट सुनाई देने लगती है, पवन के झोंकों में उसी की खुशबू महसूस होती है और इस प्रेम के लिए वह हर दर्द, हर कसक की दवा बन जाता है।

**ओषध खाऊं न बूटी खाऊं, ना कर्ड वैद्य बुलाऊं।  
मम प्रिय ही वैथ मेरो, ताहि करो नब्ज दिखाऊं॥**

प्रेम में बस एक ही शर्त होती है - खो देना, सब कुछ खो देना, कुछ भी पाने की तमन्ना न हो। जो पाना चाहता है, वह प्यार नहीं, व्यापार करता है। इसमें यह नहीं देखा जाता, कि प्रिय तुम्हारे लिए कितना जीता है या तुम्हें कितना याद करता है, बल्कि देखने की चीज तो यह है, कि तुम उसके लिए कितना मर सकते हो, उसे कितना याद कर सकते हो?

अपनी श्रद्धा, अपना समर्पण, अपना विश्वास, अपने ख्वाब, अपना चैन, अपनी नींद - सब कुछ खो देना ही तो प्रेम है। अपना सब कुछ खो कर किसी के हो जाने में जो दिव्य आनन्द है, वह अवर्णनीय है, अकथनीय है, जिसका वर्णन जिह्वा नहीं कर सकती। सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है, कि जिसे यह नशा हो गया, जिस पर यह मधुरता छा गई, जिसने अपने अन्तर्मन में इस खुशबू को आत्मसात् कर लिया, उसके लिए फिर दुनिया का हर रंग फीका है। वाणी में इतनी सामर्थ्य कहां, कि वह इसको शब्दों में बांध सके?

**सारी दुनिया से हाथ धो कर देखो,  
जो कुछ भी है खो कर देखो।  
क्या अर्ज करूँ कि इसमें क्या लज्जत है,  
इस मर्तबा किसी के हो कर देखो।**

यह प्रेम और इसका दिव्य लोक पाना दुष्कर जरूर है, पर इसके सिवा इस संसार में सब कुछ नश्वर है, क्योंकि यह संसार जिस्म से सम्बन्ध रखता है और प्रेम आत्मा से, जिस्म मर जाते हैं, पर आत्मा नहीं मरती। प्रेम स्वयं अमरत्व का

व सीता हों, राधा व कृष्ण हों, पुरुरवा व उर्वशी हों, दुष्यन्त व शुकन्तला हों या शंकर व पार्वती, ये सब प्रेम से जुड़ गए, इन्होंने प्रेम किया, प्रेम के तत्व को समझा और प्रेम के अमृत का पान कर अमर हो गए।

प्रेम का जागरण ही मनुष्य को मनुष्यत्व से ऊपर उठा कर देवता बना देता है, इसी के बल से मानव वह कर गुजरता है, जो मानवीय शक्तियों और सामर्थ्य से भी परे है। इसे कोई रोक नहीं सकता, यह कभी तटबन्धों में नहीं बंटता, बल्कि इसमें सारे जहां को बांध लेने की सामर्थ्य है।

**वस्तुतः** प्रेम की सत्ता ही ईश्वर की सत्ता है, जर्मी से आसमां तक इसी का प्रकाश है, यदि यह न होता, तो सृष्टि ही नहीं होती। यह पृथ्वी भी तो सूर्य के प्रेम में बंधी उसके चारों ओर चक्कर लगाती रहती है, जैसे कोई प्रेम दीवानी अपने प्रियतम के इर्द-गिर्द धूम रही हो।

दोनों का खुद को भूल कर एक हो जाना ही प्रेम है, जहां द्वैत की हल्की सी लकीर भी न रहे।

**अजब प्रेम नगर अजब जादू हो जया।**

**मैं था जो पहले मैं, बस तू ही तू हो जया।**

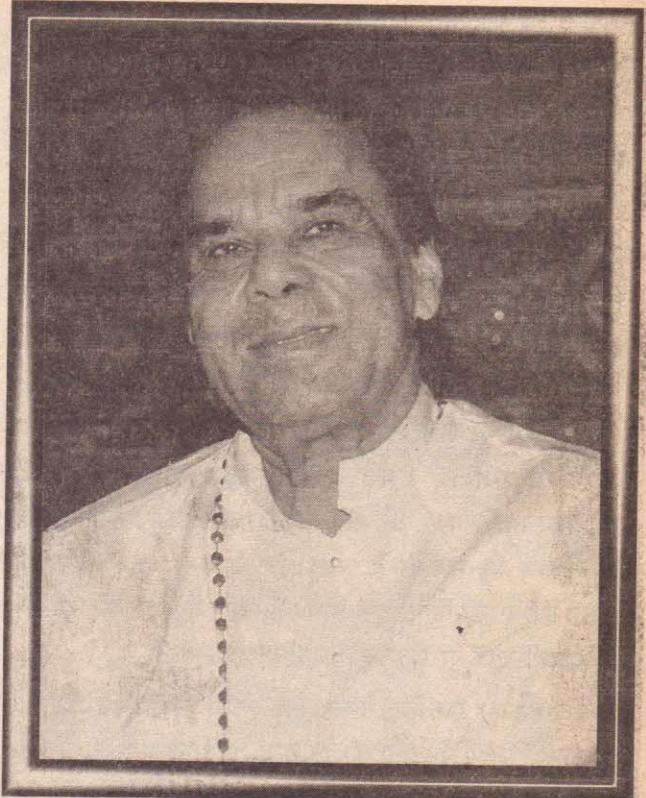
प्रेम तो उत्स है उन्नति का, जीवन का रस है, इसके बिना जीवन में किसी प्रकार का रस ही नहीं है। इसका स्रोत कभी सूख नहीं पाया, यह तो उसी प्रकार से अजस्र प्रवाहमान है, जैसा पहले था।

**पर जो प्रेम को वासना ही समझे बैठे हैं, वे तो प्रेम की गंध भी नहीं पा सकते, प्रेम के दिव्य लोक पर पहुंचना तो दूर की बात है; जो प्रेम को नहीं जान पाया, जिसके हृदय में प्रेम-वीणा की झंकार झंकत नहीं हुई, उसे साधना तो कदापि सिद्ध नहीं हो सकती, ईश्वर मिलना तो दूर की बात है।**

जहां तक देखिये, सर्वत्र प्रेम का ही साम्राज्य है। प्रेम कभी गंदा नहीं होता, यह तो देखने वाले की नजर है, कि वह क्या देखता है। प्रेम में तो कुछ ऐसा होता है, कि प्रियतम के सिवा कुछ नजर ही नहीं आता, न धन, न दौलत, न पद, न प्रतिष्ठा, यदि कुछ दिखाई पड़ता है, तो सिर्फ़ प्रेम और प्रियतम।

**इक तरफ जहां सारा, इक तरफ प्रेम रे /  
दौलते जहां बस नाम की, सांचा बस इक प्रेम रे॥**

प्रेम ही वह प्रकाश है, जिसकी रश्मियां एक ऐसे बातावरण को जन्म देती हैं, जिसमें शीतलता तन-मन को सुवासित करती रहती है और आनंदोलित मन पायलिया के धुंधरू बांध कर नृत्य कर उठता है, शीतल हवायें महकते तन-मन पर तुलना भी नहीं की जा सकती, इसकी कोई उपमा नहीं दी जा



ऐसा जादू करती हैं, कि खुद ही वे साज बजने लगते हैं, जिनकी मधुर थाप पर तन-मन को विभोर कर देती है, पैर खुद-ब-खुद थिरकने लगते हैं, बिना कहे सावन बरस कर पूरे अन्तस् को भिंगोने लगता है और मन प्रेम पुजारी बन अपने इष्ट की बन्दगी करता हुआ उसमें ढूब जाता है।

प्रेम तो यज्ञ की ज्वाला है, प्रेम ही सबसे बड़ा यज्ञ है, जिसका यज्ञकुण्ड यह जीवन है, श्वास इसका मंत्र है तथा आहुति हम स्वयं हैं। प्रेम करने से बड़ा पुण्य तो कोई ही नहीं।

गीता में श्रीकृष्ण ने भी कहा है -

**‘सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज’**

अर्थात् सभी धर्मों को छोड़ कर एकमात्र मेरी शरण में आओ... और उन्होंने एकमात्र धर्म चलाया - प्रेम वे स्वयं प्रेम की प्रतिमूर्ति थे, जिनसे प्रेम कर राधा सम्पूर्ण विश्व के लिए पूज्य हो गई, जिनकी दीवानी बन कर मीरा ने अपना नाम सबके होठों पर अंकित कर दिया और इसके लिए उन्होंने कोई साधना नहीं की थी, कोई मंत्र जप नहीं किया था, कोई तपस्या नहीं की थी, सिर्फ़ प्रेम किया था श्रीकृष्ण से, जो योगेश्वर हैं, ईश्वर हैं, सद्गुरु हैं, जगद्गुरु हैं।

प्रेम में जो आनन्द है, वह अन्यत्र कहीं नहीं, इसकी कोई

सकती। प्रेम की यदि कोई उपमा भी है, तो यह मात्र प्रेम है, यह अद्वितीय है, क्योंकि यह ईश्वर की देन है। जड़, चेतन सभी इसी की आकांक्षा रखते हैं। नदी भी सागर से मिलने के लिए सैकड़ों मील दौड़ती चली जाती है, मचलती हुई, इठलाती हुई, किनारों को तोड़ती हुई, बाधाओं को मिटाते हुए अपने साथ बहाती हुई... और समुद्र से मिलते ही अपने आपको उसके आगोश में सौंप देती है, अपना अस्तित्व तक मिटा देती है, एकाकार हो जाती है, नदी का कोई निशान भी नहीं बचता, सारा दैत पल भर में समाप्त हो जाता है और वह बन जाती है क्षुद्र से विशाल, विस्तृत, अनन्त।

यही तो प्रेम है, इसमें गुस्सा, नाराजगी, दूरी, शक, अविश्वास आदि पास भी नहीं फटकते, कोई अपने आपसे ही कैसे नाराज हो सकता है, खुद पर ही कैसे शक किया जा सकता है? प्रियतम के दूर होने पर भी जो चैन से रह ले, उसने अभी खुद से प्रिय को मिलाया ही नहीं है।

इसे पाने का एक ही रास्ता है - प्रिय से मिलने की, हर पल उसके पास पहुंचने की व्यग्रता... और यह व्यग्रता ही प्रियतम को तुम्हारे पास खींच लायेगी।

**जितनी होर्जी तड़प तुम्हारे दिल की,  
सदा उतनी ही उसके दिल तक जरवेगी।**

प्रेम मानव को प्रदान किया हुआ परमेश्वर का अनुपम वरदान है। वह महान सृष्टिकर्ता कहता है - 'मुझे प्रेम है प्रकृति से, तभी तो मैं उसके सहयोग से सृष्टि की रचना करता हूँ।' परमेश्वर के बनाये पांचों देवता - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश - जो मानव जीवन के आधार हैं, वे भी प्रभु की इस रचना से प्रेम करते हैं, तभी तो जीवन है।

इसीलिए महापुरुषों ने कहा है, कि प्रेम में कृपण मत बनो, वह अक्षय है, जितना बांटोगे, उतना ही बढ़ता चला जायेगा। जब कण-कण में प्रेम की चेतना बसी हुई है, जब जन्म मिला ही इसीलिए है, कि प्रभु से प्रेम कर हम वासनाओं से मुक्त हों और प्रेम के अमृत रस का पान कर प्रेमय हो सकें, कृष्णमय हो सकें, गुरुमय हो सकें, पूर्णता प्राप्त कर सकें, तो फिर तुम किस बहकावे में हो, क्यों बचाये हुए हो अपना दामन, क्यों अपने झूठे अहं को जाग्रत रख कर जीवन-मरण के चक्र में फँसे हुए हो, क्यों मानव शरीर प्राप्त करने के बाद भी पूर्णत्व से दूर रहना चाहते हो, ब्रह्मत्व से दूर रहना चाहते हो?

यदि मानव जीवन की पूर्णत प्राप्त करनी है, तो वासना के दलदल से बाहर निकल कर प्रेम को पहचानना होगा, अपने इष्ट के चरणों में, अपने गुरु के चरणों में 'स्व' का विसर्जन

करना होगा, एक नदी के समान हरहराते हुए, मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को हटाते हुए जा कर समुद्र में मिलना होगा, अपने आपको मिटाने की क्रिया करनी होगी, तभी प्राप्त हो पायेगा जीवन का वास्तविक अर्थ, तभी प्राप्त हो पायेगी जीवन की श्रेष्ठता, तभी मिल पायेगी अद्वितीयता और तुम बन जाओगे समुद्र के समान विशाल, अनन्त, सर्वश्रेष्ठ, तब तुम सक्षम हो जाओगे काल के भाल पर अपना नाम स्वर्णक्षरों में अंकित करने में...

और प्राप्त कर पाओगे जीवन की वास्तविक चेतना, जीवन का वास्तविक आनन्द, जिसे परमानन्द कहा गया है, जिसे ब्रह्मानन्द कहा गया है, जिसे सच्चिदानन्द कहा गया है, जो चिर शाश्वत है, अमृत रस से पूर्ण है... और अपने जीवन से दुर्भाग्य को मिटाते हुए अन्तर्यात्रा कर सकोगे उस दिव्य प्रेम लोक की, जहां बाधाएं नहीं हैं, समस्याएं नहीं हैं, परेशानियां नहीं हैं, पीड़ा नहीं है, कष्ट नहीं है, दुःख नहीं है... है तो बस प्रेम, जीवन का आनन्द, पूर्णता।

और इस प्रेम पथ की शुरुआत गुरु चरणों से ही होती है, उन चरणों को अपने आंसुओं से पखार कर ही अपने अन्दर की मलिनता को साफ किया जा सकता है, उन चरणों में समर्पण कर ही प्रेम का पहला अक्षर सीखा जा सकता है, उन चरणों में अपने आपको मिटा कर बूँद से समुद्र बना जा सकता है, उन चरणों का पूजन करना ही प्रेम की पूजा करना है।

गुरु का विम्ब अपने हृदय में अंकित कर अपने हृदय में प्रेम का स्थापन किया जा सकता है, क्योंकि इस संसार में वे मात्र गुरु ही नहीं हैं, वे साक्षात् प्रेम हैं और प्रेम करने वालों को ब्रह्ममय बना देने की सामर्थ्य रखते हैं।

आइये! हम सभी पूर्णता के साथ गुरु चरणों में अपने 'स्व' को विलीन कर विराटता को प्राप्त कर लें, अद्वितीयता को प्राप्त कर लें, पूर्णता को प्राप्त कर लें, पूर्ण रूप से प्रेममय बन जायें और अपने होठों पर थिरकने दें इन शब्दों को -

**सुरम्द्द घटाऊं की फुहार प्रेम  
मन वीणा की झंकार प्रेम  
मधुर चांदनी का प्यार प्रेम  
समर्पण का त्यौहार प्रेम  
मधुरिम खुशबू की बयार प्रेम  
जीवन सरिता का शृंगार प्रेम  
दिल की चाहत हर बार प्रेम  
पायतिया की झंकार प्रेम**

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय  
 च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥  
 भगवान् शंभु, कल्याणकारी, सुख प्रदाद करने वाले सदाशिव को  
 मेरा बप्त है, आप ही शंभु हैं, शिव हैं, शंकर हैं, आप से परे  
 कुछ भी नहीं है ।

सह ब्रह्म स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् ।  
 स एव विष्णुः स प्राणः स कालोऽनि स चन्द्रमः ॥  
 पश्चात् स्वरूप ब्रह्मा, विष्णु, आप ही शिव स्वरूप हैं, आप ही  
 इब्द आदि सभी देवताओं के रूप हैं और अविद्याशी, सर्वोत्तम,  
 स्वयं प्रकाश हैं । आप ही विष्णु हैं । आप हिरण्यगर्भ रूप प्राण  
 हैं, काल, अग्नि और चन्द्रमा हैं ।  
 काय विष्णुः क्रिया ब्रह्मा कारणं तु महेश्वरः ।  
 प्रयोजनार्थं रुद्रेण मूर्तिरिका विधा कृता ॥  
 विष्णु कार्य है, ब्रह्मा क्रिया है और महेश्वर कारण हैं, संसार के  
 प्रयोजन के अर्थ के लिए भगवान् रुद्र वे अपने एक ही स्वरूप  
 को तीन रूपों में विभक्त किया है ।

# महाशिवरात्रि

## महाशिवरात्रि-सम्पूर्ण विधान

भगवान् शंकर की पूजा, काष्ठला अर्चना, अभिषेक नम्पञ्च करने के हेतु हवे आधक तत्वने ही बहुवा  
 है, वर्योंकि भगवान् शंकर तेजीमय नमकेत श्रीष्ट कर्मी को नम्पञ्च करने वाले नमकेत द्वादशी के विवाही  
 एवं विद्याआदि के कावण हैं, अज्ञय और अगम्य हैं, वथा कभी के लिए नर्वनि कल्याणकावेक हैं,  
 भगवान् काष्ठशिव, जो भील नाथ भी हैं, वक्षेश्वर भी हैं, बटवाग भी हैं, शक्ति के काष्ठेव युक्त हैं। बृष्टि  
 की उत्पत्ति के लंहावे तक केवल शिव ही शिव हैं। वाहु कनुण क्रप के मूर्तिमाल क्रप में उपासना की  
 जाए अथवा निर्गुण क्रप में, शिव लिंग क्रप में उपासना की जाए, वे दो केवल बिल्व पत्र और अविल  
 गलधावा, हुग्धधावा के प्रकाश होने वाले देव हैं और ऐसी देवों के देव महादेव की उपासना, काष्ठला  
 और अभिषेक के लिए महाशिवरात्रि के मठान् कोई पर्व नहीं ही किकता।

सौर, गणपत्य, शैव, वैष्णव और शाक - प्रधानतः इन्हीं पांच सम्प्रदायों में विराट हिन्दू-समाज विभक्त है। इनमें से जो जिसके उपासक होते हैं, वे अपने उस इष्टदेव को छोड़कर अन्य की उपासना प्रायः नहीं करते, परन्तु शिवरात्रि व्रत की महिमा निराली है। शास्त्र में भी ऐसा ही वर्णित है, तथा इसी विधान का आज तक पालन होता आया है कि सम्प्रदाय-भेद को त्याग, सभी मनुष्य इसका पालन करते हैं और इसके फलस्वरूप भोग और मोक्ष दोनों को प्राप्त करना चाहते हैं -

ईशान- संहिता में शिवरात्रि के सम्बन्ध में कहा है -

**माघकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि ।**

**शिवतिङ्गत्योद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः ॥**

**तत्कालव्यापिनी ग्रह्या शिवरात्रिव्रते तिथिः ॥**

अर्थात् माघ-मास की कृष्ण चतुर्दशी की महानिशा में आदिदेव महादेव कोटि सूर्य के समान दीमिसम्पन्न हो शिवलिंग के रूप में आविर्भूत हुए थे, अतएव शिवरात्रि में उसी महानिशा-व्यापिनी चतुर्दशीको ग्रहण करना चाहिये।

इसके सम्बन्ध में भगवान शंकर स्वयं कहते हैं -

**फाल्गुने कृष्णपक्षस्य या तिथिः स्याच्चतुर्दशी ।**  
**तस्यां या तामसी रात्रिः सोच्यते शिवरात्रिका ॥**  
**तत्रोपवासं कुर्वणः प्रसादयति मां ध्युम् ।**  
**न स्त्रानेन न वस्त्रेण न धूपेन न चार्चया ॥**  
**तुष्यामि न तथा पुष्यैर्यथा तत्रोपवासतः ॥**

‘फाल्गुन के कृष्ण पक्ष चतुर्दशी तिथि को आश्रयकर जिस अन्धकारमयी रजनी का उदय होता है, उसी को ‘शिवरात्रि’ कहते हैं। उस दिन जो उपवास करता है वह निश्चय ही मुझे संतुष्ट करता है। उस दिन साधना अभिषेक करने से मैं जैसा प्रसन्न होता हूँ वैसा स्नान, वस्त्र, धूप और पुष्प के अर्पण से भी नहीं होता।’

### शिवरात्रि अभिषेक रात्रि

भगवान सदाशिव देवों के देव महादेव है, जिनकी कृपा तले यह चराचर विश्व गतिशील है भगवान शिव को औघड़दानी कहा गया है, जो कृपा कर अपने भक्तों को सदैव अभय वर एवं सामर्थ्य प्रदान करते हैं। भगवान शिव ही एक मात्र गृहस्थ देव हैं जिनकी पूजा पूरे परिवार सहित की जाती है। भगवान शिव के परिवार में मां पार्वती, पुत्र गणेश एवं कातिक्य तथा वाहन नन्दी सम्मिलित हैं।

शिव पूजन और साधना गृहस्थ व्यक्तियों द्वारा परिवार में सुख समृद्धि प्राप्ति के लिए, कन्याओं द्वारा श्रेष्ठ पति प्राप्ति के

लिए, वृद्ध और रोगियों द्वारा पूर्ण रोग मुक्ति के लिए, भय से ग्रसित व्यक्तियों के लिए मृत्युंजय स्वरूप में, योगियों संन्यासियों के लिए पूर्ण सिद्धेश्वर रूप में; अर्थात् सभी द्वारा अपने अपने अभीष्ट कार्यों के लिए शिवपूजा अवश्य सम्पन्न की जाती है।

ऐसा कोई अभागा ही होगा, जिसने भगवान शिव की पूजा साधना की हो और उसे फल प्राप्त नहीं हुआ हो। शिव साधना से तो अभागे व्यक्ति के भाग्य भी खुल जाते हैं। भगवान शिव तो सदैव वर प्रदान करते ही हैं, इसीलिए उनकी स्तुति देवताओं के साथ-साथ गण, राक्षस, गधर्व, भूत-प्रेत, पिशाच सभी सम्पन्न करते हैं।

महाशिवरात्रि, भगवान शिव की पूजा अभिषेक करने हेतु विशेष दिवस है। सृष्टि में शिवलिंग की उत्पत्ति महाशिवरात्रि की रात्रि को ही हुई थी और इसी रात्रि को भगवान शिव ने भगवती पार्वती का वरण किया था इसीलिए इसे शिवगौरी दिवस भी कहा जाता है। यह पर्व मस्ती, उल्लास और आनन्द का पर्व है। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति को, बाल, युवा, वृद्ध, गृहस्थ, योगी, संन्यासी, स्त्री, पुरुष सभी को शिव पूजन एवं अभिषेक अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। वैसे तो भगवान शिव लोटा भर जल चढ़ाने से ही प्रसन्न हो जाते हैं लेकिन जब विधि विधान अनुसार पूजन किया जाता है तो उसका आनन्द निराला ही होता है।

महाशिव रात्रि पूजन इस वर्ष महाशिवरात्रि 6 मार्च 2008 को है, इसके साथ ही प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी शिव अविर्भाव दिवस माना जाता है। साथ ही सोमवार भी भगवान भोलेनाथ का दिवस है। शिवरात्रि साधना, विधि विधान सहित सम्पन्न करने के लिए पंचामृत, नैवेद्य, चंदन, बिल्व पत्र, जल, दुध की व्यवस्था पहले से ही कर लें इसके अतिरिक्त पूर्ण विधि विधान सहित साधना के लिए षोडषोपचार सामग्री आवश्यक हैं।

**साधना सामग्री:** षोडषोपचार पूजन सामग्री अबीर, गुलाल, इत्र, चन्दन, कुंकुम, अगरबत्ती, दीपक, प्रसाद, पुष्प इत्यादि की आवश्यकता होती है। पूजन हेतु मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त पारदेश्वर शिवलिंग, पार्वती क्रियमाण, रुद्राक्ष माला एवं अष्ट रुद्र शक्ति चक्र।

### पूजन साधना विधान

#### भूमि शुद्धि :

भूमि पर दाहिना हाथ रखकर यह मंत्र पढ़ें -  
**ॐ भूरसि भूर्मिस्त्वा दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्त्वधर्त्री । पृथिवी यच्छ पृथिवीन्दृ (जू) ह पृथिवी मा हि (जू) सा ।**

### श्री गणेश पूजन

हाथ में अक्षत, पुष्प, कुंकुम लेकर निम्न मंत्रों से विघ्न को दूर करने के लिए गणेश-विग्रह के सामने हाथ जोड़कर मंगलकामना करें-

### ध्यान

ॐ गणानां त्वा गणपति (जू) हवामहे प्रियाणां  
त्वा प्रियपति (जू) हवामहे निधीनां त्वा निधिपति  
(जू) हवामहे वस्त्रे मम। आहमजानि गर्भधम्। ॐ  
जं गणपतये नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन् हे हे रम्ब! त्वमेहोहि  
अम्बिकात्र्यम्बकात्मज। सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष  
लक्ष्यताभिप्तिः पितः॥

ॐ जं गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि  
पूजयामि।

यह उच्चारण करके गणेश-विग्रह पर अक्षत छिड़क दें। विग्रह के अभाव में सुपारी पर रक्त सूत्र (मौली) लपेट कर पात्र में रखें।

ॐ जं गणपतये नमः सर्वोपचारर्थं  
गंथाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

### भैरव पूजन

इसके पश्चात् भैरव से आज्ञा प्राप्त करने हेतु निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पन्तदहनरोपम।  
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥

और मन में भावना करें कि भगवान् भैरव ने मुझे आज्ञा प्रदान कर दी है।

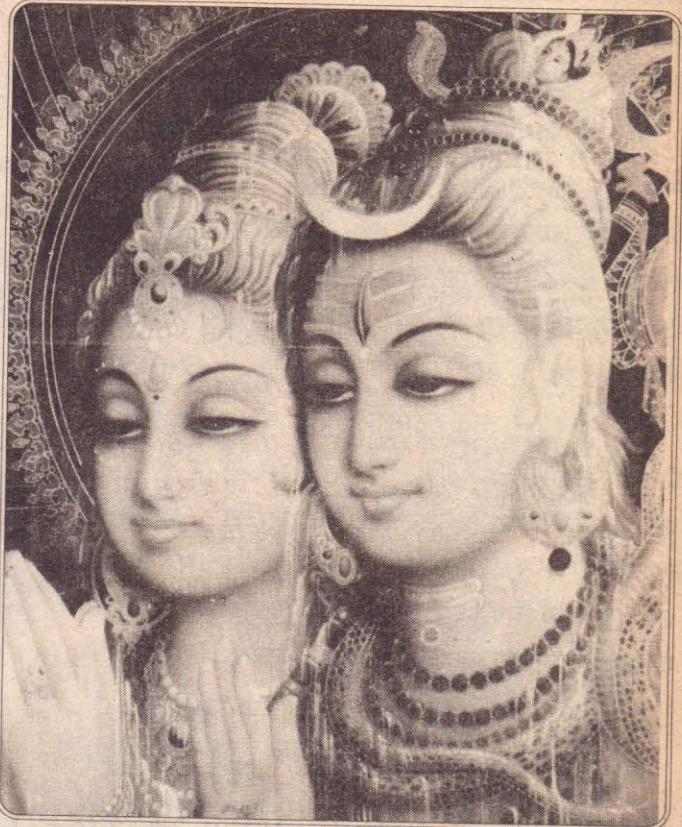
इसके पश्चात् एक थाली में स्वस्तिक बनाकर उसके मध्य में पारदेश्वर शिवलिंग स्थापित करें। पारदेश्वर शिवलिंग का षोडषोपचार पूजन करें।

### ध्यान:

द्यायेऽन्तिं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतं सं  
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसङ्गं।  
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतमरगणैव्यग्रिकृति वसानं  
विश्वाद्यं विश्ववन्दं निखिल भवहरं पञ्चवक्त्रं  
त्रिनेत्रम्॥

### आह्वान:

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इष्वे नमः। बाहुभ्यामुत  
ते नमः॥ एहोहि जौरीश पिनाकपाणे



शशांकमौलेवृषभाधिरूढ़। देवाधिदेवेश महेश नित्यं  
जृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥ आवाहयामि  
देवेशमादिमध्यान्तवर्जितम्। आधारं  
सर्वलोकानामाश्रितार्थं प्रदायिनम्॥ ॐ  
उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि।

अक्षत अर्पण करें।

### आसन:

विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बरनिवासिने।  
रत्नसिंहासनं चारु ददामि करुणानिधे॥  
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनर्थं पुष्पं समर्पयामि।  
पुष्प चढ़ावें।

### पाद्य:

अब शिवलिंग एवं पार्वती क्रियमाण पर जल अर्पित करते हुए निम्न मंत्र बोलें -

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पादयोः पादं समर्पयामि।

### अर्घ्यः

अनर्घफलदात्रे च शास्त्रे दैवतस्य च,  
तुभ्यमर्घ्यं प्रदास्यामि द्वादशान्तनिवासिने॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।  
अर्घ्यपात्र में गन्धाक्षतपुष्प के साथ जल लेकर चढ़ावें।

आचमनः

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

छः बार आचमन करावें ।

स्नानः

जंगाक्षिलनजटभार सोमसोमार्थशेखर ।

नद्या मया समानीतैः स्नानं कुरु महेश्वर ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

घंटावादन करें तथा स्नान करावें ।

पंचामृतस्नानः

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः ।

सरस्वती तु पञ्चनद्य सो देशे भवत्सरित् ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि ।

पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

पहले पंचामृत व फिर जल से स्नान करावें ।

अब मुख्य अभिषेक प्रारम्भ होता है। इसमें दुग्ध मिश्रित जल को शिवलिंग पर चढ़ायें। मूलरूप से अभिषेक में रुद्राष्टाध्यायी का पाठ सम्पन्न किया जाता है, लेकिन यदि आप रुद्राष्टाध्यायी का पाठ स्वयं सम्पन्न न कर सकें तो रुद्राष्टाध्यायी की कैसेट भी लगा सकते हैं और यदि स्वयं पूजन करना चाहते हैं तो ढाई घंटी अर्थात् 24 मिनट + 24 मिनट + 12 मिनट अर्थात् 1 घंटे तक रुद्राभिषेक सम्पन्न करते समय निम्न मंत्र का जप करें।

// ॐ नमः शिवाय ॐ हौ जूः सः ॐ नमः शिवाय //

उपरोक्त मंत्र का जप मध्यम स्वर में सम्पन्न करते रहें। इसकी पूर्णता के पश्चात् पारदेश्वर शिवलिंग को स्वच्छ जल से (यदि गंगाजल उपलब्ध हो तो अच्छी बात है।) साफ कर एक दूसरी थाली में स्वस्तिक बनाकर उस पारदेश्वर शिवलिंग को स्थापित करें।

जब अभिषेक पूर्ण हो जाता है, तो भगवान शिव का घोड़ष श्रृंगार सम्पन्न किया जाता है। इस घोड़ष श्रृंगार में इत्र, कुंकुम, गुलाल, वस्त्र, धूप, दीप, नैवेद्य का समर्पण किया जाता है।

इसके पश्चात् शिवलिंग का श्रृंगार निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए करें।

गन्धोदकस्नानः

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले अबीर गुलाल इत्यादि अर्पण करें।

वस्त्रः अब शिवलिंग एवं मां पार्वती स्वरूप क्रियमाण पर मौली अर्थात् कलावा वस्त्र अर्पित करें।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ।

सुगन्ध द्रव्यः

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमपुष्टिवर्द्धनम् ।

उवर्णुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सुगन्ध-द्रव्यं समर्पयामि ।

यह मंत्र बोल कर भगवती शक्ति एवं शिव के विग्रह का सुगन्धित पुष्टि वर्धक द्रव्य से लेपन करें और यह सुगन्धित इत्रादि द्रव्य अपने वस्त्रों पर भी लगाएं।

गन्धः

ॐ प्रमुक्तश्चन्दनस्त्वमुभयोरात्यर्ज्यामि ।

याश्चते हस्तड़इष्वः पराता भगवोवप ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि ।

पूजन के समय अष्ट शक्ति चक्र में प्रत्येक चक्र कुंकुम एवं चन्दन लगाएं तथा रुद्राक्ष माला पर केवल सुमेरु पर ही चन्दन का तिलक करें।

पुष्पः

तुरीयवनसंभूतं परमानन्दसौरभम् ।

पुष्पं गृहण सोमेश पुष्पचापविभंजन ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि ।

सभी सामग्री पर पुष्प अर्पण करें।

धूपः

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः धूं आग्रापयामि ।

अगरबत्ती जलायें।

दीपः

साज्ज्वर्तिर्युतं दीपं सर्वमंगलकारम् ।

समर्पयामि पश्चेदं सोमसूर्याञ्जितरोचन ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः दीपं दर्शयामि ।

प्रज्ज्वलित दीपक पर घंटा-वादन करते हुए अक्षत छोड़ दें।

नैवेद्यः

नैवेद्य के ऊपर बिल्वपत्र या पुष्प का अर्पण करते हुए -

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि ।

फिर ग्रासमुद्रा से निम्नांकित उच्चारण करें -

ॐ ग्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय

## स्वाहा।

अब शिवलिंग एवं भगवती पार्वती को नैवेद्य ग्रहण करने की भावना देते हुए दक्षिणा द्रव्य सुपारी इत्यादि अर्पित करें।

इसके पश्चात् भगवान शिव की अष्ट शक्तियों को आठ कोणों में पारदेश्वर शिवलिंग के चारों ओर स्थापित किया जाता है। जब यह पूजन पूर्ण हो जाता है तो शिव-स्तुति और समर्पण स्तुति सम्पन्न होती है। इसके बाद आरती सम्पन्न की जाती है।

इसके पश्चात् शिवलिंग के चारों ओर आठ दिशाओं में शिव की आठ शक्तियों को स्थापित करते हुए, प्रत्येक शक्ति के मंत्र का 21-21 बार मंत्र जप करें। ये आठ शक्ति चक्र आठ शक्तियों अभीप्सा, नमेरू, सम्रधा, सौष्ठा, वैश्रुत्य, सोहाद, मोदल, शतहनी का स्वरूप हैं। इनका भी पूजन शिवरात्रि को विशेष रूप से सम्पन्न किया जाता है।

**अभीप्सा:-** मनोकामना पूर्ति हेतु अभीप्सा को पूर्व दिशा में स्थापित पर निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र : ॐ शं हां नमः।

**नमेरू:-** धन प्राप्ति हेतु नमेरू को अग्निकोण में स्थापित करें।

मंत्र : ॐ शं हीं नमः।

**सम्रधा:-** व्यापार वृद्धि हेतु सम्रधा को दक्षिण दिशा में स्थापित करें।

मंत्र : ॐ शं हुं फट।

**सौष्ठा:-** सौन्दर्य प्राप्ति हेतु सौष्ठा को नैऋत्य कोण में स्थापित करें।

मंत्र : ॐ शं हुं नमः।

**वैश्रुत्य:-** तंत्र बाधा निवारण हेतु वैश्रुत्य को पश्चिम कोण में स्थापित करें निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र : ॐ शं हुं फट।

**सोहाद:-** आरोग्य प्राप्ति हेतु सोहाद को वायव्य दिशा में स्थापित करें।

मंत्र : ॐ शं हुं नमः।

**मोदल:-** गृहस्थ सुख हेतु मोदल को उत्तर दिशा में स्थापित करें-

मंत्र : ॐ शं हौं नमः।

**शतहनी:-** शत्रुबाधा निवारण हेतु शतहनी को ईशानकोण में स्थापित करें-

मंत्र : ॐ शं हौं फट।

अब भगवान् शिव की आरती एवं प्रार्थना समर्पण भाव से



सम्पन्न करें।

**आरती:**

पूर्ण भक्तिभाव से भगवान सदाशिव की आरती करें (आरती पृष्ठ संख्या 31 पर है।)

अब निम्न मंत्रों से शिव स्तुति एवं समर्पण भाव जय-जयकार करें -

जै शिव ॐ कारा। मन भज शिव ॐ कारा। मन रट शिव ॐ कारा। हो शिव भूरी जटा वाला। हो शिव दीर्घ जटा वाला। हो शिव तीक्ष्ण नेत्र वाला। हो शिव ऊपर गंगधारा। हो शिव बरसत जलधारा। हो शिव तीक्ष्ण नेत्र ज्वलारा। हो शिव जल बिच रुण्डमाला। हो शिव कम्बु ग्रीव वाला। हो शिव भस्मी अंग वाला। हो शिव फणिधर फण धारा। हो शिव वृषभ स्कन्ध वाला। हो शिव अोढ़त मृग छाला। हो शिव धरण मुण्डमाला। हो शिव भूत-प्रेत वाला। हो शिव बैल चढण वाला। हो शिव पारबती प्यारा। हो शिव भक्तन हितकारा। हो शिव दुष्ट दलन वाला। हो शिव पीवत भंग प्याला। हो शिव मस्त रहन वाला। हो शिव बरसो जलधारा। हो शिव काटो जम फांसा। हो शिव मेटो जम त्रासा। हो

शिव रहते मतवाला। हो शिव ऊपर जलधारा। हो शिव  
ईश्वर उँ कारा। हो शिव बम बम बम भोला। ब्रह्मा  
विष्णु सदाशिव, भोले नाथ महादेव, अद्वैती धारा।  
उँ हर हर हर महादेव...

इसके बाद शंख में या पात्र में जल लेकर घुमाते हुए जल  
छोड़े और निम्न मंत्र पढ़ें -

उँ द्यौ (ह) शांतिरन्तरिक्षं (जू) शांति (हि) पृथिवी  
शांति राप (ह) शांतिरोषथय (ह) शांति (हि) वनस्पतय  
(ह) शांतिर्विश्वेदेवा (ह) शांति (हि) ब्रह्मशांति (हि)  
सर्व (जू) शांति (हि) शांति रे वशान्ति (हि)  
सामाशान्तिरेष्टि ॥

दोनों हाथ जोड़कर क्षमा प्रार्थना करें -

आह्वानं न जानामि न जानामि त्वार्चनम् ।  
एूजां चैव न जानामि क्षमस्व महेश्वर ॥  
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।  
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व पर्वतीनाथ ॥  
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।  
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्यांच त्व दर्शनात् ॥  
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।  
यत्पूजितं मर्या देव परिपूर्ण तदस्तु मे ॥  
यदक्षरं परदं भष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।  
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद एरमेश्वरः ॥

भगवान शिव के सामने चढ़ाये हुए नैवेद्य को पूरे परिवार में  
वितरित करें।

इस पूजन क्रम के पश्चात् पूर्ण आदर भाव सहित सिद्धि  
प्रदायक शिवलिंग को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें।  
आठों शक्तियों को अपने एवं परिवार के सभी सदस्यों के सिर  
पर ग्यारह बार घुमाकर एक दिन अपने पूजा स्थान में रखें  
तथा दूसरे दिन किसी शिव मंदिर में अर्पित कर दें।

इस प्रकार महाशिवरात्रि का यह पूजन है और यह पूजन  
प्रत्येक ग्रहस्थ को स्त्री, पुरुष इत्यादि को सम्पन्न करना ही  
चाहिये। भगवान् शिव ही आयु, वृद्धि, यश, बल, गृह सुख,  
भक्ति एवं मुक्ति प्रदान करने वाले देव हैं, जहां भगवान शिव  
अपने पूरे परिवार सहित विराजमान हैं, वहां कोई अनिष्ट हो  
ही नहीं सकता; क्योंकि शिव आरती में ही स्पष्ट है कि  
सुखकर्ता दुःखहर्ता सुख में शिव रहता, अतः हर  
स्थिति में शिव पूजन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये और  
यदि संभव हो तो प्रत्येक मास के प्रदोष के दिन इस विधान से  
शिव पूजन करना चाहिये।

## आरतीः

पूर्ण भक्तिभाव से भगवान सदाशिव की आरती करें -  
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् ।  
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा ।  
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्वैती धारा ॥१॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

एकाननं चतुराननं पंचाननं राजै ।  
हंसासनं गरुडासनं वृषवाहनं साजै ॥२॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

दो भुज चारू चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।  
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ॥३॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

अक्षमाला वनमाला रूण्डमाला धारी ।  
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ॥४॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाधाम्बर अंगे ।  
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥५॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशुल धर्ता ।  
सुखकर्ता दुःखहर्ता सुख में शिव रहता ॥६॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी ।  
नित उठ जोत जलावत दिन-दिन अधिकारी ॥७॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

त्रिगुणास्वामी की आरति जो कोई नर गावे,  
ज्योरे मन शुद्ध होय जावे, ज्योरे पाप परा जावे,  
ज्योरे सुख संपति आवे, ज्योरे दुःख दारिद्र्य जावे,  
ज्योरे घर लक्ष्मी आवे, भणत भोलानन्द स्वामी,  
रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥८॥  
उँ हर हर हर महादेव ।

# शिव कल्प

## जीवन उपयोगी साधना पर्व



शिव-कल्प - 21 फरवरी 2008 से 21 मार्च 2008

ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान यह मनुष्य जीवन ही है। इस मनुष्य जीवन को आनन्द युक्त जिया जाये और जीवन पूर्ण होने पर परमात्मा में विलीन हो जाएं। इसीलिये भगवान् शिव को प्रार्थना करते हुए कहा गया है -

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वरुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृताय ॥

इसका अर्थ यही है कि मैं आपने जीवन में सुगन्ध युक्त, पुष्टिवर्धक होता हुआ जीवन में पूर्ण आयु प्राप्त कर उसी प्रकार अलग हो जाऊं; जिस प्रकार उक पका हुआ फल पेड़ से अलग हो जाता है और भूमि को नये बीजों को प्रदान कर देता है।

इस प्रकार अच्छे जीवन के तीन भाग हैं 1. रोग रहित जीवन, 2. एस युक्त जीवन, 3. मृत्यु तथा भय से मुक्त जीवन।

जीवन के इन तीन भावों - भागों की पूर्ति देवाधिदेव महादेव की साधना से पूर्ण हो सकती है, भगवान् शिव के विशिष्ट स्वरूपों में रुद्र स्वरूप, एसेश्वर अर्धनारीश्वर त्र्यम्बक स्वरूप और महाकाल स्वरूप प्रमुख हैं, जो साधक आपने जीवन में इन तीनों साधनाओं को निरन्तर सम्पद्ध करना रहता है उसे रोग रहित जीवन, एस युक्त जीवन तथा भय मुक्त जीवन प्राप्त होता है।

पूरा फाल्गुन मास शिव कल्प कहा जाता है, यह कल्प ललिता जयंती की संध्या अर्थात् 21 फरवरी 2008 से माघ मास की पूर्णिमा अर्थात् 21 मार्च 2008 को होलिका दहन (पूर्णिमा) तक है। जिस कल्प में उक पक्ष में शिवरात्रि और दूसरे पक्ष में होली आती है, इस प्रकार पूरा मास आनन्द कल्प से सरोबार हैं। इस कल्प में आधिक से आधिक शिव साधनाएं सम्पद्ध करनी चाहिये। महाशिवरात्रि पर महाआभिषेक तो प्रत्येक साधक को आवश्य सम्पद्ध करना ही है। इसके साथ ही तीन प्रमुख साधनाएं रुद्र प्रयोग, अर्ढनारीश्वर त्र्यम्बक प्रयोग और महाकाल प्रयोग आवश्य सम्पद्ध करें। इसके साथ ही इस त्रिंश कल्प में जीवन की दैनिक आवश्यकताओं और लघु समस्याओं के निदान हेतु विशेष प्रयोग दिये गये हैं। अपनी आवश्यकतानुसार साधक उन्हें श्री आवश्य सम्पद्ध करें।



यथा शरीरं तथा ज्ञानम्  
शरीरहि खलु मोक्ष साधन

जैसा शरीर वैसा ही ज्ञान, शरीर ही मोक्ष  
का साधन है  
खवरथ रोग गुरु त्रीवद हेतु आवश्यक

# रुद्र प्रसादोरा

जीवन की प्रथम आवश्यकता है, मन और तन दोनों ही पूर्ण रूप से स्वस्थ हों। स्वस्थ शरीर से ही हमारे मन की वृत्तियां स्वस्थ होती हैं, स्वस्थ मन से श्रेष्ठ इच्छाओं की उत्पत्ति होती है, श्रेष्ठ इच्छाओं से कार्य शक्ति प्राप्त होती है, और उसी से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

यह धुत्र सत्य है कि स्वस्थ और प्रसन्न व्यक्ति के शरीर में शक्ति स्फूर्ति और बल का प्रवाह तीव्र रहता है और उसी से मन, वचन, कर्म में एकता रहती है। जब तीनों में एकता का सामंजस्य होता है, तो जीवन रोग रहित हो जाता है।

अपने प्रयास से तो मनुष्य निरन्तर प्रयत्न करता है कि उसे स्वस्थ देह और स्वस्थ मन निरन्तर प्राप्त होता रहे, लेकिन जब मनुष्य के प्रयास थक जाते हैं, तो श्रेष्ठ व्यक्ति शक्तिमान परमपिता परमेश्वर शिव से शक्तित्व ग्रहण करते हैं। शिव का रुद्र स्वरूप जीवन में रुदन भाव समाप्त करने का शक्तिमान स्वरूप है। जब मन और शरीर में पीड़ा होती है तो एक मात्र शिव ही अपने रुद्र रूप में उन पीड़ाओं, व्याधियों को समाप्त कर रुदन समाप्त करते हैं, भक्त के चित्त में प्रसन्नता का संचार करते हैं।

इसीलिये रुद्र को सृजनकर्ता और संहारकर्ता कहा गया है। भगवान शिव ही रुद्र रूप में साधक के शरीर और मन की दुर्बलता दूर करते हैं, उसके जीवन के दुःखों का नाश करते हैं, और उसमें शुद्ध भावों का संचार करते हैं। इसीलिये

भगवान रुद्र की प्रार्थना में कहा गया है -

सर्वे वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ।  
युरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः ।  
विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुथा जातं जायमानं च यत् ।  
सर्वे होष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ।

जो रुद्र उमापति हैं, वही सब शरीरों में जीव रूप में प्रविष्ट हुए हैं, उनको हमारा प्रणाम। रुद्र ही पुरुष हैं, वह ब्रह्मलोक में ब्रह्मारूप से, प्रजापतिलोक में प्रजापति के रूप से, सूर्यमण्डल में विराट रूप में तथा देह में जीव रूप से स्थित हुए हैं। उस महान् सच्चिदानन्दस्वरूप रुद्र को बारम्बार नमस्कार।

ॐ अद्योरेभ्योऽथ घोरभ्यो घोरघोरत्तेभ्यः  
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्रस्तेभ्यः ॥

जो अधोर हैं, घोर हैं, घोर से भी घोरतर हैं और जो सर्वसंहारी रुद्ररूप हैं, आपके उन सभी स्वरूपों को मेरा नमस्कार है।

केवल, और केवल महादेव ही अपने रुद्र रूप में मनुष्य के शरीर से रोग का पूर्ण नाश करने में समर्थ हैं। उस रुद्र की आराधना-साधना करना साधक का कर्तव्य है। शिव कल्प में अर्थात् फाल्गुन मास में शिव रुद्र प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाये तो साधक को पूरे वर्ष मन, शरीर में स्वस्थता प्राप्त होती है।

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-2432209 या टेलीफँक्स : 0291-2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अशिम भेजने की जरूरत नहीं है।

डाक व्यव पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

### व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)



सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**  
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यव पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

### व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)



सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**  
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यव पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

### व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)



सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**  
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

### रोग नाशक रुद्र प्रयोग

1. रोगनाश एवं आयु वृद्धि के लिए भगवान् रुद्र की साधना सर्वोपरि है। उसके लिए विशिष्ट सामग्री का होना आवश्यक है, जिससे कि पूर्णरूप से साधना को सम्पन्न किया जा सके। इसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री है - प्राण-प्रतिष्ठा एवं मंत्र-सिद्ध 'ज्योतिर्मय शिवयंत्र', 'रुद्राक्ष' एवं 'रोगनाशक गुटिका'।
2. पूर्व या उन्नर दिशा की ओर मुङ्ह करके बैठें।
3. स्फेद या पाले आसन पर बैठें।
4. प्रातः 5 बजे से 8 बजे के मध्य करें।
5. शिवकल्प के बीच किसी भी सोमवार को।
6. सबसे पहले अपने सामने बाजोट के ऊपर सफेद वस्त्र बिछाकर, किसी थाली में कुंकुम से 'स्वस्तिक' बनाकर शिवयंत्र को स्थापित कर दें व धूप-दीप जला दें।

### ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर भगवान् रुद्र से रोग नाश के लिए, सुख-सौभाग्य प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें -

*ध्यायेद्वित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चास्त्रचन्द्रवतंसं,  
रत्नाकर्त्पोज्जवलांगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसङ्गं।  
पद्मसीनं समन्तात् स्तुतिमरणौव्याघ्रवृत्तिं वसानं,  
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निस्त्रिल भव्यहरं पच्चवक्त्रं त्रिनेत्रं॥*

### आहवान

**ॐ उमामहेश्वराम्भयां नमः आवाहनं समर्पयामि॥**

### आसन

देवता को ब्रिटान के लिए आसन के रूप में पूष्प रखें -

**ॐ उमामहेश्वराम्भयां नमः आसनार्थं पुष्पं समर्पयामि॥**

### स्नान

स्नान के लिए शिवयंत्र पर जल चढ़ायें

**ॐ उमामहेश्वराम्भयां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि॥**

### गंध

चन्दन या कुंकुम लगायें -

**ॐ उमामहेश्वराम्भयां नमः गंधं समर्पयामि॥**

### अक्षत

अक्षत चढ़ायें -

**ॐ उमामहेश्वराम्भयां नमः अक्षतान् समर्पयामि॥**

### पुष्प

पुष्प चढ़ायें -

**ॐ उमामहेश्वराम्भयां नमः पुष्पाणि समर्पयामि॥**

### नैवेद्य

नैवेद्य के ऊपर जल धुमाते हुए रुद्र गायत्री मंत्र बोलें -

**ॐ तत्पर्स्त्रवाय विद्महे महादेवाह धीमहि तत्त्वे रुद्रः  
प्रचोदयात्।**

### भोग

इसके बाद भोग लगायें -

**उमामहेश्वराम्भयां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना  
ऋतुफलानि च समर्पयामि॥**

### क्षमायाचना

भगवान् रुद्र से दोनों हाथ जोड़कर साधना में होने वाली न्यूनताओं के लिए क्षमा-प्रार्थना करें -

*अहोवानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्  
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।  
मंत्रहीनं क्लियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।  
यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तुमे॥*

7. इसके बाद निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करते हुए शिवयंत्र पर जल की धारा चढ़ायें -

### मंत्र

**॥ ॐ सर्वरोगहराय रुद्राय हौं क्रीं फट्॥**

8. शिवयंत्र पर चढ़ाये हुए जल को किसी पात्र में एकत्र कर लें।
9. रुद्राक्ष को मंत्र-जप करने से पूर्व शिवयंत्र पर चढ़ा दें।
10. अगर रोगी स्वयं इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा है, तो रुद्राक्ष को स्वयं धारण करे अथवा जिसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा रहा है, उसे लाल धागे में पहना दें।
11. शिव यंत्र पर चढ़े जल को जिस पात्र में एकत्र किया है, उस पात्र को रोगी के सिर पर तीन बार धुमाकर, उस जल को किसी पवित्र वृक्ष-पीपल, बरगद या बिल्व की जड़ में चढ़ा दें।
12. शिवयंत्र को अपने पूजा कक्ष में सवा माह तक स्थापित रखें, इसके पश्चात् शिवयंत्र, गुटिका एवं रुद्राक्ष को किसी शिव मंदिर में दे दें अथवा नदी या समुद्र में अपनी सुविधानुसार प्रवाहित कर दें।
13. इस प्रयोग को करने वाले स्वाधक को सभी प्रकार के रोग से मुक्ति प्राप्त होती है, एवं इसे स्वस्थ व्यक्ति सम्पन्न करे, तो समस्त रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है।

भय आरांका चिन्ता ही तो मृत्यु है  
मृत्यु तो काल की सीमा है  
काल को जीतने वाले देव महाकाल ही है  
अपने जीवन को इच्छानुकूल बनाइये

# महाकाल प्रथोग

महाकाल स्थय में काल के स्वामी है, जो ब्रह्म हैं, जो स्वर्णसींही  
स्थिर हैं, परन्तु वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को गतिशील करते हैं, संचालित  
करते हैं। काल जो निर्मुक्त, निर्बाध गति से युक्त है, उसे केवल  
महाकाल की साधना के द्वारा ही बांधा जा सकता है।

०००

स्वप्नारोहणि प्रजानां प्रबलभवभयाद् यं नमस्यन्ति देवा  
यश्चिते सम्प्रविष्टोऽप्यवहितमनसां ध्यानमुक्तात्मनां च।  
लोकानामादिदेवः स जयतु भगवाञ्छ्रीमहाकालनामा  
बिभ्राणाः सोमतेर्खामहिवलययुतं व्यक्तलिङ्कं कपातम्॥

०००

प्रजा की सृष्टि करने वाले प्रजापति देव श्री  
प्रबल संसार भय से मुक्त होने के लिये  
डिनहें नमस्कार करते हैं, जो शुद्ध वितवालै  
ध्यानपरायण अतीतों के हृदय में सुख पूर्वक  
विनाड़मान होते हैं, और चण्ड्रमा की काल  
सर्पों की कङ्कण तथा व्यक्त चिठ्ठ वाले  
कपाल की धारण करते हैं, सम्पूर्ण लौकों के  
आदिदेव भगवान् महाकाल मेरी रक्षा करें।

'काल' शब्द अपने आप में गहरा अर्थ लिये हुए है। एक ओर जहां काल का अर्थ समय है, वही दूसरी ओर काल का अर्थ मृत्यु है। ये दोनों ही स्थितियां मनुष्य के हाथ में नहीं रहती। न तो वह समय को अपने अनुसार अनुकूल कर सकता है और न ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है। जो व्यक्ति समय को अपने अनुकूल नहीं कर सकता वह सदैव जीवन में पराजित होता है और परिस्थितियों के अनुसार जीवन को ढोता रहता है। इसी प्रकार, जो मनुष्य काल अर्थात् मृत्यु के भय से सदैव आशंकित रहता है, उसका जीवन भी चिन्ता, सन्देह, रोग, दुष्कृति से युक्त रहता है और वह क्षण काल के जबड़े में ही रहता है।

प्रश्न उठता है, कि काल अर्थात् समय, और काल अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिये मनुष्य क्या करे? उसके अपने साधन तो सीमित हैं, उसकी विचार शक्ति भी सीमित है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु की सीमा काल में बंधी होती है, किन्तु काल को सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता, वह असीमित होता है और जो असीमित है, वही अनन्त है, वही सृष्टि का आदि और सृष्टिकर्ता है, जिसके साक्ष्य में सृष्टि उत्पन्न और समाप्त होती है। काल की गति में अनन्त शक्तियां उत्पन्न होती हैं और अन्ततः उसी काल में विलीन हो जाती हैं। समस्त

देवी-देवता काल से बंधे हुए हैं। काल से जहां समस्त देवी-देवता प्रतिबंधित हैं, समस्त गति उसके अनुसार है, उस काल के देव महाकाल हैं, जिनकी साधना सम्पन्न कर साधक काल की गति को समझने में समर्थ हो सकता है।

महाकाल साधना सम्पन्न करने के उपरान्त व्यक्ति न सिर्फ अकाल मृत्यु से बचता है अपितु अपने समय के श्रेष्ठतम तथा सौभाग्यशाली व्यक्तियों में से एक व्यक्ति बनता है। इसके परिणामस्वरूप उसे अपने जीवन के सभी विरोधात्मक परिस्थितियों में विजय प्राप्त होती है। उसे यश, सम्मान, प्रतिष्ठा उसके विरोधी भी प्रदान करते ही हैं।

महाकाल साधना सम्पन्न कर व्यक्ति में सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है, कि वह अपने शत्रुओं को परास्त कर सके। यह साधना सम्पन्न कर वह अपने शत्रुओं के समक्ष ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देता है, कि उसके शत्रुओं, उसके विरोधियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय बन जाती है, उनमें सामर्थ्य नहीं होता, कि वे साधक के विरुद्ध कुछ करने का साहस कर सकें। शत्रु साधक के समक्ष अत्यन्त दयनीय स्थिति में रहने लगते हैं और वे जितना भी साधक के अनिष्ट के बारे में सोचते हैं, उनका स्वयं का ही उत्तना अनिष्ट हो जाता है।

#### साधना विधान

इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री है - 'महाकाल यंत्र', 'मृत्युञ्जय गुटिका' तथा 'हकीक माला'।

यह साधना शिवकल्प में अर्थात् 21 फरवरी 2008 से 21 मार्च 2008, होली तक किसी भी सोमवार के दिन अवश्य सम्पन्न करें।

साधक सफेद वस्त्र धारण करें तथा माथे पर त्रिपुण्ड लगाकर यह साधना सम्पन्न करें।

लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर रक्त चन्दन से अष्टदल कमल बना कर 'महाकाल यंत्र' स्थापित करें।

यंत्र का पूजन अष्टगंध, पूष्प, अक्षत, धूप व दीप से करें। 'मृत्युञ्जय गुटिका' को पूष्प आसन बनाकर स्थापित करें तथा उसका भी पूजन करें।

महाकाल का ध्यान करें -

देवाधिदेवं करात्मं प्रसङ्गं,  
कल्पोज्ज्वलांगं सदाभावगम्यं,



प्रणम्यं सदैव महाकाल चिन्त्यम् ॥

'हकीक माला' के सुमेरू पर चंदन या कुंकुम लगा कर पूजन करें, फिर उसी माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ उँ हौं हौं हूं हूं महाकालाय फट् ॥

तीन सोमवार तक यह साधना सम्पन्न करें और उसके पश्चात् नित्य 51 बार इस मंत्र का जप करना है।

अनुष्ठान की पूर्णता के पश्चात् यंत्र को नदी या सरोवर के जल में प्रवाहित कर दें तथा मृत्युञ्जय गुटिका को काले धागे में बांधकर गले में पहन लें। जब भी यह मंत्र जप करें, इसी 'महाकाल सिद्धि हकीक माला' से करें।

वास्तव में इस साधना से देह में एक तेजस्विता और परिवर्तन आने लगता है, बाधाएं सामान्य प्रतीत होने लगती हैं तथा संकल्प शक्ति दृढ़ हो जाने के कारण जिस कार्य का संकल्प लेते हैं, वह कार्य अवश्य ही पूर्ण होता है और निश्चित रूप से शत्रु बाधा समाप्त होती है।

जीवन, शिव और शक्ति का मिलान है  
लद्धाशिव अर्धनारीश्वर स्वरूप में लालसत द्वर्षण हैं  
जीवन में पूर्ण लाला, आनन्द हेतु

## शिव कृष्णलुक उज्ज्ञापन

भगवान् सदाशिव का पूजन गृहस्थ लोग अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में इसीलिये करते हैं क्योंकि यह उनका सर्वोत्तम गृहस्थ स्वरूप है, जहां वे एक ही स्वरूप में, अर्द्धमार्ग में पुरुष स्वरूप और अर्द्धमार्ग में नारी स्वरूप हैं। इसी स्वरूप के लिये उन्हें ऋम्बक कहा जाता है अर्थात् वे शिव, जो सदैव अम्बा रूपी शक्ति के साथ संयुक्त हैं और सृष्टि का निरन्तर संचालन करते रहते हैं।

सृष्टि और जीवन का पूरा स्वरूप दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम स्वरूप पुरुष स्वरूप और दूसरा स्वरूप स्त्री स्वरूप है, जिसे सामान्य भाषा में नर तथा मादा स्वरूप कहा जाता है। इन्हीं दो तत्वों के मिलन से जीवन की रचना होती है। जहां भी एक पक्ष अधूरा रहता है वहां निर्माण नहीं

हो सकता, इसीलिये स्त्री और पुरुष को एक दूसरे का पूरक कहा गया है। जीवन का आधार धर्म, धर्म का आधार काम, काम का आधार स्त्री-पुरुष का मिलन ही है।

भगवान् शिव के स्वरूप शिवलिंग में भी लिंग और योनि का मिलन है, जो कि सृष्टि के पूरे स्वरूप को दर्शाता है। पुरुष स्वरूप में, जहां मानव-व्यवहार में शौर्य, बल, क्रोध, तेज, साहस इत्यादि गुण हैं, वहां स्त्री स्वरूप में कोमलता, सरसता, निर्मलता, सौन्दर्य इत्यादि तत्व हैं। भगवान् शिव को ही सृष्टि का प्रथम पुरुष माना गया है, जिन्होंने अपने साथ हर समय शक्ति को संयुक्त रखा। शिव के बिना शक्ति अधूरी है और शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं, और जहां शिव शक्ति का मिलन है, वहां जीवन है। जिस प्रकार वृक्ष में तना पुरुष स्वरूप है, पत्ते और उसमें स्थित जल तत्व स्त्री स्वरूप है, उसी प्रकार मनुष्य में ऊपर दिये गये गुण पुरुष और स्त्री स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

शिव और शक्ति मिल कर ही पूर्ण बनते हैं। शक्ति 'इकार' की द्योतक है, इसलिए शिव में से 'इकार' अर्थात् शक्ति हृषी की जाय तो पीछे 'शब' ही रहता है, अतः शक्ति की सायुज्यता से ही 'शब' पूर्ण रूपेण शिव कहलाते हैं, और यही इनका अर्धनारीश्वर रूप है।

शैव दर्शन के अनुसार यह रूप ब्रह्म और आत्मा का समन्वित रूप है, जो द्वैतवाद का सूचक है। इस अर्धनारीश्वर रूप में

शिव का आधा दायां भाग पुरुष का, एवं आधा बाया भाग पार्वती का है। शिव वाले भाग में सिर पर जटाजूट, सर्पमाला, सर्पयज्ञोपवीत सर्पकुण्डल, बाघाम्बर, त्रिशूल आदि हैं जबकि पार्वती वाले भाग में सिर पर मुकुट, कुण्डल, सुन्दर वस्त्र, रम्य आभूषण, केयूर-मेखला, ककण आदि हैं, इस प्रकार का रूप ही रम्य तथा शिव शक्ति का समन्वित स्वरूप है।

इसीलिये ऋम्बक साधना प्रत्येक गृहस्थ एवं युवक-युवती को करनी चाहिए, जिससे उनके जीवन में पूर्ण सरसता और दृढ़ता आ सके। कन्याओं द्वारा ऋम्बक साधना करने से उन्हें श्रेष्ठ वर की प्राप्ति होती है, वहां युवकों को भी मनोवांछित, अनुकूल कन्या की प्राप्ति होती है। गृहस्थ व्यक्तियों द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने से उन्हें अपने जीवन में निरन्तर उमंग, आनन्द, जोश, बल, बुद्धि प्राप्त होते रहते हैं, जिससे

जीवन भार नहीं लग कर एक आनन्द यात्रा लगती है, जिसमें पति-पत्नी समान रूप से शिव पार्वती की तरह सहयोगी हैं।

### शिव ऋष्म्बक अनुष्ठान

भगवान शिव का एक नाम ऋष्म्बक है, उनके इस स्वरूप की साधना करने से साधक अपने जीवन में पापों से तो मुक्त होता ही है, साथ ही साथ रक्षा, श्री, कीर्ति, कान्ति हेतु इसे श्रेष्ठतम प्रयोग माना जाता है। राज्योन्नति अर्थात् राज्यलक्ष्मी एव यश प्राप्ति का भी यही श्रेष्ठतम उपाय है।

यह साधना साधक किसी भी सोमवार को प्रातः प्रारम्भ कर, स्कृता है, लेकिन शिव साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी पालना आवश्यक है। उन्हें साधक ध्यान से पढ़ें और भगवान शिव का कोई भी प्रयोग करते समय इन बातों को ध्यान में रखें -

- ◆ शिव पूजा स्नान करके ही सम्पन्न की जाती है, शिव पूजन से पहले गणपति पूजन अनिवार्य है।
- ◆ शिव पूजन में साधक उत्तर की ओर मुह करें और अपने सामने ही शिवलिंग इत्यादि यंत्र, मूर्ति स्थापित करें, इसके अलावा अन्य सभी दिशाएं वर्जित हैं।
- ◆ साधक गले में रुद्राक्ष माला पहनें और अपने सिर पर त्रिपुण्ड अवश्य लगावें।
- ◆ बिल्व-पत्र शुद्ध एवं ताजे, परन्तु कटे-फटे न हों। पुष्प सुगन्धित हों, बिना सुगन्ध के पुष्प का प्रयोग न करें।
- ◆ गणेश जी को तुलसीदल और मां पार्वती को दूर्वा नहीं चढ़ावें।
- ◆ पत्र, पुष्प, फल आदि का मुंह नीचे करके नहीं चढ़ावें, बिल्वपत्र डंठल तोड़ कर उल्टे करके चढ़ावें। भगवान शंकर को कमल, गुलाब, कनेर, सफेद आक (मदार) तथा धूरा सबसे अधिक प्रिय है।
- ◆ शिव की परिक्रमा आधी की जाती है, भूल कर भी शिव की पूरी परिक्रमा न करें।
- ◆ शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए, पर नारियल स्थापित करें तथा कलश पूजन सम्पन्न करें। इस अपितु उनके सामने चढ़ाया हुआ फल, प्रसाद जो भी हो कलश को अपने दाहिनी ओर स्थापित करें। अब दो पात्र लें।



वही ग्रहण करें, अतः साधक शिवलिंग पर केवल दुग्ध धारा, बिल्वपत्र के अतिरिक्त कोई भी पदार्थ न चढ़ावें अपितु शिवलिंग के सामने रखें।

ऋष्म्बक साधना में साधक स्वयं ही बैठें और यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को पूजा में साथ बिठाएं।

इस साधना में 3 वस्तुएं - 1. ऋष्म्बक शिव सिद्धि महायंत्र, 2. शिवलिंग (पारदेश्वर अथवा नमदेश्वर), 3. रुद्र शक्ति बीज आवश्यक है। इसके अतिरिक्त मंत्र जप केवल रुद्राक्ष माला से ही सम्पन्न करें।

सर्वप्रथम श्वेत वस्त्र बिछा कर मध्य में एक तांबे का पात्र रखें और उसमें गणपति मूर्ति स्थापित कर उसका पूजन करें, तत्पश्चात् इसे अपने बाये हाथ की तरफ एक कोने में रख दें और आगे दीपक जला दें। इसके बाद एक कलश लेकर उस

सबसे आगे एक पात्र में शिवलिंग (यदि आपके पास पहले से पारदेशवर अथवा नमदिश्वर शिवलिंग है तो आप उसे ही स्थापित कर पूजन कर सकते हैं) स्थापित करें, दूसरे पात्र में 'शिवन्यम्बक यंत्र' को चावल की ढेरी पर स्थापित करें।

शिवलिंग का पूजन तो आधार पूजन है। साधक शिवलिंग की पूजा दुर्घट मिश्रित जलधारा प्रवाहित करते हुए बिल्वपत्र चढ़ाएं और 108 बार 'ॐ नमः शिवाय' का पाठ करें। जल को, पूजन के पश्चात् परिवार के सभी सदस्य नेत्रों, मस्तक तथा कंठ के स्पर्श करावें।

इसके पश्चात् साधक हाथ में जल लेकर विनियोग सम्पन्न करें।

#### विनियोग

ॐ अस्य त्र्यम्बकमत्रस्य वशिष्ठं त्र्यष्टिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बकपार्वती देवता, त्र्यं वीजम्, वं शक्तिः, कं कीलकम्, सर्वेष्टसिद्धर्थं जये विनियोगः ।

अब दूसरे पात्र में स्थापित शिव न्यम्बक यंत्र का पूजन प्रारम्भ करें। ऊपर जो दिये गये नियम हैं, उन्हीं के अनुसार पुष्प, फल इत्यादि से पूजन करें। इस शक्ति पूजन में चार चक्र का पूजन है। ये चारों चक्र गोलाकार रूप में शिव न्यम्बक यंत्र के चारों ओर चावल की ढेरी बनाकर उस पर रुद्र बीज मंत्र पढ़ते हुए रखें।

1. ॐ वामायै नमः, 2. ॐ ज्येष्ठायै नमः, 3. ॐ रोद्रायै नमः, 4. ॐ कात्यै नमः, 5. ॐ कलविकरिण्यै नमः, 6. ॐ बलविकरिण्यै नमः, 7. ॐ बलग्रमथिन्यै नमः, 8. ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः, 9. ॐ मनोनमन्यै नमः ।

शक्ति पूजन में एक-एक पुष्प पंखुड़ी तथा एक एक सुपारी, 'रुद्र बीज' स्थापित कर रखनी है, प्रत्येक पर चन्दन का तिलक करना है।

अब साधक 'शिव न्यम्बक यंत्र' की पूजा सम्पन्न करें। इस पूजा में भी चन्दन, धी, दूध, दही, शक्कर, शहद, मिश्री, पंचामृत, बिल्व पत्र पुष्प दुर्घट के नैवेद्य से करना है। शुद्ध धी का दीपक अवश्य ही पूजन के प्रारम्भ में जला दें। अब अपने गले में धारण रुद्राक्ष माला से निम्न मूल मंत्र का पाठ प्रारम्भ करें -

#### शिव न्यम्बक मंत्र

ॐ हौं जूं सः त्र्यम्बकं यज्ञामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वास्त्रकमिव बन्धान्मृत्योर्मुक्षीय मामृताय सः जूं हौं ॐ ॥

इस मंत्र का जप 5 माला तो करना ही है, साधना में सिद्धि के लिए पुरश्चरण में एक लाख मंत्र का विधान है, अतः साधक हर सोमवार को यह विशेष पूजन विधान सम्पन्न कर सकता है। जब एक लाख मंत्र जप हो जाये तो साधक यज्ञ सम्पन्न करे। यज्ञ में अलग-अलग इच्छाओं की पूर्ति हेतु अलग-अलग सामग्री का विधान है। मूल रूप से दस वस्तुएं-बेल, फल, तिल, खीर, धी, दूध, दही, दूर्वा, वटवृक्ष की लकड़ी, तथा खैर की लकड़ी धी में डुबो कर होम करना चाहिए। ब्रह्मसिद्धि तेज हेतु पलास की समिधाओं (लकड़ी) से होम, कांति एवं पुष्टि के लिए खैर की समिधाओं से होम, तिल की आहुति से पाप मुक्ति तथा अकाल मृत्यु और शत्रु पर विजय हेतु पीली सरसों से आहुति, दूर्वा के होम से समस्त व्याधियों से मुक्ति प्राप्त होती है। यहां तक लिखा गया है कि जो साधक प्रति दिन प्रातः स्नान कर सूर्य के समक्ष इस त्र्यम्बक मंत्र का एक सौ आठ जप कर लेता है और यह कार्य प्रतिदिन सम्पन्न करता है तो वह शारीरिक एवं मानसिक रोगों से विमुक्त होकर इस मंत्र के प्रभाव से अपनी समस्त कामनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है।

शिव साधना में एक से एक अनोखे प्रयोग हैं, क्योंकि शिव ही तो मंत्र दाता और तन्त्र रचयिता है।

शिव न्यम्बक यंत्र - 240/-

#### द्वादश ज्योतिलिंग

केदारनाथज्योतिलिंग - केदारनाथ

विश्वनाथज्योतिलिंग - वाराणसी

सोमनाथज्योतिलिंग - वैरावल (राजकोट),

महाकालेश्वरज्योतिलिंग - उज्जैन, मध्यप्रदेश

ॐकारेश्वरज्योतिलिंग - शिवपुरी, मध्यप्रदेश

रामेश्वरमज्योतिलिंग - रामेश्वरम् (मदुरै)

मलिलिकार्जुनज्योतिलिंग - सैरीसेलम, आंध्रप्रदेश

त्र्यम्बकेश्वरज्योतिलिंग - नासिक

भीमाशंकरज्योतिलिंग - पुणे

नागेश्वरज्योतिलिंग - गुजरात

वैद्यनाथज्योतिलिंग (विद्यानाथ) - देवगढ़, विहार

घूर्ष्मेश्वरज्योतिलिंग - औरंगाबाद, महाराष्ट्र

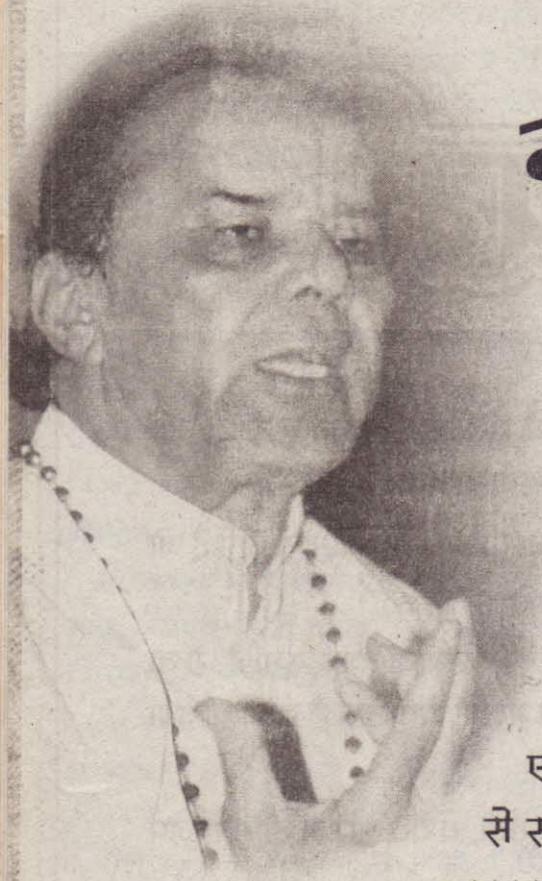
# शिव्याधर्म

- ❖ जो व्यक्ति स्वयं का सम्मान करता है, वही मात्र दूसरों से सुरक्षित है, क्योंकि उसने एक ऐसा अभेद्य कवच ओढ़ रखा है, जिसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकता।
- ❖ गुरु क्या करते हैं, इस बात पर शिव्या को ध्यान नहीं होना चाहिए। श्रेष्ठ शिव्या वही है जो कि गुरु कहते हैं; वह करे।
- ❖ जो कुछ करते हैं, गुरु करते हैं, यह सब क्रिया कलाप उन्हीं की माया का हिस्सा है, मैं तो मात्र उनका दास, एक निमित्त मात्र हूं, जो यह भाव अपने मन में रख लेता है वह शिव्यता के उच्चतम सोपानों को प्राप्त कर लेता है।
- ❖ गुरु से बढ़कर न शास्त्र है न तपस्या, गुरु से बढ़कर न देवी, व देव और न ही मंत्र, जप या मोक्ष। एक मात्र गुरुदेव ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

**क गुरोरधिकं न गुरोरधि के क गुरोरधिकं न गुरोरधिक  
शिव शासनतः शिव शासनतः शिवन् शासनतः, शिव शासनतः**

- ❖ जो इस वाक्य को अपने मन में बिठा लेता है, तो वह अपने आप ही शिव्य शिरोमणि बन कर गुरुदेव का अत्यंत प्रिय हो जाता है। गुरु जो भी आज्ञा देते हैं, उसके पीछे कोई रहस्य अवश्य होता है। अतः शिव्या को बिना किसी संशय के गुरु की आज्ञा का पूर्ण तत्परता से, अविलम्ब पालन करना चाहिए, क्योंकि शिव्या इस जीवन में वर्यों आया है, इस युग में वर्यों जन्मा है, वह इस पृथ्वी पर क्या कर सकता है, इस सबका ज्ञान केवल गुरु ही करा सकता है।
- ❖ शिव्या को न तो गुरु-निंदा करनी चाहिए और न ही निंदा सुननी चाहिए। यदि कोई गुरु की निंदा करता है तो शिव्या को चाहिए कि या तो अपने वाब्दल अथवा सामर्थ्य से उसको परास्त कर दे, अथवा यदि वह ऐसा न कर सके, तो उसे ऐसे लोगों की संगति त्याग देनी चाहिए। गुरु-निंदा सुन लेना भी उतना ही दोषपूर्ण है, जितना कि गुरु निंदा करना।
- ❖ गुरु की कृपा से आत्मा में प्रकाश संभव है। यहीं वेदों में भी कहा है, यहीं समस्त उपनिषदों का सार निचोड़ है। शिव्या वह है, जो गुरु के बताए मार्ग पर चलकर उनसे दीक्षा लाभ लेकर अपने जीवन में चारों पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करता है।

# गुरुकृत्यापनी



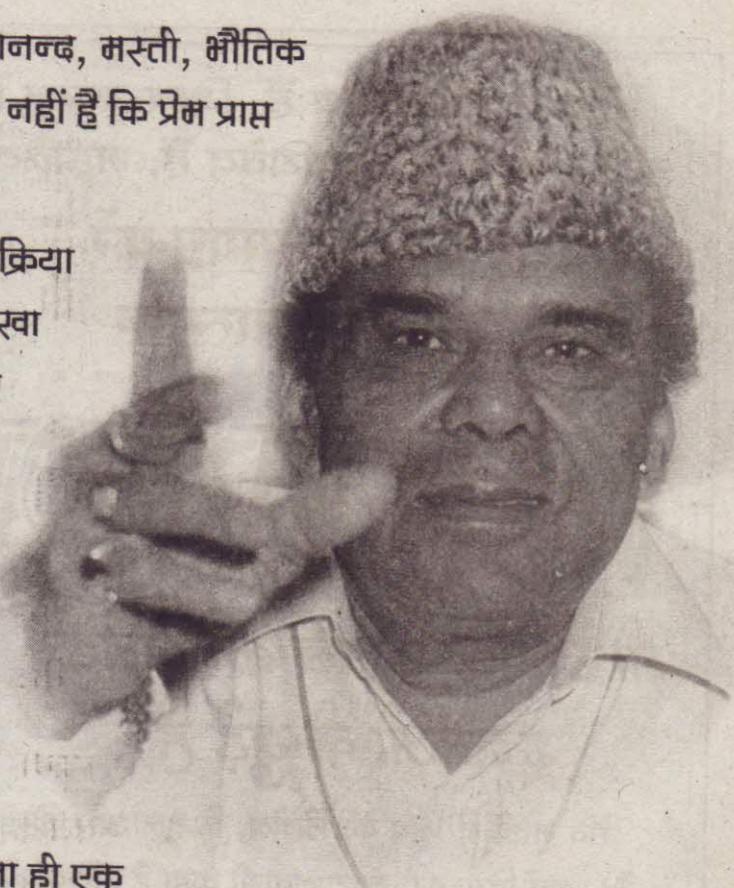
★ अपने से विराट बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मनुष्य से देवता की क्रिया केवल गुरु जानता है, मूलाधार से सहस्रार तक पहुंचाने की विद्या केवल गुरु जानता है। इसीलिए जीवन का आधार केवल गुरु है।

★ प्रेम भगवान और भक्त का आंतरिक सम्बन्ध है, एक पूर्ण हृदय का हृदय से सम्बन्ध है, प्राणों का, प्राणों से सम्बन्ध है, उसमें वासना नहीं है। गुरु या ईश्वर से एकाकार होने के लिए मन में प्रेम का बीज बोना पड़ता है।

★ शिष्य यदि सच्चे हृदय से पुकार करे तो ऐसा होता ही नहीं कि उसका स्वर सद्गुरु तक न पहुंचे। उसकी आवाज गुरु तक पहुंचती ही है, इसमें कभी संदेह नहीं होना चाहिए।

★ ध्यान लगाने से आत्मा परमात्मा में लीन नहीं हो सकती, मंत्र जप से भी ऐसा संभव नहीं, क्योंकि आत्मा का परमात्मा तक पहुंचने का जो रास्ता है वह वेदना का है, तड़फ का है, विरह का है, प्रेम के सागर में झूब जाने का है, तो ही जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

- ☆ ज्ञान, चेतना, सुख, सौभाग्य, आनन्द, मर्स्ती, भौतिक सफलता, मगर तब भी यह जरूरी नहीं है कि प्रेम प्राप्त हो।
- ☆ मैं तुम्हें समुद्र में छलांग लगाने की क्रिया सिरवा रहा हूँ। मैं तुम्हें वह क्रिया सिरवा रहा हूँ कि तुम आत्म साक्षात्कार कर सको, यहीं प्रेम की पूर्णता है।
- ☆ यदि चारों वेदों का अर्थ स्पष्ट करन् तो चारों का सारभूत तथ्य एक ही है कि जीवन का प्रारंभ प्रेम है और जीवन का अंत भी प्रेम ही है।
- ☆ प्रेम की गहराई में उतरने का अपना ही एक आनन्द है, अपना ही एक अलौकिक सौन्दर्य है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति प्रेम में झूँकता है, उसके चेहरे की तेजस्विता बढ़ती जाती है।
- ☆ जिस क्षण गुरु यह निश्चय कर लेता है कि अब मुझे इस शिष्य को उठाकर परम अवस्था तक पहुंचा देना है तो फिर भले ही शिष्य में कितने ही विकार हों, गुरु सीधे उसे ध्यान के महासागर में उतार देता है; परंतु इसके लिए आवश्यक है, कि गुरु से पूर्ण प्रेम हो।



शिव ही भोलेनाथ हैं, शिव शम्भु हैं  
ओढ़रदानी हैं, देवाधिदेव हैं, महादेव हैं

**शिव कल्प में सम्पन्न करें**

**एकादश तंत्रात्मक**

# शिव प्रयोग

जो आपके जीवन की धैर्यिक  
इच्छाओं की जुड़े हैं



शिव भक्तों में शिव का त्रिनेत्र, त्रिशूल और मुण्डमाला धारण किया हुआ रूप सर्वाधिक प्रिय है। उन्हें दिगम्बर, श्मशानवासी कहा है। शिव को अर्धनारीश्वर, मद्दनजित् और भस्मकारी भी कहा है। शिव के त्रिनेत्र, त्रिकाल अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान ज्ञान के बोधक हैं। तीनों नेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि स्वरूप हैं।

शिव दिगम्बर होते हुए भी भक्तों के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाले हैं और मुक्त हृस्त से ढान करने वाले हैं। शिव श्मशान सेवी होते हुए भी तीनों लोकों के स्वामी हैं, अर्धनारीश्वर होते हुए भी योगीराज हैं, मद्दनजित् होते हुए भी सदा शक्ति-उमा के साथ रहते हैं, भस्मकारी होते हुए भी अनेकानेक रत्नराशियों के अधिपति हैं।

इन्हीं भगवान् सदाशिव की आराधना ने गृहस्थों के लिये एकादश लघु प्रयोग प्रस्तुत-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

यह नितान्त सत्य है, कि जहाँ जीवन में अन्य देवी-देवताओं की साधना-उपासना किसी साधक की अपनी एक माह का, अर्थात् पन्द्रह दिन पूर्व से पन्द्रह दिन पश्चात् भावविह्वलता अथवा किसी एक सिद्धि तक ही सीमित होती तक का पर्व होता है, जिसमें साधक न केवल भगवान् है, वहीं भगवान् शिव की साधना जीवन की एक अनिवार्यता शिव से सम्बन्धित किसी भी साधना को, वरन् तांत्रोक्त होती है। बिना शिवत्व को आत्मसात् किए कोई भी जीव न प्रकृति की साधना को सम्पन्न कर वही फल प्राप्त कर ता इहलोक संवार सकता है और न ही परलोक, क्योंकि वे सकता है, जो उसे महाशिवरात्रि की रात्रि में सम्पन्न करने भगवान् शिव हैं जो एक सम की स्थिति में आरूढ़ होते पर मिलता है, या दूसरे शब्दों में इस माह का समय हुए, अपने दक्षिण हस्त के द्वारा वर मुद्रा अर्थात् मानोवांछित पूर्णरूपेण तंत्रमय, शिवमय होता है।

वस्तु की प्राप्ति का आशीर्वाद प्रदान करते हुए, मानो जीव को आश्वस्त करना चाहते हैं, कि इस जगत् से आगे की गति में भी उसे कोई भय व्याप्त नहीं होगा। यहाँ प्रस्तुत तंत्रमय प्रयोगों को साधक शिव कल्प में अर्थात् 21 फरवरी 2008 से 21 मार्च 2008 के मध्य अपनी सुविधानुसार कभी भी सम्पन्न कर सकता है।

## 1. सर्वमनोकामना पूर्ति हेतु

हर किसी की इच्छा होती है, कि उसके हर कार्य पूरे हों, उसके लिए वह जगह-जगह मंदिर में चक्कर लगाता है, मन्त्रों करता है, कि मेरी यह मनोकामना पूरी होगी, तो यहां पर ऐसा कार्य करूँगा, पर हर किसी की मनोकामना पूरी नहीं होती, उसकी इच्छा दिल की दिल में दबी रहती है, इसलिए यदि शुद्ध मन से भगवान् शिव का ध्यान किया जाए, तो आपकी जो भी मनोकामना हो, वह शीघ्र ही पूरी होती है।

मनोकामना की पूर्ति के लिए यह उत्तम प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर आप अपनी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूरी कर सकते हैं।

प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने पूजा कक्ष में बैठें थाली पर कुंकुम से त्रिशूल बनाएं और उस पर 'बिल्व पत्र' स्थापित करें। उस का पूजन अष्टगंध से करें तथा धी का दीपक लगाकर उसको देखते हुए भगवान् शिव का ध्यान करें और निम्न मंत्र का नियमित 11 दिन तक जप 21 बार करें -

मंत्र

**॥ॐ सं महादेवाय मन्त्रोवाञ्छितं सिद्धये उ॒३ नमः ॥**

मंत्र जप समाप्ति के बाद बिल्व पत्र को शिव मंदिर में रख दें या नदी में प्रवाहित कर दें।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

## 2. भगवान् शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए

भगवान् शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए यह शीघ्र फल देने वाला प्रयोग है। अपने पूजा कक्ष में लाल वस्त्र का आसन बिछाकर, किसी पात्र में लाल पुष्प रखकर 'मधुरुपेण रुद्राक्ष' को स्थापित करें। धी का दीपक लगाकर पंचमुखी रुद्राक्ष का पूजन करें तथा निम्न मंत्र का जप 21 बार 11 दिन तक नित्य करें -

मंत्र

**॥ॐ रं रुद्राय शिवाय सर्वभद्राय उ॒३ नमः ॥**

ज्यारह दिन के पश्चात् मधुरुपेण रुद्राक्ष को धारण कर लें। सवा माह बाद उसे किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 80/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

## 3. यदि आप सौन्दर्यवान् बने रहना चाहते हों -

हर किसी का सपना होता है, कि वह सबसे सुन्दर दिखे परिवार भी परेशान रहता है, इस प्रकार के रोग से बचने के और लोग उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करें, पर वह लाख लिए आप अवश्य यह प्रयोग करें -



मंत्र

**॥ॐ सं सौन्दर्यं साधय शिवाय नमः ॥**

मंत्र जप समाप्ति के बाद सौन्दर्या को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

## 4. रोग निवारण हेतु

आप किसी बीमारी से ग्रस्त हैं, इलाज कराने पर भी वह बीमारी जड़ से खत्म नहीं हो रही है और उसके कारण पूरा परिवार भी परेशान रहता है, इस प्रकार के रोग से बचने के लिए आप अवश्य यह प्रयोग करें -

किसी पात्र में ‘महामृत्युञ्जय यंत्र’ स्थापित कर उसके साधना में सफलता नहीं मिलती है। इसलिए आप एक बार समक्ष धी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का जप 51 बार 11 इस विशेष प्रयोग को अवश्य ही करें।

दिन तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ हौं जूं सः मृत्युञ्जयाय फट् ॥

मंत्र जप के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-



## 5. विद्या प्राप्ति के लिए

भगवान शिव का ध्यान करते हुए अपने पूजा कक्ष में किसी पात्र में ‘शिव विद्याप्रद यंत्र’ स्थापित कर उसका पूजन करें और उसके समक्ष देखते हुए मून ही मन 35 मिनट तक निम्न मंत्र का जप 15 दिन तक करें -

मंत्र

॥ॐ भवाय विद्यां देहि देहि उ॒॑॑ नमः ॥

मंत्र जप समाप्ति के बाद शिव विद्याप्रद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 80/-



## 6. साधनाओं में सफलता के लिए

आप हर बार साधना करते हैं, लेकिन सफलता आपके हाथ नहीं लगती। आप हर बार प्रयास करते हैं फिर भी सफल नहीं हो पाते हैं, इसके कारण आप परेशान रहते हैं, कि मैं इस साधना में सफलता क्यों नहीं पा रहा हूं। कभी-कभी आपके पूर्व जन्म के दोष भी होते हैं जिनकी वजह से आपको

यह बात सत्य है, कि बिना कुछ खोए कुछ भी प्राप्त नहीं होता। यदि आप कुछ खोने को तैयार ही नहीं हैं, जब आप अपने जीवन का समय साधनाओं में लगाने के लिए उदात नहीं हैं, तब आप कैसे इस दुर्लभ ज्ञान और इसके सुपरिणामों को प्राप्त कर सकेंगे?

एक बार आप अपने जीवन का कुछ समय टैलोंज के रूप में लगा कर देखिए, आप सही अर्थों में वह निधि प्राप्त कर लेंगे, जो आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पूर्ण राजयोग कारक होगी।

-पूज्य गुरुदेव अमृत वचन-

सर्वप्रथम भगवान शिव का ध्यान कर उनके चित्र के समक्ष पांच बिल्व-पत्र चढ़ाएं और फिर किसी पात्र में शिव सिद्धिप्रदा स्थापित कर उसका पूजन करें और फिर प्रार्थना करते हुए कहें - मैं यह साधना कर रहा हूं, इसमें सफलता नहीं मिल रही है। आप कृपा कर सफलता प्रदान करें।

इस प्रकार बोलते हुए 25 मिनट तक ध्यान लगाएं, इस प्रकार यह 11 दिन तक करें, जिससे कि आप जो भी साधना कर रहे हैं, उसमें भगवान शिव की कृपा से आपको सफलता मिले।

साधना सामग्री - 90/-



## 7. क्या अकाल मृत्यु का योग बन रहा है?

असमय मृत्यु का योग यदि बन रहा है, या रोग के कारण स्वास्थ्य इतना ढल गया है, कि व्यक्ति मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा है, तो यह प्रयोग एक बार अवश्य ही करें -

किसी पात्र में ‘शिव शक्ति माला’ को स्थापित कर उसका पूजन करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए उसके ऊपर 21 बिल्व पत्र चढ़ाते हुए यह मंत्र बोलें -

मंत्र

॥ॐ हौं मृत्युं विद्यर्थ अकालपुरुषाय फट् ॥

इस क्रम समाप्ति के बाद में ‘शिव शक्ति माला’ को उस व्यक्ति को पहना दें और फिर 5 दिन तक मन ही मन इस मंत्र का जप 20 मिनट तक नित्य करें।

साधना सामग्री - 150/-



## 8. शीघ्र विवाह हेतु

उच्च शिक्षित सुन्दर कन्या होने पर भी उसको एक अच्छा वर नहीं मिल पाता है। आज के इस दौर में विवाह भी एक समस्या है और कन्या कितनी भी पढ़ी-लिखी हो, वह अपने पिता पर बोझ स्वरूप बनी रहती है और परिवार के लिए बहुत बड़ी समस्या होती है। विवाह में बाधा, विशेषकर कन्याओं के लिए आती है। शीघ्र विवाह के लिए यह बहुत ही अच्छा प्रयोग है, आप एक बार अवश्य ही करें।

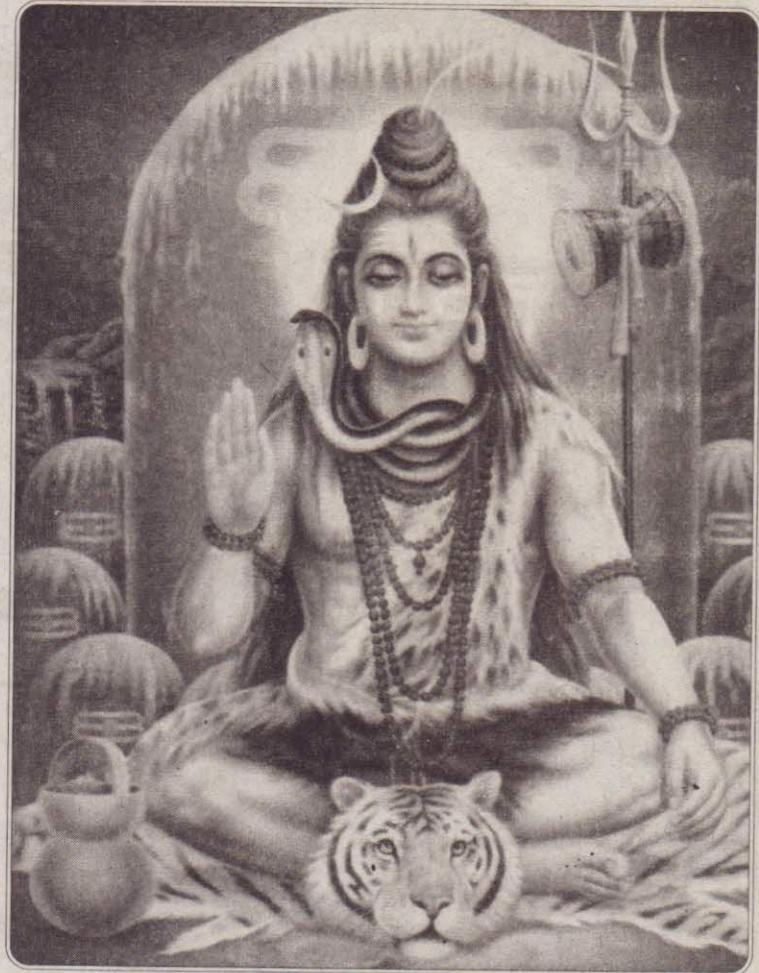
भगवान शिव का ध्यान करते हुए किसी पात्र में ‘शिव गौरी यंत्र’ को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का ‘साफल्य माला’ से 11 माला मंत्र जप करें -

३८

॥ॐ ए हीं श्रीं विवाह बाधा निवारणाय  
भवोदभवाय नमः ॥

मंत्र जप नियमित 31 दिन तक करें और मंत्र जप समाप्ति के बाद ‘साफल्य माला’ को लड़की को पहना दें और यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-



9. पूत्र को सुनार्ग पर लाने के लिए

हर किसी माता पिता का सपना होता है कि उसके घर में एक योग्य पुत्र हो और वह पुत्र के लिए हर दिन मंदिर में भटकते रहते हैं, कई मन्त्रों मांगते हैं, लेकिन फिर भी यदि पुत्र अयोग्य हो, तो इस प्रयोग को एक बार अवश्य ही करें।

सर्वप्रथम् भगवान शिव का ध्यान करते हुए अपने पूजा कक्ष में ‘कात्किय यंत्र’ स्थापित कर उसका पूजन कर भगवान शिव और पार्वती से प्रार्थना करें, कि हमारे घर में भी योग्य पुत्र हो। ऐसा कहते हुए निम्न मंत्र का जप 21 बार 11 दिन तक करें -

৩৪

॥ॐ पुत्रान् देहि पशुपतये ॐ नमः ॥

मंत्र जप समाप्ति के बाद 'कातिकिय यंत्र' नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 120/-

### 10. व्यापार वर्ज्जि हेत

अगर किसी को व्यापार में नुकसान या घाटा हो रहा हो और वह प्रयत्न करने पर भी उसे पूरा नहीं कर पा रहा हो, कर्ज में निरन्तर डूबता जा रहा हो, तो इस प्रयोग को अवश्य ही करें।

किसी पात्र में 'शिव ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र' स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का जप 11 बार 11 दिन तक करें -

३

॥ॐ वं व्यापारं वर्धय शिवाय नमः ॥

मंत्र जप समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 120/-

३८

॥३५ गहस्थ सख सिद्धये रुद्राय नमः ॥

जप समाप्ति के बाद यंत्र को शिव मंदिर में चढ़ा दें जिससे, कि शिव कपा से जीवन सखी रहेगा।

साधना सामग्री - 120/-

यौवन-उल्लास-रति-काम-अनंग

# आया है बस्ता पर्व

आपके मन को इकड़ोरने  
प्रकृति को नये रूप से निहारने  
आनन्द-मद में जीवन नहलाने  
मन की इच्छाओं को पूर्ण करने

काल का चक्र अपनी नियत गति से सतत् गतिशील रहता है और प्रदर्शित करता रहता है, क्रतुओं के माध्यम से अपनी कलाएं। कभी सूख कर दरकने-दरकने को हो जाती धरती, तो कभी उसे रिमिश्म फुहारों से भिगो कर मनाने की चेष्टा करते काल देवता स्वयं, कभी शरद की कुनकुनी धूप, तो कभी घने कुहरे में किसी उदास मन सी उलझी-उलझी यह धरती! मानो जो कुछ मानव के मन में चल रहा है वही प्रकृति में भी प्रतिबिम्बित हो रहा है, ऐसा

कहना अनायास नहीं है। अनायास होता तो क्यों पुरुष व प्रकृति के तादात्म्य की धारणा बनती? मानव जीवन की ही तरह प्रकृति के भी उतार-चढ़ावों के साथ काल, पता नहीं किस अव्यक्त लक्ष्य के प्रति सतत् गतिशील बना रहता है, लेकिन इन्हीं सब के मध्य में एक ऐसा भी अवसर आ जाता है जब केवल प्रकृति ही नहीं मनुष्य खुद भी अपने उनीदेपन को छोड़ कुछ अचम्भित हो, अपने नेत्रों को विस्फारित करते हुए देखने लंग जाता है, कि अचानक यह चारों ओर क्या घटित हो गया है? या यों कहें कि वह बस अपने दो नेत्रों से ही नहीं, रोम-रोम से, कुछ का कुछ 'और' 'देखने' लंग जाता है, लेकिन वह 'देखना' भर भी कहां होता है? वह तो 'सुनना' भी होता है रोम-रोम को कान बनाकर! उन मादक स्वर लहरियों में, बिखरे गीतों को सुनना, जिन्हें स्वयं प्रकृति ने ही रचा होता है और स्वयं ही गाया भी होता है...

प्रकृति में हर वर्ष वसंत आ सकता है  
तो जीवन में हर वर्ष नवीनता, सौन्दर्य,  
आहलाव, प्रेम, काम और रति आ सकते हैं,  
आवश्यकता केवल इस बात की है कि  
हम मन से हर समय युवा बने रहें  
और स्वागत करें, जीवन के  
प्रत्येक आनन्द-क्षण का।

अपनी पीली आभा के साथ मीलों-मील तक छितरा जाते हैं। ... क्योंकि यह वसंत के पर्व का अवसर होता है, प्रकृति में कुछ विशेष घटित होने के क्षण होते हैं ... सचमुच! कुछ विशेष घटित होने लग भी जाता है, तभी तो कोयल कूक-कूक कर बावरी बन जाती है, भौंरे इठला-इठला कर मधुपान करते हुए भी थक कर गिर नहीं पड़ते, बस नाचते ही रहते हैं। ... नाचने तो लगता है मानव का मन भी, लेकिन उसे नृत्य की वह उन्मुक्त कला नहीं आती, जिसको साध, वह भी प्रकृति की उन्मुक्तता से एकरस हो जाए। नृत्य की कला सीखने के विपरीत मानव ने जो कला सीखी भी है, वह तो मन में उठे नृत्य को दबा देने की ही सीखी है, पर वसंत तो बार-बार, हर वर्ष ही यह कला सिखाने के लिए आता रहा है, आता ही रहेगा, क्योंकि वह तो स्वयं काल का ही संकेत है, कि जीवन एक निश्चित चक्र में बंधा होने के बाद भी जड़ता का पर्याय नहीं हो सकता।

वसंत, माघ के शुक्ल पक्ष की पंचमी का एक दिवस अथवा उस दिवस की कुछ घडियां ही नहीं, परिवर्तन के क्षण होते हैं। परिवर्तन यदि होना होता है तो क्षणों में ही संभव हो जाता है अथवा

कई-कई वर्ष बीत जाने के बाद भी संभव नहीं हो पाता है। क्योंकि यहां किसी गूढ़ विवेचना को स्पष्ट कर, न तो विद्रोह करने की इच्छा है, और न ही पाठकों को किसी बोझिल चर्चा में डुबो देने की, किन्तु यह आवश्यक है कि न केवल वसंत पंचमी; अपितु प्रत्येक पर्व की अन्तर्निहित भावना को समझने का प्रयास किया जाए। साधना के क्षेत्र में उत्तरने के इच्छुक और साधना के माध्यम से अपने जीवन को संवारने के आग्रही गंभीर साधक के लिए यह आवश्यक भी है, क्योंकि जब तक ऐसी विवेचनाएं नहीं हो जातीं, जब तक साधक उसके अनुरूप अपने मानस को नहीं बना लेता, तब तक वह किसी भी साधना में प्रयुक्त किए जाने वाले मंत्रों का तादात्म्य प्रकृति से अर्थात् उस दिवस विशेष की चैतन्यता से संगुम्फित नहीं कर पाता है और इसी संगुफन के समायोजन पर ही तो साधना की सफलता या असफलता टिकी होती है। जो जितनी अधिक तीव्रता से या जितने प्रतिशत में संगुफन को संभव कर लेता है वह सफलता के भी उतने ही प्रतिशत सन्निकट हो जाता है।



क्या साधक उस जड़ वृक्ष से भी गया-गुजरा होता है जो हर वर्ष वसंत में अपना नूतन श्रृंगार कर लेता है? एक प्रकार प्रकट करने की होती है, लेकिन उस पाठशाला में जाकर से हर वर्ष ही अपना कायाकल्प करता रहता है वह प्रकृति वसंत एक पाठशाला होती है, लेकिन उस पाठशाला में जाकर जीवन के पाठों को बुद्धि से नहीं, हृदय से पढ़ा जा सकता है। जो पढ़ लेता है फिर वही उस गुलाब के पुष्प की तरह इठला कर यौवनमय बन, झूल सकता है, जो गुलाब का पुष्प यह जान लेने के बाद भी अपनी सुगंध और रंग को बिखेरता रहता है, कि उसका जीवन अत्यल्प है, कांटों से धिरा है। किसी का आस्तित्व तो उसके रंग बिखरने से ही निश्चित होना है, दूँठ बन कर वर्षों-वर्ष पड़े रहने से नहीं।

**ऊर्जस्वर्तं सुदीप्तत्वं तेजस्वं सुमनोहरम्।  
आह्लादकत्वं माधुर्यं, सौन्दर्यं जीवनोदभवम्॥**

जीवन में हास्य, विनोद, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाना कोई सामान्य सी बात नहीं होती, यह तो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसे प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े योगियों और ऋषि-मुनियों ने कठिन से कठिन तप किये हैं, तब जाकर वे

सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है।

अग्निंद्यं अद्वितीयं च सौन्दर्यं यान्ति निश्चितम्।  
साधनां सौन्दर्यर्थ्याय कांक्षन्त्यपसरेठाय यत्॥

‘निश्चित रूप से साधना के द्वारा अनिन्द्य सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, अप्सराएँ भी सुन्दरतम बनने के लिए सौन्दर्य साधना करती हैं।’

पूर्ण कहलाये और यह दिखा दिया, कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चयी और आत्मविश्वासी हो, तो वह तप व साधना के बल पर क्या कुछ नहीं कर सकता, और जब ऐसा होगा, तो उसके चेहरे पर एक ओज, एक उमंग, एक आळाद, एक प्रसन्नता स्वतः ही झलकने लग जायेगी... और यही तो वास्तविक सौन्दर्य है।

सौन्दर्य किसी नारी, अप्सरा या प्रकृति का नाम नहीं है, वे तो केवल सौन्दर्य के प्रतिमान हैं। ‘जिसे देखकर आप अपने-आप को चिंतामुक्त अनुभव करने लगें और आनन्द की स्थिति उत्पन्न होने लगे, सही अर्थों में वही सौन्दर्य है।’

आज सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से व्यक्ति सौन्दर्यशाली बने रहने का प्रयास करता है, तरह-तरह के विटामिन्स खाता है। सौन्दर्य विशेषज्ञ भी सौन्दर्य का स्थायी हल ढूँढ़ने के प्रयास में रत हैं, किन्तु आज तक स्थायी उपाय प्राप्त करने में असफल ही हैं। यह जरूर है कि सर्जरी के माध्यम से चेहरे व शरीर की द्वुरियों को समाप्त करने में डॉक्टर सफल हुए हैं, किन्तु यह चिकित्सा अत्यन्त महंगी है और अत्यन्त कष्ट साध्य भी, जिसे अपनाना प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है।

यदि हम अपना थोड़ा-सा ध्यान ऋषि परम्परा द्वारा आविष्कृत उपायों पर डालें, तो हमें पता चलेगा कि सौन्दर्य का स्थायी उपाय उन लोगों ने बहुत पहले ही ढूँढ़ निकाला है। हमारे प्राचीन ऋषि धन्वन्तरी, अश्विनी, च्यवन आदि ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लगा दिया, कि -

- आखिर जीवन का वास्तविक तथ्य क्या है?
- कैसे अपने-आप को ओजस्वी, यौवनवान और सौन्दर्यवान

बनाया जा सकता है?

- किस प्रकार बुढ़ापे को जवानी में बदला जा सकता है?
- किस प्रकार अपने पूर्ण शरीर का कायाकल्प किया जा सकता है?

‘कायाकल्प’ का तात्पर्य उस सदाबहार तरोताजगी, अद्वितीय सौन्दर्य और उस मस्ती से है, जो जीवन में आनन्द का बीज बो दे, 60 वर्ष के वृद्ध को भी 16 वर्षीय पूर्ण सौन्दर्य प्रदान कर दे, क्योंकि व्यक्ति मन से भी अधिक मन पर थोपे गये विचारों से बूढ़ा हो जाता है और उसका सारा सौन्दर्य ही ढल जाता है... जीवन में इस आनन्द का होना ही सौन्दर्य-वृद्धि है।

सौन्दर्य तो आधार है जीवन का, ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसका प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठता, पूर्णता कही जाती है। जितने भी ग्रंथ, वेद, पुराण लिखे गये हैं, उन सब में सौन्दर्य का विस्तृत विवेचन हुआ है।

... वसंत मन की सख्त जमीन पर किसी स्रोत के फूट पड़ने का ही तो अवसर है, जिसमें खुद भी भीग लें और किसी को भी भिगो दें। यही तो होती है यौवन की अठखेलियां। यौवन एकाएक उत्तर आने वाली कोई घटना नहीं होती है। पहले तो अठखेलियां ही आती हैं, अठखेलियों के आने से ही वह ‘यौवन’ आता है, जो सही अर्थों में यौवन होता है। हर वर्ष की भाँति, वसंत की ही तरह यौवन को हर वर्ष नूतन करते रहने का पर्व होता है यह।

वसंत का पर्व, प्रकृति किसी पाठशाला में, जीवन के किसी पाठ की कक्षा लगाकर नहीं, उत्सव रच कर समझाना चाहती है, और जैसा कि पहले कहा, कि व्याख्याओं के दुरुह चक्र से पृथक हो स्वयं साधक को ही एक व्याख्या करने योग्य धारणा बना देती है। नृत्य और संगीत के ऐश्वर्य में खोता हुआ दिखता यह पर्व अपने बाह्य आवरण में जितना अधिक विलासमय है, उतना ही आंतरिक पक्ष से गंभीर भी। क्या आंतरिक गंभीर्य के अभाव में यह संभव भी हो सकता है, कि जीवन में वास्तविक विलास उत्तर सके? आंतरिक गंभीर्य की अनुपस्थिति तो, केवल वसंत को ही नहीं, किसी भी उत्सव को एक फूटड़ प्रदर्शन व कोलाहल में बदल देती है। इसी से आवश्यक है कि साधक एक ओर जहां जीवन के बाह्य पक्षों का श्रृंगार करे, वहीं उससे भी अधिक तल्लीनता से अन्तर्पक्ष का भी श्रृंगार करे। वसंत इन दोनों ही बातों को एक साथ, एक ही घड़ी में सम्पन्न करने का अवसर प्रदान करता है और तभी तो अनंग साधना पर्व होता है।

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)



सेवा में

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-संत्र विज्ञान  
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)



सेवा में

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-संत्र विज्ञान  
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)



सेवा में

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-संत्र विज्ञान  
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं स्थान का निर्धारण सुनिश्चित कर सकते हैं या आप अपना फोटो सम्बन्धित न्यौछावर राशि के साथ जोधपुर कार्यालय के पाते पर भेज कर भी फोटो द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीभाली मार्ग, हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2432209, 2433623 टेलीफ़ोन : 0291-2432010

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 22 पर प्रकाशित)

दिनांक : ..... जनवरी 2008

मैं लोकप्रिय पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का 'वार्षिक सदस्य' बनना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सम्बन्धित उपहार 'कनक धारा यंत्र' स्वरूप भेज दें। 240/- की वी.पी.पी. आने पर (195/- वार्षिक सदस्यता शुल्क + 45/- डाक व्यय) के रूप में जमा कर मुझे रसीद भेज दें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर वी.पी.पी. छुड़ा लूँगा एवं हर माह मुझे पत्रिका भेजते रहें अथवा आप मेरे मित्र को हर माह पत्रिका भेजते रहें।

मेरा नाम :

मेरे मित्र का नाम :

पूरा पता :

उसका पूरा पता :

प्रिय सम्पादक जी,

दिनांक : ..... जनवरी 2008

'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' में प्रकाशित निम्न ऑडियो/वीडियो कैसेट्स-सी.डी वी.पी.पी. से भेज दें, वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूँगा।

#### कैसेट्स के नाम

1. ..... 5. .....

2. ..... 6. .....

3. ..... 7. .....

4. ..... 8. .....

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 55 पर प्रकाशित)

दिनांक : ..... जनवरी 2008

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'कामदेव रति साधना' सामग्री भिजवा दें। मैं 490/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूँगा। मेरा पता निम्न है –

नाम व पता :

पता :

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं।

1. ..... 2. .....

.....

.....

.....

4

5

6

जिस  
बार  
आन  
फिर  
गोरेप  
आयु  
भावो

नित्य यौवन सम्पदः रतिकाम प्रयोगतः

कामदेव रति प्रयोग से व्यक्ति सतत् यौवन सम्पन्न बना रहता है।

रूप और यौवन

चुराने का क्षण आ गया है

# कामदेव चत्वि दाधिता

शम्भुस्वयम्भुरस्यो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासः।

वाचामगोचरचरित्रविचक्रताय तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय॥१॥

विचित्र चरित्र होने के कारण जिनका वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता और जिन्होंने ब्रह्मा-विष्णु और महादेव को श्री मृणों के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्र वाली सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती को गृहकर्म करने के लिए दास बना रखा है; हम उन श्रगवान् कामदेव को नमस्कार करते हैं।

विद्युपचित्तमेघं भूमयः कन्दलिन्यो नवकुटजकदम्बामोदिनो गन्धवाहः।

शिखिकुलकलकेकारावस्म्या वनान्ताः सुखिनमसुखिनं वा सवमुत्कण्ठयन्ति॥

मेघाच्छ्व आकाशा, नवीन अंकुरों वाली भूमि, जये खिले हुए मालती और कब्ज़े के फूलों से सुगन्धित वायु, मयूरों की मधुर वाणी से सुन्दर वन प्रदेश आदि सुखी अथवा दुःखी सभी जनों की काम-आनन्द विषय की उत्कण्ठा को बढ़ाते हैं।

यौवन का तात्पर्य है ताजगी, जब पुष्प पूरा खिलने से पहले छिपा ओ, छिप नहीं सकता, जीवन के दिन रुकते नहीं हैं, जिस स्वरूप में होता है उस स्वरूप को निहारने का मन बार-बार करता है, उसमें जो बहार होती है, उसे तो देख कर ही माधुर्य नहीं है, प्रेम नहीं है, पीड़ा नहीं है, तो फिर जीवन के आनन्द आ जाता है और फिर जब वह पुष्प सुगन्धित हो, तो दिन तो काटने के समान है। यह जीवन पूर्ण आनन्द के साथ फिर कहना ही क्या?

रूप माधुर्य और यौवन की छटा भी ऐसी ही है। रूप नित्य नवीनता और मधुरता रहे। गोरेपन में, तीखे-नाक नक्श में, और यौवन केवल जवानी की यह आवश्यक है कि आपका जीवन दूसरों से अलग हो, आयु से संबंधित नहीं है, यह तो भीतर उत्पन्न हुए विविध इसमें प्रातःकाल की शीतलता हो, भीतर ही भीतर तेज हो, भावों का शरीर के माध्यम से प्रकटीकरण है, जो कितना ही वृद्धि के अनु हों, सुगन्ध हो।

## अवंग उपनिषद्

कामदेव को पुरुष शक्ति का स्वरूप तथा रति को स्त्री शक्ति का स्वरूप माना गया है और इस संबंध में जितने ग्रन्थ, काव्य रचनाएं, लिखी गई हैं, उनी रचनाएं शायद ही किसी अन्य विषय के संबंध में लिखी गई हों।

संस्कृत के काव्य हों अथवा तंत्र के ग्रन्थ, उनमें विवरण तो बहुत अधिक दिया गया है लेकिन यह साधना सिद्ध रूप से कैसे की जा सकती है, इसका वास्तविक स्वरूप क्या है, और इसे जीवन में कैसे उतारा जाय, इसका वर्णन बहुत कम दिया गया है।

हर कोई पुरुष जन्म से सुन्दर और आकर्षक नहीं हो सकता, और हर स्त्री पूर्ण सुन्दरता से युक्त नहीं हो सकती, लेकिन क्या ऐसा संभव है, कि इस रूप से सिद्ध साधना की जाय कि कामदेव स्वयं पुरुष के भीतर स्थित हो जाए तथा रति स्त्री के भीतर स्थित हो जाए, जिससे रूप और यौवन, आकर्षण भीतर भी भीतर बन कर प्रस्फुटित हो।

जो असंभव है, अप्राप्त है, उसे ही तो संभव करना, प्राप्त करना ही साधना-सिद्धि है, और कामदेव रति प्रयोग तो आधार है जीवन का। जीवन से काम को अलग कर देने का तात्पर्य है - पुष्प में से उसकी सुगन्ध को, उसकी बहार को हटा देना, उसके बिना फिर पुष्प का तात्पर्य ही क्या है? सुगन्ध और ताजगी ही तो आधार है। इसी प्रकार काम जीवन की सुगन्ध है, जिसे गलत समझना जीवन के मूलभूत आधार का निराकर करना है।

## कामदेव रति साधना कौन करे?

☆ जब शरीर हर समय सुस्त रहने लगे और मन में निराशा की भावना स्थान बनाने लगे और कार्यों में सफलता न

आगर जीवन को सही ढंग से जीना है, तो जीवन में सौन्दर्य और प्रेम दोनों को ही महत्वपूर्ण स्थान दीजिए, क्योंकि यही है वह अवयव जो आपको चिर यौवनमय बनाये सखता है - हर क्षण, हर पल। आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाये सखने में सहायक रहता है।

और अगर यही महत्वहीन होगा, तो जीवन में प्रसञ्जता के स्थान पर कड़वाहट घुलने लगेगी।

मिले।

☆ जब दूसरों को आप प्रभावित न कर सकें, और अपने छोटे से छोटे कार्य के लिए भी गिरिंगिडाना पढ़े।

☆ जब शारीरिक दृष्टि से पूर्णता का अनुभव न हो, वैवाहिक जीवन में मतभेद हों, आपसी विचारों का मेल न हो।

☆ जब किसी व्यक्ति विशेष को, चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री, उसे अपने वश में करना चाहे और जो आपके लिए आवश्यक ही हो।

☆ जब आपके व्यक्तित्व का प्रभाव मिठां, सहयोगियों पर न पड़ता हो, और आपको दूसरों से उपेक्षा प्राप्त हो।

☆ जब कार्यों में गति देनी हो, और हर कार्य हेतु बार-बार प्रयास करना पड़े।

☆ जब किसी प्रकार की विशेष व्याधि अर्थात् बीमारी हो।

☆ स्त्रियों के लिए यह आवश्यक है, जब उनके शरीर तथा चेहरे पर लावण्य न हो तथा वैवाहिक जीवन में नीरसता हो।

☆ जब इच्छा के अनुरूप मन पसन्द जीवन साथी न मिल रहा हो।

इन सब स्थितियों में कामदेव रति साधना सम्पन्न करनी चाहिए। यह आनन्द पर्व साधना है, इसमें किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि तन, मन, मस्तिष्क और हृदय, सबका सम्पूर्ण मिलन, समन्वय, आधार हैं कामदेव साधना में सिद्धि का।

## साधना कब करें?

यही एक ऐसी साधना है, जिसके लिए किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं पड़ती, इसे तो किसी भी दिन रात्रि में, सायंकाल के पश्चात् सम्पन्न किया जा सकता है, रात्रिकालीन इस साधना में नृत्य, गायन एवं जागरण का मंत्र जप के साथ पूरा अनुष्ठान है, इस साधना के लिए शुक्रवार का दिन अन्य दिनों की अपेक्षा सिद्ध मुहूर्त माना गया है। वसंत पंचमी (11 फरवरी 2008) को 'अनंग सिद्धि दिवस' माना जाता है, इस दिन संकल्प लेकर यह साधना किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न की जा सकती है।

'अनंग उपनिषद्' ग्रन्थ तो इस सम्पूर्ण विषय पर लिखा गया एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है, जिसकी प्रामाणिकता के बारे में सदेह ही नहीं किया जा सकता। प्राचीन ऋषियों ने इस विषय पर इस महान् ग्रन्थ की रचना की, इसमें नये-नये प्रयोग जोड़ कर वेदोक्त साधनाओं के समान बराबर का स्थान दिया है।

क्योंकि यह साधना भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी जीवन पुष्पों से में अन्य साधनाएं।

यह सही है कि जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए काम पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, लेकिन सम्पूर्णता तथा मोक्ष की प्राप्ति काम से बच कर नहीं हो सकती, इस पर विजय प्राप्त करने के लिए इसमें सिद्धि प्राप्त करनी ही होगी, तभी पूर्णता आ सकेगी जीवन में।

#### साधना सामग्री

इस साधना में 'अनंग यंत्र' 'रति प्रीति समविन्दु मुद्रिका' 'आनन्द मंजरी माला' के अतिरिक्त पूष्प मालाएं, कपूर, इत्र, अगर, कुंकुम, आंवला, चंदन, पुष्प, वृक्षों के पत्ते, पीला वस्त्र, सफेद, काला, लाल व पीला रंग अर्थात् गुलाल और अबीर आवश्यक है।

इस साधना में आठ प्रकार के कामदेव की पूजा सम्पन्न की जाती है, जिससे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो।

#### साधना क्रम

अनंग उपनिषद् ग्रन्थ में कथन है कि साधना से पूर्व ही साधक को वृक्ष के पत्ते, डालियां ला कर उन्हें जल से धो कर निम्न मंत्र से पूजन करना चाहिए।

**॥अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्री शोकनाशनः ॥**

अर्थात् हे वृक्ष देव, मैं उस कामदेव की पूजा करता हूं, जिनकी पूजा से सब प्रकार के शोक नष्ट हो जाते हैं और कामदेव रति उन शोक इत्यादि को नष्ट कर नित्य आनन्द से भर देते हैं।

इसे पीले कपड़े से ढंक कर अपने पूजा स्थान में रखना चाहिए।

अब साधक अपने सामने चावल की आठ ढेरी बना कर उस पर 'आठ लघु नारियल' स्थापित कर आठ कामों का पृथक पूजन करे, ये आठ काम हैं - काम, भस्म शरीर, अनंग, मन्मथ, बसन्तसखा, स्मर, इक्षुधनुर्धर एवं पुष्पबाण इनका पूजन क्रम निम्न प्रकार से है -

कपूर से

- ॐ वलीं कामाय नमः ।

गोरोचन से

- ॐ वलीं भस्मशरीराय नमः ।

इत्र से

- ॐ वलीं अनंगाय नमः ।

अगर से

- ॐ वलीं मन्मथाय नमः ।

कुंकुम से

- ॐ वलीं वसन्तसखाय नमः ।

आंवला से

- ॐ वलीं स्मराय नमः ।

चंदन से

- ॐ वलीं इक्षुधनुर्धराय नमः ।

- ॐ वलीं पुष्पबाणाय नमः ।

अब अपने सामने रखे हुए अनंग यंत्र तथा 'रति प्रीति मुद्रिका' पर वृक्ष के पत्ते तथा माला निम्न श्लोक को पांच बार पढ़ कर चढ़ाने चाहिए।

**सर्व रत्नमर्यी नाथ दामनीं वनमालिकाम् ।  
जहाण देव पूजार्थं सर्वगन्धमर्यी विभो ॥**

इसके साथ प्रसाद और सुपारी भी अर्पित करें तथा धी का दीपक जला कर दार्या और रख दें।

इस साधना का आधार है, काम गायत्री। यह मंत्र अत्यन्त ही प्रभावशाली है। इस पूरे पूजन क्रम के पश्चात् 'आनन्द मंजरीमाला' से उसी स्थान पर बैठे-बैठे पांच माला मंत्र जप निम्न मंत्र का करना चाहिए।

**काम गायत्री मंत्र  
॥ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि  
तज्ज्ञे अनंग प्रचोदयत् ॥**

इस प्रकार पांच माला मंत्र के पश्चात् अपने सामने कामदेव तथा रति को पुष्पाजलि अर्पित करते हुए प्रणाम करना चाहिए कि जगत् को रति प्रीति प्रदान करने वाले, जगत् को आनन्द कार्य प्रदान करने वाले देव, आप को प्रणाम करता हूं तथा आप मेरे शरीर में स्थायी आवास करें एवं मेरी वांछित इच्छाओं को फल प्रदान करते हुए कामान्दामेश्वरी साधना पूर्ण करें।

साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन एक माला काम गायत्री मंत्र का जप अवश्य ही करें।

साधना के पश्चात् साधक यंत्र तथा मुद्रिका को पुष्प के साथ पीले कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रखें तथा किसी विशेष कार्य पर जाते समय इसे पीले कपड़े सहित अपने बैग अथवा अपनी जेब में रख सकते हैं।

यह साधना एक निरन्तर की जाने वाली साधना है जिसमें केवल सफलता ही सफलता है, इसका प्रभाव नियमित मंत्र जप से शीघ्र ही प्राप्त होता है।

आठ विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजो। कार्ड मिलने पर 490/- की टी.पी.पी. ट्रांस आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध-प्राप्त प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

## श्रीमहा-विद्या-कवच

विनियोग - उ॒॑ अस्य श्रीमहा-विद्या-कवचस्य श्रीसदा-शिव त्रृष्णिः, उच्छिक छन्दः, श्रीमहा-विद्या देवता, सर्व-सिद्धि-प्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास - श्रीसदा-शिव-त्रृष्णये नमः शिरसि, उच्छिक-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-विद्या-देवतारै नमः हृदि, सर्व-सिद्धि-प्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मानस-पूजन - उ॒॑ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं जन्थं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थं समर्पयामि नमः। उ॒॑ हं अरकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थं समर्पयामि नमः। उ॒॑ वं वायु-तत्त्वात्मकं धूं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थं ब्रापयामि नमः। ऊं रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थं दर्शयामि नमः। उ॒॑ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थं निवेदयामि नमः। उ॒॑ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थं निवेदयामि नमः।

### श्रीमहा-विद्या-कवच

उ॒॑ प्राच्यां रक्षतु मे तारा, काम-रूप-निवासिनी।

आग्नेयां ब्रोडशी पातु, याम्यां धूमावती स्वयम् ॥१॥

नैऋत्यां भैरवी पातु, वारुण्यां भुवेनश्वरी।

वायव्यां सततं पातु, छिञ्चमस्ता महेश्वरी ॥२॥

कौबेर्या पातु मे देवी, श्रीविद्या बगला-मुखी।

ऐशान्यां पातु मे नित्यं, महा-त्रिपुर-सुन्दरी ॥३॥

ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या, मातझी पीठ-वासिनी।

सर्वतः पातु मे नित्यं, कामाल्या कालिका स्वयम् ॥४॥

ब्रहा-रूपा-महा-विद्या, सर्व-विद्या-मरी स्वयम्।

शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा, भालं श्रीभव-जेहिनी ॥५॥

त्रिपुरा भू-युजे पातु, शर्वाणी पातु नासिकाम्।

चक्षुषी चण्डिका पातु, श्रीत्रे नील-सरस्वती ॥६॥

मुखं सौम्य-मुखी पातु, ग्रीवां रक्षतु पर्वती।

जिहां रक्षतु मे देवी, जिहा-ललन-भीषणा ॥७॥

वार्ज-देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी।

बाहू महा-भुजा पातु, करांगुलीः सुरेश्वरी ॥८॥

यृष्टतः पातु भीमास्या, कट्यां देवी दिग्मवरी।

उदरं पातु मे नित्यं, महा-विद्या महोदरी ॥९॥

उग्र-तारा महा-देवी, जंघोरु परि-रक्षतु।

गुदं मुष्कं च मेद्रं च, नार्मि च सुर-सुन्दरी ॥१०॥

पदांगुलीः सदा पातु, भवानी त्रिदशेश्वरी।

रत्नं-मांसास्थि-मञ्जादीन, पातु देवी शवासना ॥११॥

महा-भयेषु घोरेषु, महा-भय-निवारिणी।

पातु देवी महा-माया, कामाल्या-पीठ-वासिनी ॥१२॥

भस्मरचल-गता दिव्य-सिहासन-कृताश्रया।

पातु श्रीकालिका-देवी, सर्वोत्पातेषु सर्वदा ॥१३॥

रक्षान्हीनं तु यत् स्थानं, कवचेनापि वर्जितम्।

तत्-सर्वं सर्वदा पातु, सर्व-रक्षण-कारिणी ॥१४॥

## श्रीमहाविद्या ऊरच

विनियोगः इस महाविद्या ऊरच का ज्ञानशिख ऋषि, उष्णिष छन्दः, श्रीमहाविद्या देवता, सर्व क्षिद्धि प्राप्ति हेतु विनियोग ।

ऋष्यादि न्यासः ज्ञानशिख ऋषि को नमक्षणाक, क्षिव एवं क्षपर्श एवं, उष्णिष छन्द हेतु मुख्य एवं क्षपर्श एवं, महाविद्या देवता हेतु हृदय एवं क्षपर्श एवं, सर्व क्षिद्धि हेतु अभी अंगों एवं क्षपर्श एवं ।

मानक पूजन : लं षीज युक्त पृथिवीतत्वात्मक गंध एवं महाविद्या के प्रीत्यर्थ ज्ञानपूर्ण एवं बहा हूँ । हं षीज युक्त आकाशमय पुष्प ज्ञानपूर्ण एवं बहा हूँ, यं षीजमय वायु तत्वात्मक धूप ज्ञानपूर्ण एवं बहा हूँ, कं षीज युक्त अनिनतत्व एवं नमक्षणाक एवं बहा हुए ढीप ज्ञानपूर्ण एवं बहा हूँ, वं षीजमय तत्वात्मक नैवेद्य ज्ञानपूर्ण एवं बहा हूँ, कं षीजयुक्त जल सर्व तत्वात्मक ताम्भूल ज्ञानपूर्ण एवं बहा हूँ ।

### महाविद्या कवच

आमनामयी भगवती ताका पूर्व दिशा में मेवी कक्षा एवं, अग्नि दिशा में बोडशी, पश्चिम में धूमावती, नैऋत्य में त्रिपुर भौकवी, बाकणी दिशा में भुवनेश्वरवी, छिन्नमस्ता देवी वायव्य दिशा में कक्षा एवं । उत्तर दिशा में विद्या अगलामुख्यी, ईशान दिशा में त्रिपुर भूनक्षी, उत्तर दिशा में भगवती मातंगी, अभी दिशाओं में आलिहा आमार्ख्या कक्षा एवं, ब्रह्मकर्पा अभी योद्धमयी महाविद्या अभी दिशाओं में कक्षा एवं ।

क्षिव एवं सुकक्षा भगवती दुर्गा एवं, मक्तुक एवं शिवा एवं, दोनों भौंहों एवं कक्षा त्रिपुरा एवं, नाठ एवं कक्षा शर्वाणी एवं । आंखों एवं कक्षा चण्डी नील, सकृष्टती क्षिव एवं कक्षा एवं । मुख्य एवं कक्षा औम्य मुख्यी पार्वती एवं । जिह्वा एवं कक्षा लपलपाती जीभ वाली आली एवं । मुख्य एवं सुकक्षा वारदेवी एवं, यक्षकृथल एवं कक्षा महेश्वरी एवं, भुजाओं एवं कक्षा महाभुजा, अंगुलियां एवं कक्षा शुक्रेश्वरी ।

पीठ एवं कक्षा एवं मादेवी, एमक एवं कक्षा दिग्मष्ट्री, पैट एवं कक्षा महादेवी एवं, दोनों जंघाओं एवं कक्षा उत्तराका एवं ।

गुदा, गुल्म एवं अण्डाकोष औक नाभि एवं कक्षा सुक्षुन्द्रवी एवं । पैक एवं अंगुलियां एवं कक्षा भगवती त्रिवशेश्वरी एवं, कक्ष मांक, अक्षिथ तथा भुजा एवं सुकक्षा देवी शशाक्षना एवं । जीवन में अधिक भ्रय होने पर अभी भ्रय दूर एवं बाली देवी आमार्ख्या कक्षा एवं । चाकों औक औ उत्पात होने पर भक्षमांचल क्षिहाक्षन पर विवाजमान श्रीमहाआली कक्षा एवं ।

जो क्षण असुकक्षित हो, जहां ऊरच पाठ क्षंभ्रव न हो कर्त्तव्र सुकक्षा फेले वाली भगवती महाविद्या, उन क्षणों एवं कक्षा एवं ।

इस महाविद्या कवच का साधना के पश्चात् पाठ करने से दस महाविद्याएं साधक को सभी बाधाओं से सुरक्षित रखती हैं । वह अपने जीवन में निरन्तर प्रगतिशील होता हुआ पूर्ण प्राप्त करता है ।

# ज्ञानकृष्णार्थ कविता बाणी

## मीष -

आकस्मिक और अप्रत्याशित व्यय के कारण चिंता उत्पन्न हो सकती है। आप व्यय पर नियंत्रण करने का प्रयास करेंगे तो भी कुछ अनुकूलता प्राप्त नहीं हो पाएंगी, परंतु विचलित न हों क्योंकि माह के अंत तक स्थिति में सुधार हो जाएगा। इस माह परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी भारी व्यय हो सकता है। व्यापारी गण प्रतिद्वन्द्वियों तथा साझेदारों से सावधान रहें। बेरोजगारों को अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आप 'अष्ट यक्षिणी साधना' (नवम्बर 2007) करें। विशेष तिथियां - 2, 7, 13, 23, 31 हैं।

## वृष -

आप बहुत तीव्र गति से इस माह प्रगति करेंगे तथा अन्य व्यक्ति ही नहीं, आप स्वयं परिणामों से चकित रह जाएंगे। माह भर धनागम के नए स्रोत खुलते रहेंगे। ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि इतना अधिक काम आपको प्राप्त हो कि और अधिक लेने के लिए मना ही करना पड़े। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा तथा आप भी स्वयं को तरोताजा एवं चुस्त अनुभव करेंगे। यह माह मकान, गाड़ी अथवा अन्य किसी प्रकार की वस्तुओं के लिए श्रेष्ठ है। आप 'वागेश्वरी साधना' (दिसम्बर 2007) करें। विशेष तिथियां - 8, 11, 20, 23, 25 हैं।

## मिथुन -

माह भर कार्य की अधिकता रहेगी तथा आप अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। परंतु इसके बावजूद आप अपने को स्फूर्त तथा उत्साहित रख पाएंगे एवं अपने सभी कार्यों को पूर्णता तक ले जा पाएंगे। लौग आपकी कर्मठता एवं जूझारूपन की प्रशंसा करेंगे; इसके बावजूद छिपे शत्रुओं से सावधान रहें। वे आपके समक्ष खुल कर आने का साहस तो नहीं करेंगे, परंतु आपके कार्य में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं; परंतु आपके रचनात्मक प्रयासों के आगे उनकी सभी योजनाएं विफल हो जाएंगी। आप 'हनुमान साधना' (नवम्बर 2007) करें। विशेष तिथियां - 2, 9, 14, 27, 31 हैं।

## कर्क -

समय पूर्णतः आपके अनुकूल चल रहा है तथा आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होने को हैं। यह माह इस दृष्टि से विशेष शुभ सिद्ध होगा। नौकरी पेशा तथा व्यापारियों, दोनों के लिए ही लाभ का योग है। बेरोजगारों को भी मनोनुकूल रोजगार के साधन उपलब्ध हो सकते हैं। घर बदलने, नया घर बनाने का यह अच्छा समय है। माह के मध्य में किसी मित्र या संबंधी से कहा सुनी हो सकती है परंतु स्थिति स्वयं ही सुधर जाएगी। आप 'तिब्बती लामा कवच' (दिसम्बर 07) अवश्य धारण करें। विशेष तिथियां - 3, 8, 12, 18, 19, 27 हैं।

## सिंह -

समय पूर्णतः आपके अनुकूल चल रहा है तथा आपकी व्यक्ति ही नहीं, आप स्वयं परिणामों से चकित रह जाएंगे। मनोकामनाएं पूर्ण होने को हैं। यह माह इस दृष्टि से विशेष माह भर धनागम के नए स्रोत खुलते रहेंगे। ऐसी स्थिति भी शुभ सिद्ध होगा। नौकरी पेशा तथा व्यापारियों, दोनों के लिए ही लाभ का योग है। बेरोजगारों को भी मनोनुकूल रोजगार के अधिक लेने के लिए मना ही करना पड़े। परिवार में प्रसन्नता साधन उपलब्ध हो सकते हैं। घर बदलने, नया घर बनाने का से कहा सुनी हो सकती है, परंतु स्थिति स्वयं ही सुधर जाएगी। बेरोजगारों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी। आप 'अष्ट काली साधना' (सितम्बर 2007) करें। विशेष तिथियां - 4, 7, 13, 20, 25 हैं।

## कन्या -

आप कुछ समय से नवीन योजनाएं बना रहे थे, उनका फलीभूत होने का समय आ गया है; परन्तु सफलता के लिए आवश्यक है आप दृढ़ता एवं सूझबूझ के साथ आगे बढ़ें। संबंधी आपको पूर्ण सहयोग देंगे। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आपकी विशेष सफलता के योग हैं। श्रमिक वर्ग के लिए यह समय विशेष सावधानी बरतने का है। उन्हें शत्रुओं एवं दुर्घटनाओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए। परिवार में आपसी कलह एवं विवाद हो सकता है, अतः उचित होगा कि आप शांत रहें। आप 'कमला तंत्र साधना' (कन्या 2007) करें। विशेष तिथियां - 1, 6, 11, 21, 23 हैं।

## दुन्जा -

इस मास आप अपने मन में विशेष उत्साह और आनंद का अनुभव करेंगे। आपका ध्यान आध्यात्मिक विषयों की ओर अधिक लगेगा और हो सकता है कि इस मास आप तीर्थ यात्रा भी करें, जिसके फलस्वरूप आप जीवन को और गहराई में देख सकेंगे। इस माह व्यवसाय में आपकी उन्नति हो सकती है। मित्रों एवं परिचितों के मध्य आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति भी श्रेष्ठ रहेगी, हालांकि यात्रा आदि में धन खर्च होने के योग हैं। इस महीने आप का विशेष लोगों से सम्पर्क होगा। आप 'अन्नपूर्णा लक्ष्मी साधना' (नव. 07) करें। तिथियां - 1, 3, 14, 22, 31 हैं।

## वृष्टिवक्त -

इस माह आप अपना नया कार्य, व्यापार आरंभ कर सकते हैं। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप साझेदारी में कोई कार्य नहीं करें। चाहे छोटे स्तर पर ही, अपना निजी कार्य आरंभ करें, आप पाएंगे कि जितना आप परिश्रम करते हैं उससे कहीं अधिक लाभ आपको प्राप्त हो रहा है। अतः समय का भरपूर लाभ उठाते हुए अपने कार्य में जी जान से लग जाएं। फिर कोई कारण नहीं कि उच्चतम सफलता न प्राप्त हो। इस माह अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आप 'विशेष तिब्बती लामा कवच' (दिसम्बर 2007) अवश्य धारण करें। तिथियां - 4, 9, 14, 21, 27 हैं।

## धनु -

इस माह के पूर्वार्द्ध में जहां आपको अपने कार्य क्षेत्र, व्यापार में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, आपको संघर्ष के उपरांत ही सफलताएं प्राप्त होंगी, अतः धैर्य बनाए रखें। माह के अंत तक परिस्थितियां पूर्णतः अनुकूल हो जाएंगी तथा आपको आशातीत सफलता भी प्राप्त होगी। कुछ समस्याएं, जो कि पिछले कई महीनों से चली आ रही हैं, उनका भी समाधान होगा। मित्रों एवं परिचितों का भी आपको सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में किसी मंगलोत्सव के कारण हृष का बातावरण बनेगा। आप 'मेघा सरस्वती साधना' (दिसम्बर 2007) करें। तिथियां - 3, 4, 10, 19, 23 हैं।

## मकर -

यह माह आपके लिये बहुत कठिन होगा, लगभग पूरा माह भर किसी परिवारिक समस्या या झगड़े को सुलझाने में व्यतीत हो सकता है। हो सकता है आप स्वयं को अत्यधिक तनावपूर्ण एवं अपराधग्रस्त अनुभव करेंगे। इनना अवश्य ध्यान रखें कि संयम, सूझबूझ तथा चतुराई से ही समस्या का

**योग:** सिद्ध योग - 12, 17, 18, 26 जनवरी / 7, 8, 13, 19, 21 फरवरी ☆

सवार्थ सिद्ध योग - 10, 19, 27 जनवरी / 3, 12, 15, 24, 28 फरवरी ☆

☆ अमृत सिद्ध योग - 19 जनवरी / 12, 24 फरवरी / 11 मार्च ☆ द्विपुष्कर

योग - 23 फरवरी / 4 मार्च ☆ त्रिपुष्कर योग - 29 जनवरी ☆

समाधान मिल पाएंगा। किसी भी प्रकार की जोर जबरदस्ती से स्थिति और अधिक बिगड़ने का भय रहेगा। अतः सावधानी रखें अन्यथा आप किसी बहुत बड़ी परेशानी में फँस सकते हैं। आप 'रम्भा अप्सरा साधना' (नवम्बर 2007) करें। तिथियां - 2, 12, 15, 19, 24 हैं।

## कुंभ -

इस माह आपका सम्पर्क किसी ऐसे व्यक्ति से होगा जो कि आपके लिये सहायक सिद्ध होगा। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप अपने लक्ष्य पर ध्यान रखते हुए उसी दिशा में आगे बढ़ें क्योंकि अच्छा समय बार-बार नहीं आता है। अदालती कार्यों से स्वयं को जितना हो सके, दूर ही रखें तथा किसी अन्य के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करें। तीर्थ यात्रा का भी योग प्रबल है तथा आप कई महत्वपूर्ण तीर्थों के दर्शन कर सकते हैं। व्यय भी इस पूरे माह भर बढ़-चढ़ कर ही रहेगा। आप 'मंगल ग्रह साधना' (दिसम्बर 2007) अवश्य करें। तिथियां - 2, 10, 23, 24, 31 हैं।

## मीन -

नया मकान बनाने, खरीदने या स्थान परिवर्तन हेतु स्थिति पूर्णतः अनुकूल एवं श्रेष्ठ है। इस माह आपके लिये लाभ की स्थिति होगी, अतः आप अपना अधिक से अधिक समय अपने भविष्य की योजनाओं को दें। नौकरी पेशा व्यक्तियों के लिए भी समय अच्छा होगा एवं धनागम के अधिक अवसर प्राप्त होंगे। नया व्यवसाय आरंभ करने की सोच रहे हैं तो उसके लिए भी समय ठीक है, परिवार में कोई मंगल कार्य होगा तथा पारिवारिक बातावरण अनुकूल होगा तथा स्त्रियों का परिवार में मान-सम्मान बढ़ेगा। आप 'सम्मोहन-वशीकरण साधना' (दिस. 07) करें। तिथियां - 3, 7, 13, 17, 26 हैं।

## इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

02 फरवरी	माघ कृष्ण - 11	शनिवार	षट्टिला एकादशी
04 फरवरी	माघ कृष्ण - 12	सोमवार	सोम प्रदोष
07 फरवरी	माघ कृष्ण - 30	गुरुवार	अमावस्या व्रत
08 फरवरी	माघ शुक्ल - 01	शुक्रवार	गुप्त नवरात्रि प्रा.
11 फरवरी	माघ शुक्ल - 05	सोमवार	वसंत पंचमी
17 फरवरी	माघ शुक्ल - 11	रविवार	जया एकादशी
18 फरवरी	माघ शुक्ल - 12	सोमवार	सोम प्रदोष
19 फरवरी	माघ शुक्ल - 13	मंगलवार	गोरखनाथ जयंती

# मंगल

# समय हैं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है हृजीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से

सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।**



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जनवरी 27) (फरवरी 3, 10, 17)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (जनवरी 28) (फरवरी 4, 11, 18)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (जनवरी 29) (फरवरी 5, 12, 19)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (जनवरी 23, 30) (फरवरी 6, 13, 20)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (जनवरी 24, 31) (फरवरी 7, 14, 21)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जनवरी 25) (फरवरी 1, 8, 15)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जनवरी 26) (फरवरी 2, 9, 16)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

# यह हमने नहीं बराहमिहि कै छहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपरिथित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तबावहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो बराहमिहि के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

फरवरी

- ‘विघ्नातका’ (60/-) का पूजन कर घर से दूर दक्षिण दिशा में फेंक दें। रोग शोक समाप्त होंगे।
- घर से बाहर निकलते समय पांच काली मिर्च सिर पर धुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।
- प्रातः सूर्य देवता को जल अर्पित करें, तथा कुंकुम, अक्षत से पूजन कर गुड़ अर्पित करें।
- ‘रुद्र गुटिका’ (50/-) का प्रातः पूजन करके शिव मंदिर में चढ़ा आएं। बाधाएं एवं रोग समाप्त होंगे।
- वानरों को गुड़-चना खिलाएं।
- आज प्रातः पीले पुष्पों से गणपति का पूजन करें तथा बेसन के लड्डूओं का भोग लगायें।
- ‘गुरु रहस्य गुटिका’ (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर धारण करें। शुभत्व प्राप्त होगा।
- आज गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ हो रही है, भगवती दुर्गा का पूर्ण विधि विधान सहित पूजन करें।
- आज रक्षा हेतु 5 बार हनुमान बाण का पाठ करें।
- लघु नारियल (60/-) का पूजन अक्षत, कुंकुम एवं पुष्पों से करें तथा दक्षिणा सहित नारायण मंदिर में चढ़ा आएं।
- आज घर के सभी बालकों को ‘सरस्वती यंत्र’ (120/-) धारण करायें, पति-पत्नी अनंग-रति साधना सम्पन्न करें।
- आज ब्रह्म मुहूर्त में उठकर एक दीपक घर के द्वार पर प्रज्ज्वलित करें। शुभ समाचार मिलेगा।
- पांच बार जपते हुए गणपति का ध्यान करें।  
पात्नाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः।  
सदैव पर्वती पुत्रः ऋण नाशं करोतु मे॥
- गुरु गीता का एक बार पाठ अवश्य सम्पन्न करें।
- प्रातः काल धी का दीपक लगाकर 51 बार ‘ऐ हीं कर्लीं चामुण्डायै विच्चै’ का जप अवश्य करें।

- निम्न श्लोक का प्रातः 1 बार जप करें, पीड़ा समाप्त होगी।  
कणस्थः पिंगलो वधुः कृष्णो रौद्रान्तकरो यमः  
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्लादेन संस्तुतः॥
- आज दही खा कर ही घर से निकलें, सफलता प्राप्त होगी।
- भगवान शिव का पूजन कर ‘ॐ कं भं यं अ॒ं अ॑ं’ मंत्र का 21 बार जप करें। सुखशांति प्राप्त होगी।
- तेल के दीपक में एक लौंग डालकर हनुमान जी की आरती करें। रोग, शोक समाप्त होंगे।
- ‘उ॒ं हीं ग्रीं हीं’ मंत्र का 18 बार जप करते हुए भगवान गणपति का पूजन करें। धन लाभ होगा।
- गुरु जन्म दिवस के अवसर पर प्रातः ‘निखिलेश्वरानन्द स्तवन्’ का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
- भगवती लक्ष्मी को 3 पुष्प अर्पित कर 15 बार ‘उ॒ं महालक्ष्मी नमस्तुम्यं गुह्यासो करोम्यहम्’ का जप करें।
- ‘सुलक्षणा’ (न्यौछावर 50/-) को जल में डालकर उस जल से स्नान करें। स्वास्थ्य रक्षा होगी। स्नान पश्चात् सुलक्षणा को दक्षिण दिशा में फेंक दें।
- निम्न मंत्र का 5 बार उच्चारण करते हुए भैरव का पूजन करें।  
उ॒ं नमस्तेऽमृतसम्भूते बल वीर्य वर्द्धिन्।  
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूस्तः॥
- शिवलिंग पर दुग्ध मिश्रित जल चढ़ाएं तथा उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करें।
- प्रातः हनुमान जी के समक्ष सरसों के तेल का दीपक प्रज्ज्वलित कर ‘हुं पवन नंदनाय स्वहा’ का 5 मिनट जप करें।
- काले कुंते को गुड़ एवं रोटी खाने को दें, अनिष्ट टलेगा।
- आज छः माला अतिरिक्त गुरु मंत्र का जप करें।
- ‘दुर्गा श्रेष्ठा’ (न्यौछावर 80/-) का पूजन लाल पुष्प एवं कुंकुम से करें। फिर देवी-मंदिर में चढ़ा दें।

# जीवन सारिता

यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अतेकों उपाय हैं परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है; जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी गोणों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। जिस प्रकार मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए तो गोण स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं, उसी प्रकार मन को सुधृद करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

## 1. आप अपनी जवानी को हमेशा कायम रखियो।

यौवन तो एक ऐसी उमड़ती घटा है, जो जीवन में पता नहीं कहां से आकर बरसती है और जीवन को भिगो कर चली जाती है, इसकी कसक पूछिये उनसे, जिन पर यह घटा बरस कर जा चुकी हो। मन का नैराश्य व्यक्ति को असमय ही बूढ़ा कर देता है। वह ढूँढता रहता है, कि जीवन में नये स्वप्न मिलें, नयी आशाएं मिलें और वह उन सपनों को मूर्त रूप दे सके, लेकिन उसके शरीर और मानस के तन्तु उसे ऐसा घटित नहीं करने देते, जीवन की उस घटाटोप स्थिति में कोई भी विज्ञान, कोई भी समाज शास्त्र या विधि शास्त्र आगे बढ़कर व्यक्ति की मदद नहीं कर सकता।

आप अपनी जवानी को हमेशा कायम रख सकते हैं, सामान्यतः यह शीर्षक पढ़कर शायद आपको विश्वास न हो मगर हमारे योगियों और ऋषियों ने इस प्रकार के नुस्खे को ढूँढ निकाला है, जो अभी तक अज्ञात था, मगर यदि हम अपने अन्दर की जितनी भी शिथिल नाड़ियां हैं, मांसपेशियां हैं, उन्हें पुनः अनुकूल बना सकें, तो वापिस जवानी लौट सकती है। महर्षि च्यवन ने इसी प्रकार पुनः यौवन को प्राप्त किया था।

इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय यह है, कि कम से कम भोजन करें, अन्न का आहार कम लें तथा तरल पदार्थ ज्यादा लें, जिससे आप अन्नमय कोष की अपेक्षा प्राणमय कोष में ज्यादा जाग्रत रह सकेंगे, तथा कैलोरी भी आपकी उतनी ही हो, जो आपके

शरीर को हर प्रकार से सुव्यवस्थित एवं स्वस्थ रख सके, और धीरे-धीरे अन्नमय कोष की अपेक्षा प्राणमय कोष में अपने आप को स्वस्थ रखते हुए निम्न मंत्र का प्रातः 6 बजे स्नान करने के पश्चात 'सर्वकार्य सिद्धि माला' से 5 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ श्रीं अश्विन्यै नमः

यह नियमित जप 11 दिन तक करें ज्यारह दिन के बाद माला को नदी में प्रवाहित कर दें, तो निश्चय ही आपकी सदा बहार, जवानी लौट सकती है और साथ ही वह व्यक्ति रोग मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है।

साधना सामग्री - 150/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

## 2. क्या आप प्रायः स्वयं को अस्वस्थ एवं ऊर्जाहीन अनुभव करते हैं?

दिन भर की थकान के बाद शरीर में ऊर्जा की जो कमी हो जाती है, वह रात्रि की गहरी नींद के बाद पूरी होती है और व्यक्ति प्रातः काल एक नवीन ऊर्जा स्रोत के साथ तरोताजा होकर उठता है। यह सामान्य स्वस्थ मनुष्य की बात है, किन्तु यदि आप प्रातः रात्रि भर सोने के बाद भी सुबह उठकर कमजोरी, शिथिलता, आलस्य और थकान अनुभव करते हैं और ऐसा प्रायः होता है, तो निश्चय ही यह चिन्ता का विषय

है। यह अवश्य ही शरीर की दुर्बलता का सूचक है, जिसकी सारा सौंदर्य फीका पड़ जाता है। और यदि ध्यान न दिया गया तो विकट रोग भी उत्पन्न हो सकता है। ऐसा किसी शारीरिक न्यूनता अथवा मानसिक या पारिवारिक क्लेश या तनाव से भी हो जाता है।

इसके लिए नित्य प्रातः सूर्योदय के पूर्व उठकर खुली हवा में ठहलने की आदत ढालें, साथ ही, प्रयोग को भी सम्पन्न करें। किसी भी बुधवार को प्रारम्भ किए जाने वाले इस प्रयोग के लिए प्रातः काल अपने पूजा कक्ष में सफेद आसन पर अक्षत की ढेरी पर 'चित्रक' को स्थापित कर 'शक्तिवर्द्धिनी माला' से निम्न मंत्र की 5 माला सूर्योदय से पूर्व करें -

मंत्र

॥ ॐ क्षौं क्रौं नृसिंहाद्य क्रौं क्षौं नमः ॥

यह 11 दिन का प्रयोग है। प्रयोग के बाद चित्रक को जल में प्रवाहित कर दें तथा माला को एक माह तक पहने रहें।

साधना सामग्री - 190/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

## 2. हृष्टी एवं मांस पेशियों का दब्द

शहरों में बढ़ते प्रदूषण एवं वायु की अशुद्धता के कारण शरीर में मांस पेशियों और हड्डियों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, और परिणाम होता है, जोड़ों में दर्द, बदन में दर्द, एक-एक मांस-पेशी में दर्द। अधिकतर लोग मालिश आदि से इस दर्द की निवृत्ति करते हैं, कुछ लोग इसे असाध्य मान लेते हैं तथा कुछ लोग इसे गम्भीरता से लेते ही नहीं, परंतु ये दर्द अनेक कारणों से हो सकते हैं और वृद्धावस्था आने पर और भी पीड़ित करते हैं, अतः इनके प्रति सावधानी आवश्यक है।

अपने पूजा घर में किसी पात्र में 'रोग निवारण यंत्र' को स्थापित कर उसके समक्ष निम्न मंत्र की 'मूँगा माला' से 5 माला मंत्र जप 21 दिन तक करें -

मंत्र

॥ ॐ हौं मंगले रोग वारिणी फट् स्वाहा ॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें और माला मरीज को पहना दें।

साधना सामग्री - 240/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

## 4. क्या आप कील-मुंहासे से हूँस्खी हैं?

चेहरे का सौन्दर्य सभी को प्राप्त नहीं होता, यह भी सौभाग्य से मिलता है, परंतु यदि कील-मुंहासे हो जाएं, तो सारा का

सारा सौंदर्य फीका पड़ जाता है।

यौवन के आगमन के साथ ही किशोर-किशोरियों के चेहरों पर फुंसियां भी उभरने लगती हैं। इन फुंसियों को दबाने या फोड़ने से चेहरे पर दाग पड़ जाता है साथ ही इस बजह से चेहरे पर अन्य जगह भी मुंहासे होने लगते हैं। ऐसे में चेहरे का समस्त आकर्षण समाप्त प्रायः हो जाता है।

कील या मुंहासे त्वचा में तैलीय तत्व के बढ़ जाने से होते हैं। इस प्रयोग के माध्यम से आप अपनी त्वचा को सुन्दर और आकर्षक बना सकते हैं, और कील मुंहासों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं।

किसी पात्र में आर्णेय को स्थापित कर उसके ऊपर कुंकुम, अक्षत, पुष्प चढ़ाते हुए उसका पूजन करें तथा निम्न मंत्र का 15 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ ॐ चं चं चं लत्तिते दुं दुं दुं ॐ ॥

यह क्रम 11 दिन तक करें तथा 'आर्णेय' पर चढ़ाये जल को चेहरे पर लगायें। 11 दिन बाद उसका पूजन करें तथा निम्न मंत्र का मंदिर में रखकर आ जाएं।

साधना सामग्री - 90/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

## 5. पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्ति हेतु

जब साधक का गृहस्थ जीवन ही सुखी नहीं रहता है, तो फिर वह क्या साधना करेगा? उसका सारा दिमाग तो अपनी घर की चिंताओं में चला जायेगा। रात-दिन पति-पत्नी में कलह, सन्तान का न होना, आपस का तनाव आदि अनेक कारणों से मन व्यथित रहता है, जिसकी बजह से साधना में सफलता संदिग्ध हो जाती है। इस प्रयोग से अनुकूलता मिलती है तथा घर में शान्ति रहती है।

किसी पात्र में 'गृहस्थ सुख प्राप्ति यंत्र' को स्थापित करें, उसका पंचोपचार से पूजन करें तथा उसके ऊपर अक्षत चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का बिना माला के 15 मिनट जप करें -

मंत्र

॥ ॐ हौं मम गृहस्थ सुखं साधय ॐ ॥

यह मंत्र जप 31 दिन तक करें और जप समाप्ति के बाद यंत्र को मंदिर या नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

# पातांजलि योग सूत्र

## प्रथम अध्याय

### **संचार**

अष्टांग योग सूत्र को आठ भागों में विभक्त किया गया है,  
पिछले अंक में आपदो योग की प्रारम्भिक व्याख्या पढ़ी थी, अब  
उसी क्रम में प्रत्येक भाग को स्पष्ट किया जा रहा है -

सामान्यतः देखने में आता है, कि व्यक्ति सीधे प्राणायाम दूसरा उसके प्रति अपने आप ही वैरभाव का परित्याग कर करने, ध्यान लगाने अथवा समाधि में उत्तरने की विधियों के देगा। अर्थात् चित्त हिंसा शून्य होने पर सांप जैसे हिंसक जीव बारे में जानने के लिए व्यग रहते हैं, ...परन्तु योग मार्ग के भी उसके प्रति हिंसा नहीं करेंगे।

अन्य प्रारम्भिक पक्षों की वे उपेक्षा कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें प्राणायाम, ध्यान या समाधि आदि में भी सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है। अष्टांग योग के प्रथम तीन अंगों - यम, नियम व आसन को महर्षि पतंजलि ने संयम भी कहा है - 'त्रयमेकत्र संयमः'। इनमें से सबसे पहला संयम 'यम' है। बुद्धिमान साधक सर्वप्रथम यम, नियम आदि द्वारा अपने चित्त को संयमित कर तदुपरांत आगे बढ़ते हैं।

**अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यपरिग्रहा यमः ।**

(योग वर्णन २/३०)

अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह - ये 5 प्रकार के यम हैं।

#### 1. अहिंसा -

अहिंसा का तात्पर्य है - मन, वचन कर्म तीनों से किसी भी प्राणी को, कभी भी, किंचित् मात्र भी कष्ट न पहुंचाने की वृत्ति। दुष्ट को ताड़ना देना, माता-पिता द्वारा अपने बालक को डांटना-फटकारना, निम्न कोटि के कीड़े इत्यादि को मारना हिंसा नहीं है, इसे शास्त्रोक्त हिंसा अर्थात् अहिंसा कहा गया है। अध्यापनार्थ ताड़न अर्थात् अध्यापक द्वारा दिया दण्ड, रोग निवृत्ति हेतु शल्य क्रिया, तत्काल कष्टप्रद औषधि दान, प्रायश्चित दण्ड हेतु विधान अहिंसा रूपी हैं।

जब हृदय में दृढ़ रूप से अहिंसा प्रतिष्ठित हो जाएगी, तब

#### 2. सत्य -

यथार्थ चिन्तन एवं कथन सत्य अनुष्टान है। सत्य का अर्थ है, मिथ्या वचन का परित्याग। अर्थात् जिस रूप में वस्तु को प्रत्यक्ष किया हो, देखा हो, जैसा उसे तर्क या अनुमान से जाना हो, जैसा अपने पूर्ववर्ती आगम क्रषि-मुनि, गुरुओं से सुना हो, उसी रूप में उस वस्तु के ज्ञान को मन में धारण करना और दूसरों को बतलाना सत्य है।

**परहितार्थं वाऽमनसो र्थार्थत्वं सत्यम् ।**

दूसरों के हित के लिए वाणी और मन का जो यथार्थ भाव है, उसे सत्य कहते हैं। सरल चित्त के वाक्य को, जिसमें किसी का अहित चिन्तन न हो, अथवा अहित होने की सम्भावना न हो, वही सत्य भाषण है। सत्य भाव जब स्वभाव में उत्तर जाएगा, तब झूठ का मन में उदय ही नहीं होगा। सत्य का अभ्यास करने से वाणी सिद्धि हो जाती है, वह जो कह देता है, फिर वह सत्य हो जाता है।

#### 3. अस्तेय -

दूसरे की वस्तु पर अनुचित रूप से अधिकार जमाने को 'स्तेय' कहते हैं। इसी स्तेय अर्थात् पराई वस्तु को चुरा लेने की वृत्ति का परित्याग करने को अस्तेय कहते हैं। इन्द्रियों द्वारा किसी के द्रव्य का हरण न करना, मन से भी परद्रव्य हरण की इच्छा का नाश करना अस्तेय है।

## अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्

(पातंजल, साधन-पाद, ३७)

अस्तेय की प्रतिष्ठा करने वाले व्यक्ति को कभी धन का अभाव नहीं होता, सभी रत्न स्वयं उसके पास आ जाते हैं।

### 4. ब्रह्मचर्य -

ब्रह्मचर्य का अर्थ है विषय वासना की ओर झुकाने वाली प्रवृत्ति का परित्याग। ब्रह्मचर्य के द्वारा इन्द्रियों का कामेच्छाओं के प्रति संयम पालन कर वीर्य रक्षा का अभ्यास किया जाता है।

**कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा,  
सर्वत्र मैथुनं त्यागं ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते ।**

(योग, सा. सं. ६२)

अर्थात् सब जगह, सर्वदा, प्रत्येक अवस्था में, मैथुन का परित्याग करना योगीभ्यासी का कर्तव्य है। 'मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणं' अर्थात् ब्रह्मचर्य पालन का उद्देश्य है वीर्य रक्षा, क्योंकि वीर्य नाश को मरण और वीर्य रक्षा को जीवन कहा गया है। आचार विचार, वार्तालाप, दृष्टि, स्पर्श आदि में काम भाव का संचरण होने पर भी वे मैथुन ही कहलाते हैं। इन सभी प्रकार के मैथुन से बचकर वीर्य रक्षा करना ब्रह्मचर्य है।

**ब्रह्मचर्यं प्रतिष्ठायां वीर्यताभः ।**

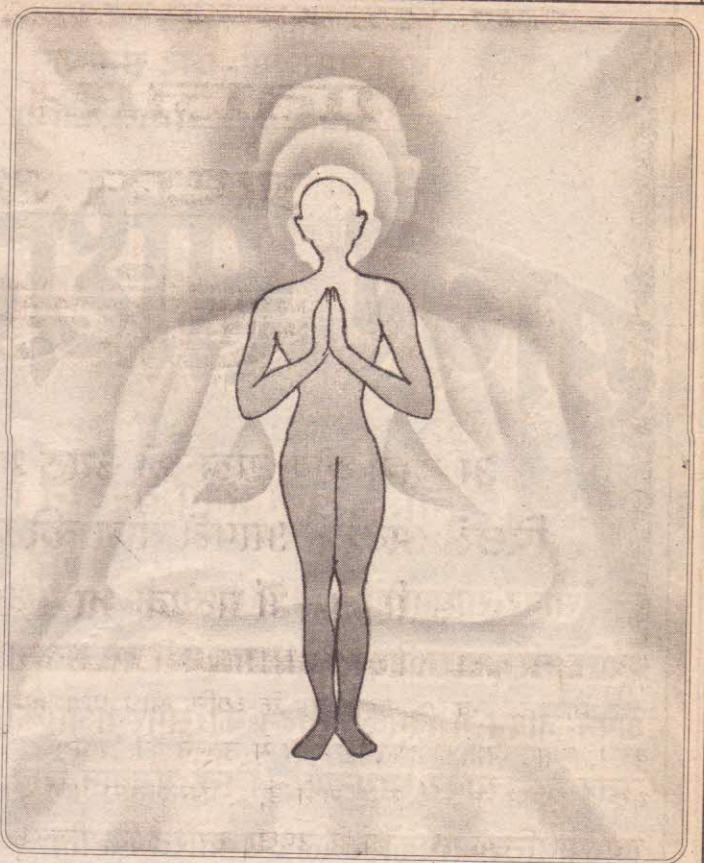
(पातंजल, साधन-पाद, ३८)

अर्थात् ब्रह्मचर्य से वीर्यलाभ होता है। वीर्य समस्त शक्तियों का मूल स्रोत है। अब्रह्मचारी को योग सिद्ध नहीं हो सकता। ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठित व्यक्ति के देह में विमल ज्योति प्रकाशित होती है, उसकी शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्तियां जाग्रत होती हैं, योग सिद्धि व ज्ञान प्राप्त होता है।

### 5. अपरिग्रह -

लोभवश या आवश्यकता से अधिक वस्तु के ग्रहण का त्याग ही अपरिग्रह कहलाता है। किसी से कुछ ग्रहण करने से मन उसके प्रति आसक्त हो जाता है। वस्तुओं को ग्रहण करने से अर्जन, रक्षण, क्षय, संघ एवं हिंसादि दोष उत्पन्न होते हैं।

आवश्यकता से अधिक वस्तु को त्यागना ही अपरिग्रह है। वस्तुओं के अत्यधिक ग्रहण और अत्यधिक संग्रह से चिंता वृद्धि ही होती है और विषयों में आसक्ति होती है। जहां अस्तेय से तात्पर्य दूसरे के द्रव्य का परित्याग है, वहीं अपरिग्रह में सास्त्रोक्त प्राप्त कर सकता है। योग मार्ग पर चलकर ही साधक द्रव्यों को केवल अपनी आवश्यकतानुसार ही अपने पास रखना,



तथा शरीर रक्षा के अतिरिक्त भोग विलास के साधनों का परित्याग है। अर्थात् इस यम से लोभ पर विजय प्राप्त हो जाती है। 'यह चाहिए, वह चाहिए' का भाव जब मन में समाप्त हो जाता है, तब अपरिग्रह सिद्ध होता है।

**अपरिग्रहस्थैर्यं जन्मकथन्तासंबोधः ।**

(पातंजल, साधन-पाद, ३९)

अपरिग्रह की प्रतिष्ठा होने पर पूर्वजन्म स्मरण होने लगता है।

इन पांचों यमों का पालन, देश, काल, जाति और समय से संकुचित नहीं किया जा सकता। सामान्य व्यक्ति इनका पालन योगयुक्त करता है, जैसे गौ आदि पशु की हिंसा न करना,

तीर्थादि स्थानों पर हिंसा न करना, पुण्य तिथियों पर हिंसा न करना। लेकिन योग मार्ग पर बढ़ने वाले व्यक्ति के लिए सभी यमों का सार्वभौम पालन ही महाब्रत होता है। इनके पालन में योगभ्यासी बुरी प्रवृत्तियों को वश में करने में सफल हो जाता है, फलतः वह योग मार्ग में आगे बढ़ जाता है।

योग मार्ग का यह प्रथम सूत्र अपनाने से ही आगे के द्वारा खुलते हैं और साधक जीवन में साधना-योग में सफलता प्राप्त कर सकता है। योग मार्ग पर चलकर ही साधक द्रव्यों को केवल अपनी आवश्यकतानुसार ही अपने पास रखना, कुण्डलिनी जागरण किया सम्पन्न कर सकता है।

बड़ी समस्याएं, छोटे समाधान

आप साधक हैं तो सम्पन्न कीजिए

# साबर साधनाएं

जो आपके लिए वरदान हैं



साबर साधनाओं का इतिहास भी उतना ही पुराना है, जितना वेदोक्त साधनाओं का है। हर व्यक्ति संस्कृत साहित्य का विद्वान् नहीं बन सकता, सम्पूर्ण पूजन विधि का का ज्ञाता नहीं होता। अपने जीवन में दिन प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए क्या करे? इसका एक ही उत्तर है - साबर साधनाएं - जिन्हें भगवान् शिव ने स्वयं अपने श्रीमुख से युग-धर्म को देखते हुए सामान्य साधकों के लिए उच्चारित किया।

आज यह सिद्ध है कि साबर साधनाओं का प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि पूर्ण श्रद्धा, विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, साधक को गुरुकृपा का आशीर्वाद निरन्तर प्राप्त होता रहे तब तो हिमालय भी उसके सामने छोटा ही है।

आदि गुरु शंकराचार्य ने चार धाम की स्थापना की, चारों धामों पर एक-एक शिष्य - विश्वरूपाचार्य, पद्मपादाचार्य, त्रोटकाचार्य एवं पृथ्वीधराचार्य को नियुक्त किया। मठ के प्रधान चार आचार्यों में विश्वरूपाचार्य के तीर्थ तथा आश्रम नामक दो शिष्य, पद्मपादाचार्य के वन और अरण्य नामक दो शिष्य, त्रोटकाचार्य के गिरि, पर्वत, सागर, नामक तीन शिष्य तथा पृथ्वीधराचार्य के सरस्वती, भारती, पुरी नामक तीन शिष्य - सब मिलाकर इस समुदाय के दस शिष्यों द्वारा दस सम्प्रदाय बने। इस प्रकार दसनामी संन्यासियों को अपने-अपने सम्प्रदाय के अनुसार साधना करनी पड़ती है और तदनुरूप उपाधि प्राप्त होती है। उनमें गिरि, भारती और पुरी सम्प्रदाय के साधकों ने स्थग्न-स्थान पर फैलकर, ज्ञान का प्रचार प्रसार किया। उन्हें नाथ कहा गया और इनमें भी नाथ सम्प्रदाय के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने एक विशेष ज्ञान का प्रचार प्रसार किया। जिसे नाथ सम्प्रदाय के अनुयाइयों ने आगे जन जीवन तक फैलाया।

उस समय भारतवर्ष की स्थिति अत्यन्त ही विचित्र थी। बाहरी लोगों के आक्रमण होते जा रहे थे। उनकी संस्कृति भारतीय संस्कृति में मिश्रित हो रही थी और एक नई संस्कृति जिसे वर्णसंकर संस्कृति कहा जा सकता है, पनप रही थी। जो अपने आप में संशय में थी। वैदिक संस्कृति को भी पूर्णरूप से अपनाने में असमर्थ हो रही थी, और नई संस्कृति को भी पूरी तरह से पचा नहीं पा रही थी। उसके साथ ही साथ विशेष स्थिति यह बनी की ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर वितण्डावाद फैलाना शुरू कर दिया। मानो धर्म पर उनका ही एकाधिकार हो और साथ ही साथ वर्ण व्यवस्था का ऐसा अज्ञान फैलाया की समाज कई टुकड़ों में बंट गया। धर्म के नाम से ही लोगों को चिढ़ होने लगी।

ऐसे समय में नाथ सम्प्रदाय के योगियों ने वैदिक मंत्रों को, जो ब्रह्म के मुख से उद्घोषित हुए, तांत्रिक मंत्र जो शिव के श्रीमुख से उद्घोषित हुए, उन्हें जनजीवन की भाषा में प्रचलन प्रदान किया, जिससे जनजीवन अपने धर्म को पूर्ण रूप से

समझ सकें, और साधना के माध्यम से अपने जीवन को उच्चता की ओर ले जा सकें। अतः मूलरूप से साबर मंत्र भगवान शिव के द्वारा उद्घोषित मंत्र ही हैं।

तृफान से भी टक्कर लेने वाले और सारी दुनिया को उंगली पर नचाने वाले ये साबर मंत्र, और उनकी साधना के बारे में कुछ तथ्य, आगे के पत्रों पर प्रस्तुत हैं।

साबर मंत्र समस्त मंत्रों में सर्वश्रेष्ठ, अचूक प्रभावयुक्त और महत्वपूर्ण माने गये हैं, क्योंकि इन मंत्रों के द्वारा जल्दी सफलता और सिद्धि प्राप्त होती है, बन्दूक से निकली गोली का लक्ष्य भले ही चूक जाय परन्तु इन साबर मंत्रों का निशाना अचूक होता है, जो साधक अपने जीवन में कुछ कर गुजरने की क्षमता रखते हैं, जो दृढ़ और हिमतवर्ण व्यक्तित्व लिए हुए होते हैं, वे ही इन साधनाओं में गुरु की आज्ञा से और उनके सान्निध्य में भाग लेकर इन साधनाओं में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं।

साबर मंत्रों के अक्षर सीधे-सादे और सरल होते हैं और उनके अर्थ भी ज्यादा स्पष्ट होते हैं तथा इनमें तो शब्दों का संयोजन ही प्रमुख होता है, पूरी आस्था और विश्वास के साथ साबर मंत्र सिद्ध किये जायें तो ऐसा सिद्ध व्यक्ति त्रैलोक्य को भी विजय कर सकता है। साबर सिद्धि साधना में साधक की श्रद्धा ही पूर्ण सप्त से सहायक होती है। यदि इसके गोपनीय रहस्यों को जानकर उसके अनुसार साधनाएं सम्पन्न की जाएं, तो निश्चय ही ये सिद्धिदायक होते ही हैं।

गुरु गोरखनाथ ने कहा है, कि वह व्यक्ति अभागा है, जिसने गुरु की शरण न ली हो, उसका दुर्भाग्य ही आगे आता है, जो साबर साधनाओं में भाग न ले और वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली ही कहा जायेगा, जो इस विश्व में ऐसे महत्वपूर्ण साबर मंत्रों के होते हुए भी अभाव दुःख और परेशानियां भोगता है। कलियुग में तो केवल साबर मंत्र ही सिद्धिदायक और शीघ्र प्रभावपूर्ण हैं।

इन मंत्रों की पांच विशेषताएं हैं, जो कि निम्न हैं -

1. ये मंत्र संस्कृत भाषा में लिखे हुए नहीं हैं, अपितु सीधे सादे सरल भाषा में होने की वजह से कम पढ़ा लिखा साधक भी इस प्रकार की साधना कर सकता है।
2. इन साधनाओं में ज्यादा काम धाम या निमय उपनियमों की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए साधना में गलतियां होने की संभावनाएं कम ही होती हैं।
3. इन साधनाओं से किसी प्रकार की दानि नहीं होती, यदि

मंत्र जप पूरा न हो या कोई त्रुटि भी रह जाय तब भी साधक को इसका विपरीत असर प्राप्त नहीं होता।

4. ये मंत्र भगवान शिव के द्वारा प्रतिपादित और गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रचलित हैं, अतः तुरन्त सिद्धिदायक तथा कार्यों में सफलता युक्त हैं।
5. साबर साधनाओं से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है, और उसका प्रयोग भी आसान होता है, जिससे कि उसे जल्दी लाभ प्राप्त होता है।

तत्र सम्बन्धी दोष तथा शत्रुबाधा इत्यादि के निवारण हेतु और वशीकरण सिद्धि हेतु आपके लिये आवश्यक साबर प्रयोग प्रस्तुत है इन्हें फाल्गुन मास में, नवरात्रि में सम्पन्न करें।

### वशीकरण साबर सिद्धि प्रयोग

वास्तव में ही वशीकरण साबर सिद्धि प्रयोग एक अत्यधिक गोपनीय तथा महत्वपूर्ण प्रयोग रहा है, जिसका प्रभाव गोली की तरह असर करता है। यह प्रयोग बहुत ही कम लोगों को जात है। कृतवेणु ने जिस प्रकार से प्रयोग किया वह निम्न प्रकार से है -

रविवार को प्रातः सूर्योदय के समय स्नान करके सफेद धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं, नीचे काले कम्बल या काले ऊनी वस्त्र का आसन हो, जमीन पर कुंकुम (रोली) से सात खड़ी लाइनें और सात आँड़ी लाइनें खींच लें, इस प्रकार 36 कोष्ठक बन जाएंगे, फिर प्रत्येक कोष्ठक में कोई न कोई पदार्थ खाने योग्य रख दें, जैसे किसी में बादाम का टुकड़ा, किसी में काजू, अखरोट, दूध का प्रसाद या कुछ भी, फिर उसके मध्य में मंत्र सिद्धि दुर्लभ 'हृथ्या जोङ्गी' रख दें और उसके ऊपर सात लौंग तथा सात काली मिर्च के दाने रख दें, तत्पश्चात् वहीं बैठ कर चारों ओर चार दिशाओं में तेल के दीपक लगा लें तथा 'हकीक माला' से निम्न मंत्र की 11 माला फेरें।

### मंत्र

सवा मन की भावना लोहे की जंजीर हाथी आवे झूमता कमाल खां अस्वार खड़े शोलो अर्ज करे गुर्ज पटके हौज हुई जाय अब की कवना मेरो करो, भंग का प्याला जाय पियो हिन्दू की राम कहे मुसलमान की कलमा मुहम्मद नाम एड़े सत्तर काम तेरे, एक काम करके न बताये तो कसम है।

यह मंत्र देखने में भले ही सीधा सादा हो पर इसका जितनी

बार भी प्रयोग किया गया उतनी ही बार आश्यर्चजनक परिणाम दिखाये। 11 माला मंत्र जप करने के बाद वह 'हृथाजोड़ी' किसी चांदी या तांबे की डिब्बी में बन्द करके अपनी जेब में रख लें और उसके ऊपर जो सात काली मिर्च और लौंग रखे हुए थे, चबा कर पानी के साथ निगल जाय।

छत्तीस कोष्ठकों में जो खाद्य सामग्री रखी हुई थी, वह एक कटोरी में इकट्ठी कर लें और उसमें से थोड़ा या प्रसाद किसी भी युक्ति से जिसे वश में करना हो, उसे खिला दें, तो तुरन्त वश में हो जाता है, तथा जीवन भर विश्वास पान बना रहता है, बाकी खाद्य पदार्थ किसी डिब्बी में बन्द करके रख देना चाहिए और जब-जब भी उसके व्यवहार में कुछ कमी अनुभव हो तब-तब पदार्थ किसी युक्ति से उसे खिला दें तो वह पुनःनियंत्रण में बना रहता है।

यह प्रयोग पुरुष द्वारा किसी भी अन्य पुरुष या अधिकारी पर शत्रु पर या किसी भी मित्र पर किया जा सकता है, जिससे कि वह जीवन भर अनुकूल बना रह सके। मंत्र जप के पश्चात् कुकुम (रोली) से जो लकीरें खींची थीं, मिटा दें और जमीन साफ कर लें।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### साबर मंत्र रचना

साबर मंत्र का कोई अर्थ नहीं निकलता एवं तुकबन्दी भी नहीं होती, अतः इन मंत्रों का अर्थ क्या है? इस बात पर ध्यान देना व्यर्थ है, क्योंकि ये शीघ्र सफलताप्रद होते हैं।

#### साबर मंत्र की सिद्धि

इन विषय में कुछ विशेष ज्ञातव्य तथ्य हैं -

- ★ मंत्र को गुरु द्वारा ही प्राप्त कर सिद्ध करना चाहिए।
- ★ शुभ दिन, शुभ मुहूर्त व उचित स्थान पर ही साबर मंत्र ग्रहण व सिद्ध करना चाहिए।
- ★ कुछ मंत्र देव स्थान, तीर्थ स्थान तथा जलाशय पर बैठकर सिद्ध किये जाते हैं, तो कुछ मंत्रों की साधना गुरु प्रदर्शित मार्ग में शमशान आदि भूमि में बैठकर की जाती है।

### **भूत-प्रेत बाधा उतारने का साबर प्रयोग**

शुक्रवार से शुरू कर अगले शुक्रवार तक नित्य ज्यारह माला रात को फेरें, निम्न मंत्र को सिद्ध करते समय सामने तेल का दीपक लगे और 'हनुमान की चौकी' जो कि ताबीज के आकार की होती है, रखें, उसी चौकी पर नजर डालते हुए 'हकीक माला' से मंत्र जपें।

अगले शुक्रवार को जब मंत्र पूरा हो जाय तो चौकी को काले धागे में पिरो कर दाहिनी भुजा पर बांध दें, जिससे कि जीवन भर उसकी रक्षा रहेगी और कोई तकलीफ नहीं होगी।

फिर जब किसी को भूत प्रेत लगा हो तब नीचे लिखे मंत्र का तीन बार उच्चारण चिमटे से जमीन पर पीटते हुए करें, तो उसका भूत-प्रेत चीखता-चिल्लाता हुआ भाग जाता है, और फिर कभी भी उसे कष्ट नहीं होता।

#### **मंत्र**

ॐ नमो आदेश गुरु का पिण्ड प्राण छोड़े देव दानव भूत-प्रेत डाकिनी तुरन्त छोड़े दूसरी ठौर करे, इसकी रक्षा हनुमत बीर करे, जो न करे तो मां अंजनी दुहाई, सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### **आर्थिक उज्ज्वलि का साबर प्रयोग**

स्वयं बुधवार को सुबह सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायें। सामने 'सुलेमानी हकीक' रख दें और उस पर नजर डालता हुआ पांच माला मंत्र जप करें, 'स्फटिक माला' से मंत्र जप हो। मंत्र जप के बाद उस सुलेमानी हकीक को अंगूठी में जड़वा कर धारण कर लें तो जिस कार्य या व्यापार में हाथ डालें वह पूरी तरह से सफल होता है तथा विशेष आर्थिक लाभ होता है।

#### **मंत्र**

ॐ नमो भगवती पद्मा श्रीं ॐ ह्रीं पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम धन्द्र द्रव्य आवे सर्वजन्य वश्य कुरु कुरु नमः। ॐ गुरु की शक्ति मेरी भत्ति फुरो मंत्र ईश्वर तेरी वाचा।

इसे एक ही दिन में पांच माला मंत्र जप से ही सिद्ध किया जाता है।

साधना सामग्री - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## शत्रु स्तम्भन साबर प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, सामने 'सात गोमती चक्र' रख दें और उन पर कुंकुम की बिन्दियां लगावें, फिर 'हकीक माला' से 11 माला मंत्र जप करें।

### मंत्र

ॐ वीर वैताल धरती कारणै गग्न गरजे मेरे शत्रु 'अमुक' का नाश करे मेरे मन के शूल दूर करे 'अमुक' कार्य में सफलता दे, जो न दे तो रुद्र करे त्रिशूल खावे।

11 माला मंत्र जप होने के बाद वे सातों 'गोमती चक्र' घर के बाहर जमीन में गाड़ दें तो निश्चय ही उसे इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

इस मंत्र में पहले 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम लें और दूसरे अमुक के स्थान पर उस कार्य का उल्लेख करें, जो कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करना चाहते हैं।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है। गोमती चक्र पूर्ण शत्रु स्तम्भन मंत्र से सिद्ध हो, मंत्र जप में हकीक माला का ही प्रयोग होना चाहिए।

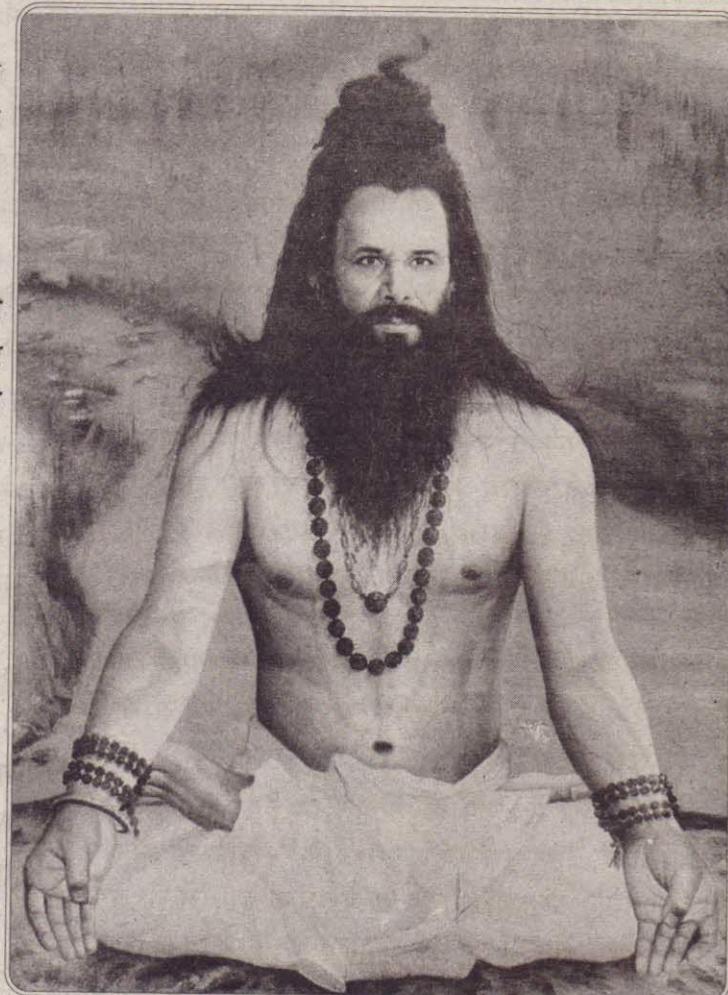
साधना सामग्री - 240/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

पूर्ण गृहस्थ सुख बहुत कम व्यक्तियों के भाग्य में मिलता है। पति पत्नी के विचारों में मतभेद, घर में नित्य कलह, निरन्तर व्यय चलते ही रहते हैं, तो फिर जीवन का आनन्द कहां?

इस साधना हेतु दो मंत्र प्रयोग विशेष रूप से प्रस्तुत हैं। पहले प्रयोग से घर की बाधाओं, विपन्नियों का नाश होता है और किसी की बुरी नजर का प्रभाव भी नहीं पड़ता, इस हेतु किसी भी शनिवार को अपने सामने 'गृहस्थ बाधा हरण यंत्र' रात्रि को स्थापित करें, सामने गुण्डल का धूप जलाएं तथा मिठाई, फल, पुष्प तथा तेल रखें और दूसरी ओर धी का दीपक जलाएं। यंत्र के चारों ओर काजल से एक गोल घेरा बना दें और 21 दिन तक एक माला मंत्र जप अवश्य करें। इसमें मंत्र सिद्ध 'पलान्जा काष्ट' का प्रयोग विशेष है, इसे घेरे के बाहर रखें, और साधना पूर्ण होने पर अपने घर के बाहर गाड़ दें।



### मंत्र

॥ ॐ शं शां शिं शर्णं शुं शें शौं शौं शः स्वः सं स्वहा॥  
दूसरा प्रयोग

साधक मंत्र का जप कर दो पुड़िया बनाएं। एक पुड़िया में एक मुट्ठी सरसों और 'गोमतीचक्र' बांधें और उस पर अपना नाम लिखें। दोनों पुड़ियाओं पर मंत्र जप के समय सिन्दूर लगाएं। एक माला मंत्र जप एक पुड़िया को सामने रख कर करें और दूसरी माला मंत्र जप दूसरी पुड़िया रख सिन्दूर चढ़ा कर करें। मंत्र जप के पश्चात् दोनों पुड़ियाओं को साथ-साथ बांध कर भूमि में गाड़ दें तो अत्यन्त प्रेम रहता है।

### मंत्र

बिसमिल्ला मेहमंद यीर आवे घोड़े की अस्वारी एवन करे वेज मन को संभाले अनुकूल बनावे हाँ भरे कहियो करे मेहमंद यीर की दुर्हाई सबद सत्त्वा यिण्ड काचरा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचरा॥

साधना सामग्री - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## सर्व रोग-पीड़ा हरण साबर प्रयोग

कभी पेट का दर्द, कभी कमर का दर्द, तो कभी सिर दर्द, तो कभी आलस्य, बैचैनी। इस प्रकार हर समय कोई न कोई शारीरिक पीड़ा चलती रहे तो सोमवार के दिन प्रातः साधना प्रयोग प्रारम्भ करें। अपने सामने एक ताम्र पात्र में जल रखें, इसके सामने तीन ढेरी नमक की तथा तीन ढेरी राई की बनाएं, पात्र के भीतर 'आदिशक्ति महायंत्र' रखें और 'स्फटिक माला' से एक माला मंत्र जप प्रति सोमवार करें।

मंत्र

ॐ नमो भर्गवते गरुडायामृतशरीराय सर्वरोगविधंसनाय  
 कृत्यानेकविदारणाय भूतप्रेत पिशाचोच्चाटनाय एहि  
 एहि गरुडादु रोगान् दूरी करो चेत्कुदाङ्गु सटी  
 पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि ये गरुडादु रोगान् दूरी  
 करो चेत्दाङ्गु सटी पिशाचकुमार सारी आदि रुद्र के  
 आणु निर्मूल करो चेत्कुदाङ्गु आदिशत्ति के आणुमारु  
 खिदाडी ॐ गङ्ग की शत्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र  
 हश्वर तेरी वाचा।

प्रति सोमवार मंत्र जप के पश्चात् यह जल रोगी व्यक्ति को पिला दें, तथा राई और नमक तवे पर अथवा किसी अन्य पात्र पर डाल दें, और राख दूर फेंक दें। वैसे तो यह प्रयोग ज्यारह सोमवार का है, लेकिन इतनी अधिक सिद्ध और अचूक साधना है, कि तीसरे सोमवार से ही प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होने लगता है।

साधना सामग्री - 340/-

## जैन तंत्र और साबर प्रयोग

जिन वाणी ग्रंथ के अनुसार सबसे अधिक प्रभावशाली मंत्र नवकार मंत्र है, लेकिन नवकार मंत्र सर्व उन्नति के लिए और साथ ही मन में भक्ति और त्याग के साथ साथ सात्त्विक भाव उदय करने के लिए होता है। जिस प्रकार गायत्री मंत्र, नवार्ण मंत्र, शिव मंत्र की विशेष व्याख्या है, उसी प्रकार नवकार मंत्र के सम्बन्ध में भी एक पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। 48 मिनट तक किया जाने वाला यह नवकार मंत्र अपने आप में एक चमत्कारी मंत्र है। इसके साथ ही जैन समाज ने व्यापार की ओर तथा आर्थिक उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया जिसके कारण भारतीय व्यापार जगत और उद्योग जगत में एक प्रकार से पूरा वर्चस्व रहा है। जैन साधुओं ने अपने समाज के सहयोग से ही पूरे भारतवर्ष में बड़े-बड़े उपासरों का निर्माण किया है। जहाँ प्रतिदिन सुबह शाम प्रवचन के

साथ साथ साधना सम्पन्न की जाती है।

जैन समाज पर लक्ष्मी की ये कृपा घर में धार्मिक वातावरण, साधना का भाव तथा कार्य के प्रति तीव्र भावना रही है, वहाँ प्रत्येक जैन घर में महावीर घण्टाकर्ण यंत्र, पदमावती यंत्र तथा कनक धारा यंत्र स्थापित किये हुए होते हैं। पदमावती साधना लक्ष्मी प्राप्ति की अचूक साधना है, वहाँ महावीर घण्टाकर्ण बालाजी की साधना तंत्र बाधा निवारण और अन्य कलह से मक्ति की अचूक साधना है।

जैन मुनियों ने अपने ग्रंथों में, जो कि न्यादातर पाली और प्राकृत भाषा में लिखे हैं, उनमें भी साबर साधनाओं का विस्तार से विवरण आया है। प्राचीन ग्रंथों से लिये हुए ऐसे ही कुछ विशेष मंत्र एवं साधनाएँ दी जा रही हैं जो कि साबर साधनाओं का स्वरूप है। जैन धर्म और बौद्ध धर्म एक प्रकार से हिन्दू धर्म के ही भाग हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि सब सम्प्रदायों तथा धर्मों में साधना पर विशेष बल दिया गया है।

## व्यापार लाभ प्रयोग

व्यापार वृद्धि, बिक्री बढ़ाने और निरन्तर लाभ होने के लिये इस प्रयोग को प्रामाणिक बताया है। बुधवार के दिन अपने सामने 'पद्म गुटिका' किसी पात्र में रख दें और उसके सामने विजय माला से 21 माला मंत्र जप करें। इस प्रकार केवल तीन दिन प्रयोग करें। मंत्र पढ़ते समय सफेद धोती पहनें, इसके अलावा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, अपना मुंह पूर्व दिशा में रखें।

मंत्र

अैं हीं श्रीं अहं अ सि आ उ सा अनाहत  
विधोयं अहं नमः ।

जब तीन दिन प्रयोग समाप्त हो जाय, तब वह विजय माला गले में धारण कर लें और वह सिद्ध की हुई 'गुटिका' दुकान में या गल्ले में, अथवा जहां पर रूपये पैसे रखते हैं, वहां पर रखें तो व्यापार निरन्तर बढ़ता ही रहता है। लक्ष्मी समुद्र से उत्पन्न हुई थी, समुद्र फैन भी लक्ष्मी का ही प्रतीक माना गया है; अतः उस पर यह प्रयोग प्रामाणिक रहता है। विजय माला में एक मनका स्फटिक, दूसरा रुद्राक्ष, तीसरा मूँगा का होता है। इस प्रकार से परी माला गंथी हुई होती है।

वस्त्रतः प्रत्येक व्यापारी बंध को यह प्रयोग करना ही चाहिए।

साधना सामग्री - 300/-

‘जनवरी’ 2008 मंत्र-वंच-यंच विहार ‘72’

## रोग नाशक प्रयोग

घर में किसी को बुखार आ गया हो, या किसी प्रकार का रोग हो या ऐसी स्थिति बन गई हो कि घर में कोई न कोई रोगी बना रहता हो, रोग पर बराबर चर्चा होती रहती हो और रोग नियंत्रण में नहीं आ रहा हो या बीमारी से परेशान हो गया हो, तो यह प्रयोग अचूक माना जाये।

किसी भी शुक्रवार को अपने सामने तीन मूँगे के टुकड़े रख दें, जो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, फिर इस पर जल धार चढ़ावें और फिर दूध से धोकर फिर जल चढ़ावें, जल चढ़ाते समय निम्न मंत्र का 108 बार उच्चारण करें, इसके बाद मूँगे के टुकड़े निकाल कर अलग रख दें, और वह दुग्ध मिश्रित जल पूरे घर में छिड़क दें तथा एक चम्मच रोगी को पिला दें।

इस प्रकार मात्र तीन दिन प्रयोग करें तो घर से बीमारी हमेशा-हमेशा के लिये चली जाती है, और रोगी को तुरन्त आराम मिलता है।

### मंत्र

ॐ ए हर्यं क्लर्णं क्लर्णं क्लर्णं अर्हं नमः ।

वस्तुतः यह रोग नाशक प्रयोग आजमाया हुआ है, और महत्वपूर्ण है।

साधना सामग्री - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

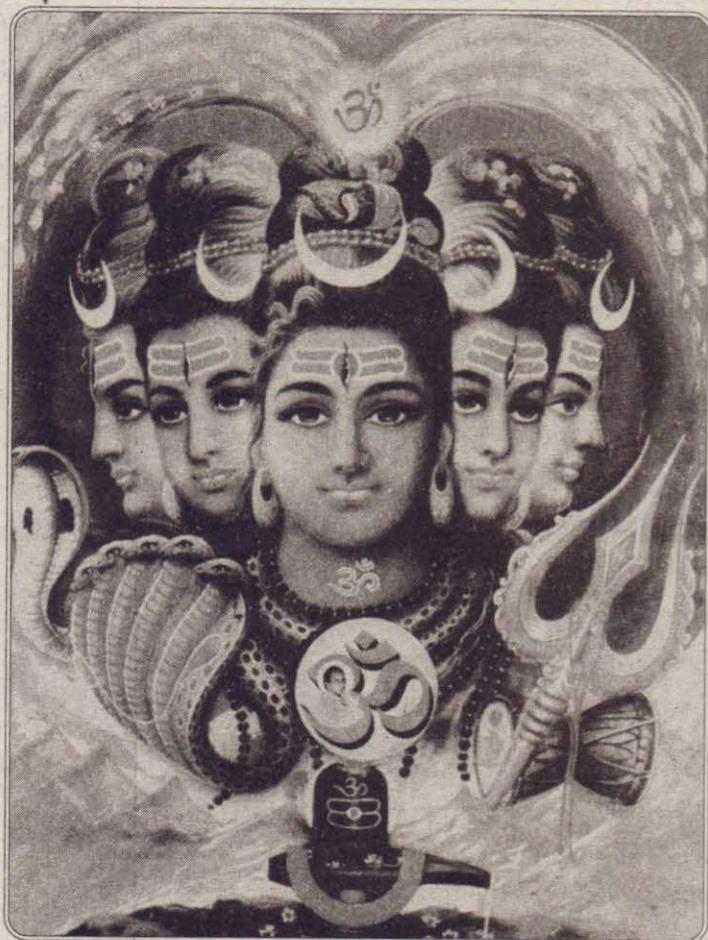
## आत्म रक्षा प्रयोग

आजकल चारों तरफ शत्रु और विरोधी बढ़ गये हैं, न मालूम कब कौन हमला कर दे, अथवा कोई तांत्रिक प्रयोग कर दे तो जीवन बरबाद हो सकता है।

इससे रक्षा के लिए आत्मरक्षा प्रयोग है। जिसका भी समाज में नाम है, या जिसके पास भी धन-दौलत है, उसको नित्य यह प्रयोग कर लेना चाहिए। इसमें 'आत्म रक्षा गुटिका' अपने सामने रखकर मात्र ग्यारह बार मंत्र उच्चारण कर वह गुटिका पुनः अपने स्थान पर रख दें, तो रक्षा प्रयोग का प्रभाव चौबीस घंटे रहता है। यह गुटिका मंत्र सिद्ध होनी चाहिए, और इसे यात्रा के समय या बाहर जाते समय अपने साथ ले जा सकते हैं। इसमें केवल ग्यारह बार मंत्र जप ही पर्याप्त हैं।

### मंत्र

एष्म हवद्द मंगलं ब्रजमह शिलामस्तेकरोपरिणमो  
अरहंताणं अंगुष्ठ्योः णमो सिद्धाणं तर्जन्योः णमो जा सकता है।



आथर्विण्याण मृद्यमरो णमोउज्ज्ञायाणं अन्नामिकयो णमो  
लोएसव्वसाहूणं कनिष्ठकयोः एसो पंच णमोकारो  
ब्रजमह प्राकारं, सव्वपावण्णासूणे जलभृतरवातिका  
मंगलाणं च सव्वेस्मि खादिरांगार पूर्ण खातिका।

वस्तुतः इस मंत्र का एक बार, दो बार उच्चारण करना ही सिद्धिदायक माना जाया है।

साधना सामग्री - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## नवग्रह आरिष्ट निवारक प्रयोग

ग्रहों का प्रभाव होता ही है, मगर जैन साहित्य में एक ऐसा भी प्रयोग है, जिससे किसी भी प्रकार का ग्रह का दोष समाप्त हो जाता है, और उसका अशुभ प्रभाव मिटकर वह शुभ फल देने लग जाता है।

ताम्रपत्र पर अंकित नवग्रह यंत्र को अपने सामने रख दें और निम्न मंत्र की एक माला केरें, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करने से छः महीने तक अशुभ ग्रहों के दोष व्याप्त नहीं होते, छः महीने के बाद ग्यारह दिन का पुनः प्रयोग किया जा सकता है।

साबर साधनाएं अत्यन्त सरल और सामान्य जन के लिए हैं, इस कारण इसमें किसी प्रकार की त्रुटि रह भी जाती है तो कोई हानि नहीं पहुंचती, ये साधनाएं अपने दैनिक क्रियाकलाप के साथ सम्पन्न की जा सकती है, पूर्ण श्रद्धा और विश्वास हो तभी ये साधनाएं करनी चाहिए। साबर शाह, आंकार स्वामी, अमरकण्टक के बाबा औघड़नाथ, भैरवधारी के निर्भयानन्द कुछ ऐसे साबर साधनाओं के विद्वान हैं जिनके साथ पूज्य गुरुदेव ने साबर साधनाओं के सम्बन्ध में विचार विर्मश किया।

यों, यदि व्यक्ति चाहे तो नित्यं ज्यारह बार इस मंत्र का उच्चारण कर ले, तब भी उसके जीवन में ग्रहों की अशुभ बाधा व्याप नहीं होती।

### मंत्र

चन्द्रमा शुक्र-ॐ हर्ण णमो अस्तिंताणं।  
सूर्य मंगल-ॐ हर्ण णमो सिद्धाणं।  
बुध वृहस्पति-ॐ हर्ण णमो उवज्ञायाणं।  
शनि राहु-ॐ हर्ण लोए सत्त्वसाहूणं।

वस्तुतः यह आजमाया हुआ प्रयोग है, और नवग्रह यंत्र के सामने यदि नित्यं ज्यारह बार उच्चारण किया जाय, तो उसके सारे काम सफल होते रहते हैं, और किसी प्रकार की कोई अड़चन या बाधा नहीं आती।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### फौजदारी दीवानी मुकदमा निवारण प्रयोग

नहीं चाहते हुए भी कई बार मुकदमों में उलझना पढ़ता है, और ऐसी स्थिति में जीतना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है। यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, मुकदमे के दिन 'विजय यंत्र' के सामने निम्न मंत्र की एक माला अर्थात् 108 बार उच्चारण करके जावें तो निश्चय ही उसके हक में ही निर्णय होता है। उस दिन जो भी बहस होती है, वह भी उसके हक में ही होती है, इससे मुकदमे के जीतने के आसार बढ़ जाते हैं, शत्रु या विरोधी पक्ष परास्त हो जाता है, वह या तो समझौता कर लेता है या अपनी हार मान लेता है।

### मंत्र

ॐ हर्ण श्रीं कलीं चक्रेश्वरी कार्यसिद्ध  
विजयं देहि देहि स्वहरा।

यह प्रयोग पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

साधना सामग्री - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### मनोकामना सिद्धि

हमारे सामने नित्य कई समस्याएं और कार्य उपस्थित होते हैं, जिनके सम्पन्न होने से प्रसन्नता और अनुकूलता प्राप्त होती है, परन्तु ऐसे कार्यों की सम्पन्नता में बाधाएं भी आती हैं। यदि घर से यह प्रयोग करके निकलें तो निश्चय ही उसका सोचा हुआ कार्य सफल होता ही है।

प्रातः उठकर सफेद आक के बने हुए 'श्वेतार्क गणपति' के सामने मात्र ज्यारह बार इस मंत्र का उच्चारण कर लें और प्रार्थना करें कि यह कार्य आज मेरा सिद्ध हो जाय, गणपति के सामने गुड़ का भोग लगा दें फिर कार्य के लिये घर से निकल जायें तो वह कार्य अवश्य ही सफल होता है। गुड़ का जो भोग लगाया हुआ है, वह घर में या बाहर बाट दें।

### मंत्र

ॐ हर्ण अ सि आ उ मा नमः।

वस्तुतः यह सिद्ध प्रयोग है। श्वेतार्क गणपति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होते हैं, परन्तु मंत्र सिद्ध गणपति प्राप्त हो जायें, तो जल्द घर में स्थापित कर लेने चाहिए क्योंकि ये प्रयोग कई - कई पीढ़ियों के लिये सहायक बने रहते हैं।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

उपरोक्त साबर साधनाएं प्रायोगिक साधनाएं हैं, जिन्हें लोगों ने अपनाया है तथा स्वयं सम्पन्न की हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि ये साधनाएं जन-जीवन की भाषा में हैं और गुरु परम्परा से ये साधनाएं शिष्यों को प्राप्त हुई हैं इसीलिए इन साधनाओं में प्रत्येक मंत्र में गुरु के प्रति भक्ति भाव स्पष्ट होता है।

जैसा कि उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि इन साधनाओं में मुहूर्त इत्यादि की आवश्यकता नहीं रहती। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर सकता है। विशेष दृयान देने वाली बात यह है कि आप अपनी मनोकामना, समस्या इत्यादि से सम्बन्धित साधना गुरु को साक्षी रख कर, उन्हें इष्ट मान कर, शुद्ध भाव से सम्पन्न करें तो शीघ्र फल अवश्य ही प्राप्त होता है। एक साथ ज्यादा साधनाएं करने की अपेक्षा एक-एक साधना करने से दृयान एकाग्र रहता है।

कलियुग में साबर साधनाएं मुनियाँ, योगियाँ तथा गुरुओं द्वारा दिये गए वरदान मंत्र ही हैं।

श्रद्धा सुमन

भावांजलि

# सुदृगुकृष्ण निखिल

फिर आया नववर्ष  
फिर आया वसंत

गीत अश्क बन गये  
छन्द हो दफन गये,  
साथ के सभी दिये धुआं-धुआं पहन गये  
और हम झुके-झुके,  
मोड़ पर रुके-रुके  
उम्र के चढ़ाव का उतार देखते रहे,  
कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे!

## आपकी याद में पुकारते हम सभी शिष्य

देश में हजारों गृहस्थ योगी होंगे, विचरण करते हुए जात-जाती है। ऐसा निखिलेश्वरानन्द, जो किसी भी चुनौती का अज्ञात योगी, जो परमहंस अवस्था में हों, परन्तु आपके जैसा दृढ़ता से सामना करने में समर्थ, जिसने पृथ्वी तल पर सशरीर कोई नहीं -

गठीला कसा हुआ, बलिष्ठ शुभ्र वर्णीय शरीर, छः फुट से दृढ़ता से सामना करने में समर्थ, जिसने पृथ्वी तल पर सशरीर भी ऊंचा कद, मस्तिष्क पर उभरी त्रिपुण्ड रेखाओं से युक्त दृढ़ता से सामना करने में समर्थ, जिसने पृथ्वी तल पर सशरीर दैदीत्यमान तेजस्वी चेहरा, और हृदय को भेदने वाली आंखें, भी ज्यादा अपनत्व दिया, शिष्यों के लिए अपने खून का एक-सिंह के समान निडर, निर्भीक चाल से पूरे भारत वर्ष एवं एक कतरा न्यौछावर करने को तत्पर रहा, अपनी तपस्यांश पश्चिमी देशों में भारतीय संस्कृति की ज्योति प्रज्वलित करने एवं साधनाओं की शक्ति से शिष्यों को साधनात्मक ऊंचाई पर वाले व्यक्तित्व... निखिलेश्वरानन्द, जिसका गृहस्थ-नाम डॉ. नारायणकृष्ण निखिल श्रीमाली... जिनकी छवि आज भी मेरी आंखों अन्दर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की अगम्य अगोचर साधनाओं को के बीच घूमती हुई, नेत्रों के द्वारा शून्य में विलीन होकर पथरा समेटे हुए सद्गुरुदेव निखिल! आप कहां हो?

वादा करके, बड़ी मुश्किल में डाला आपने,  
जिन्दगी मुश्किल थी, अब मरना भी  
मुश्किल हो गया।

साधारण से घर में जन्म लेकर  
जिस प्रकार से भारतवर्ष की  
लुम होती हुई प्राचीन संस्कृति  
ज्ञान, विज्ञान, मंत्र, योग  
दर्शन और  
आध्यात्मिकता; सबको  
जिस प्रकार से अपने  
व्यक्तित्व के  
बल पर  
पुनर्जीवित कर,  
दिखा दिया कि एक  
छोटा सा व्यक्ति भी  
अपनी क्षमता के  
बल पर कालजीयी  
बन सकता है, कि जिससे  
वह पूरे विश्व के साधकों  
के हृदय पर छा जाय,  
जिसने आयुर्वेद और दुर्लभ  
जड़ी बूटियों की शोध कर  
'प्राकृतिक विज्ञान' को जो नये  
आयाम दिये हैं, पदार्थ विज्ञान  
को नयी गति एवं मृत प्राय आयुर्वेद  
को जिस प्रकार से संजीवनी देकर  
जीवन्त किया है, वह आश्चर्यजनक व्यक्तित्व  
अपराजेय सद्गुरुदेव निखिल! आप कहां हो?

तुमने निगाहें लुक से देखा था एक बार, दुनिया बदल  
गयी मेरी, इतनी सी बात में।

आपने भारतीय जनमानस में जुझारु तीव्रता के साथ ज्योतिषी सम्मेलनों की अध्यक्षता करते हुए जनमानस के बीच जिस तरह ज्योतिष सम्बन्धी गूढ़ रहस्यों से परिचित कराया, भारतीय समाज ज्योतिष से सम्बन्धित किसी भी तथ्य को केवल आप जैसी व्यक्तित्व के मुखारविन्द से निकलते ही आपका ही योगदान है कि आज ज्योतिष विद्या पुनः भारतीय समाज में ही नहीं, विश्व में गर्व के साथ गैरवान्तिव है, और यही नहीं आपने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रंथ रचित कर इस विद्या

से जिस तरह सामान्य जन-जन को अवगत कराया है, जिस तरह से सामान्य जन भी ज्योतिष विद्या की तरफ पुनः लालायित हुआ, भारतीय समाज के लिए आश्चर्य है। ऐसे भारतीय समाज ने आपको कई बार सम्मान प्रदान कर, जिस प्रकार अपने हृदय का मौन प्रेम आपके लिए प्रकट किया। ऐसा भारतीयों को ज्योतिष प्रेमी बनानेवाला, मृत प्राय ज्योतिष को जिस प्रकार जीवन्त किया है, वह आश्चर्यजनक अपराजेय सद्गुरुदेव निखिल! आप कहां हो?

जो दर्द दिये अपनों  
ने दिये, जैरों से शिकायत  
क्या करें, वायदा करके  
छोड़ गये हमको, तुमसे भी  
शिकायत क्या करें।

भारतीय समाज में प्राचीन  
साधनाओं को जब काल्पनिक  
समझा जाने लगा, देवताओं का  
मखौल उड़ाया जाने लगा, समाज  
मंत्र-तंत्र-यंत्र के नाम पर घृणा करने लगा

एवं जब भारत में पूर्वकालीन ऋषियों की वाणी का उपहास उड़ाया जाने लगा, भारतीय समाज पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगने लगा, तब आपने अपने संन्यास-जीवन में की गयी साधनाओं से सम्बन्धित मंत्र-तंत्र-यंत्र से

जिस प्रकार भारतीय समाज को चैलेन्ज के साथ अवगत कराते हुए उनकी प्रामाणिकता सिद्ध की, जिस तरह आपने साधना एवं सिद्धियों की प्रामाणिकता से पाश्चात्य संस्कृति के गाल पर थप्पड़ मारा, वह इस विश्व के लिए आश्चर्यजनक है। यह आपका ही प्रभाव है कि आज विश्व पुनः भारतीयों की ओर आशा की आंखें लगाये बैठा है। वर्तमान में पुनः भारतीय समाज सहित विश्व इन साधनाओं की ओर लालायित होकर प्रयत्नशील हो रहा है। आपने जिस तरह 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'

से लुम हुई साधनाओं, सिद्धियों व मंत्रों से भारतीय समाज को जाग्रत किया है, आपके अप्रतिम व्यक्तित्व के प्रभाव से भारतीय समाज पुनः साधनाओं एवं सिद्धियों की ओर गतिशील हुआ है। ऐसा सिद्ध पुरुष, अपने अन्दर साधनाओं एवं सिद्धियों के असीम भण्डार को समेटे हुए प्रकाशमान, सदगुर निखिल! आप कहां हो?

### फूल मिट

जाता है,  
डाली से अलग  
होने के बाद  
तुमने हमको  
मिटा दिया है,  
हमसे अलग  
होने के बाद  
लाखों गृहस्थों को  
अपनी तेजस्विता एवं शक्ति  
प्रदान कर उनसे गुरु-शिष्य  
का सर्वोच्च प्रेम सम्बन्ध  
जोड़ने वाला मसीहा, जिसने  
गृहस्थ लोगों के लिए अपना पूरा  
जीवन न्यौछावर कर दिया, इन गृहस्थ  
शिष्यों को साधना एवं सिद्धियां प्रदान  
करने के लिए अपने संन्यास-जीवन में साथ रहे

जिसने शिविरों के माध्यम से इन गृहस्थ शिष्यों को द्वापर युग के भगवान कृष्ण की तरह प्रेम का रसपान कराया, जिसने विद्रोह करके इन गृहस्थ शिष्यों को अपना जीवनदान किया, जिसने अपनी साधनाओं एवं सिद्धियों के प्रभाव से गृहस्थ शिष्यों के अनगिनत कष्टों को अपने ऊपर झेलकर उनकी

से परिचित कराया, जिसने प्रेम करने की कला सिखाई, जिसने विश्व को शांति प्रदान करने के लिए अमोघ पाठ पढ़ाया, जिसने गृहस्थ शिष्यों के रूप में विश्व को नयी दिशा देने के लिए सिद्धियां प्रदान कीं, जिसने इस भारतवर्ष को पुनः विश्व का आध्यात्मिक गुरु बनाने के लिए अपनी तेजस्विता से कई दीपक आलोकित किये, ऐसा

महाते जस्ती सूर्य, साधनाओं के शक्ति पुंज से विश्व को आलोकित करने वाले सदगुर दे व निखिल! आप कहां हो?

इस बार तेरे साथ  
मुस्कराने की ऐसी सजा  
मिली, ता उम्र मेरी आंख  
से आंसू बयां बने रहे॥

आ! हाँ! काल की क्रूर  
विडम्बना, विधाता की लेखनी,  
गृहस्थ शिष्यों का दुर्भाग्य! ऐसा  
निखिलेश्वरानन्द! जिसकी छाया तले अभी

इन गृहस्थ शिष्यों में कुछ कर गुजरने की क्षमता  
विकसित होने लगी थी, जिनको साधना एवं सिद्धियों का रस  
कण्ठ को आप्लावित करने लगा था, जिनमें निखिलेश्वरानन्द  
ज्योति प्रज्वलित होने लगी थी, जिनमें शेर की हुंकार गुंजरित  
होने को थी, जिनमें प्रेम रस संचार होने लगा था। जिनमें  
मनोकामनाएं पूर्ण कीं।

पाश्चात् संस्कृति से विमुख होकर भारतीय संस्कृति का गैरव बढ़ाने का भाव पैदा हुआ था, जिनमें 'भक्ति नहीं शक्ति चाहिए'। उद्घोषित होने लगा, ऐसे समय में प्रकृति ने क्रूर होकर बुद्ध की तरह ध्यान योग सिखाया, जिसने शिष्यों को अपनी निखिलेश्वरानन्द जी को भौतिक शरीर छोड़ने को मजबूर कर तपस्यांश से तेजस्वी बनाया, जिसने साधनाओं के माध्यम से दिया, ऐसे निखिलेश्वरानन्द को मजबूर कर दिया, जिसने उन्हें साधकत्व प्रदान करते हुए देव तुल्य बनाया, जिसने साधनाओं और सिद्धियों को अपने अन्दर आत्मसात् करके अपने शिष्यों में पुनः जोश और जवानी भरी, जिसने अपने उस ऊंचाई का स्पर्श किया था, जिसके कारण वे इस अदृश्य शिष्यों को आत्मलीन होने की क्रिया समझाकर आत्म सौन्दर्य जगत में भी सभी क्रृषियों एवं देवताओं द्वारा वन्दनीय थे।

सिद्धाश्रम जैसा लोक, जहां वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसे पूर्वकालीन  
ऋषि सूक्ष्म शरीर में रहते हैं, उन्हें अपनी वन्दना द्वारा हृदय  
का प्रेम प्रकट करते हुए उनमें उन साधनाओं के रहस्यों को

जानने के लिए उत्सुक हैं, जो उनके लिए गूढ़तम हैं। ऐसे  
निखिलेश्वरानन्द को प्रकृति ने कूर मजाक करते हुए गृहस्थ  
शिष्यों से छीन कर उनके हृदय का तार छेड़कर जिस प्रकार  
अनाथ कर दिया है, उसके कारण पूछना ही पड़ रहा है,  
**सद्गुरु निखिल! आप कहां हो?**

ये क्या, चंद ही कदमों पे, छोड़ कर चले गये।  
तुम्हें तो मेरा साथ, दूर तक निभाना था।

निखिलेश्वरानन्द जी का सिद्धाश्रम गमन करना विधाता के  
लेख में सही हो सकता है, परन्तु निखिलेश्वरानन्द जी के  
पृथ्वी तल पर न रहने के कारण गृहस्थ शिष्यों में प्राण तत्व  
नहीं है। मैं ही नहीं, पूरे पृथ्वी वासी, गृहस्थ शिष्य निष्प्राण  
और गतिहीन हो गये हैं, जिनमें हलचल नहीं है, स्पन्दन नहीं  
है। ये गृहस्थ शिष्य भी भंवर में फंस गये हैं। इन्हें दुःख है कि  
जब तक हमारे अन्दर कोई चेतना नहीं थी, कोई समझ नहीं  
थी, तब तक आपने इन्हें अपने सीने से लगाया, इनके हमदर्द  
बने रहे। जब इनमें समझ आने लगी, जब इन्हें कुछ अहसास  
होने लगा, जब इन्हें आपके प्रति प्रेम होने लगा, जब उन्हें  
आपकी पृथ्वी तल पर उपस्थिति का महत्व समझ में आने  
लगा, तब आप भी निष्टुर हो गये। यह सही हो सकता है कि  
गृहस्थ शिष्यों ने आपके साथ घात-प्रतिघात किये हों, यह हो  
सकता है, इन्होंने आपकी आलोचनाएं की हों, यह हो सकता  
है; कि इन्होंने आपको तिल-तिल कर जलाया हो, परन्तु क्या  
यह सही नहीं है कि हम जिस समाज में रह रहे हैं, उस समाज  
से हमें यही मिला है और हमारे चारों और जो परिवेश है,  
वातावरण है, उसने हमें यही सिखाया है, लेकिन क्या पुत्रों  
से माता-पिता इसी आधार पर निष्टुर होकर अलग हो  
सकते हैं, जबकि उनमें सही समझ नहीं है और अब समझ  
आयी है तो फिर पूछना ही पड़ रहा है। **सद्गुरुदेव निखिल!**  
**आप कहां हो?**

तेरे वादे पे मुझको भरोसा तो है,  
उम्र ही कम हो तो मैं क्या करूँ।

आ! हाँ! सिद्धाश्रम के ऋषि, मुनि वशिष्ठ, विश्वामित्र, गर्ज,  
अत्रि अन्य पूज्य ऋषिवर देवता, अपने बीच निखिलेश्वरानन्द  
को पाकर खुश हो रहे होंगे और खुश भी क्यों न हों? आपको  
अब साधनाओं एवं सिद्धियों के रहस्य उनके श्रीमुख से सुनने  
को जो मिल रहे हैं! आपको पूज्य निखिलेश्वरानन्दजी को पाने

की बधाई हो, परन्तु इस चिंतन का क्या होगा, जिस चिंतन  
के कारण निखिलेश्वरानन्द ने गृहस्थ शिष्यों के रूप में छोटे-  
छोटे दीपक प्रज्वलित किये थे!

यह भी तो धुब्र सत्य है कि आपने हमें पूरी तरह से अनाथ  
नहीं किया, अपने ज्ञान दीप को निरंतर प्रकाशित करने के  
लिए गुरुदेव नन्दकिशोर जी, गुरुदेव कैलाश जी, गुरुदेव  
अरविन्द जी जैसे महान् व्यक्तित्व दिये हैं, जो आपके ही अंश  
हैं और आपकी ज्ञान चेतना का सूर्य त्रिगुणित होकर ब्रह्माण्ड  
को प्रकाशमान कर रहा है, यह आपकी ही महती कृपा है कि  
आपने हमें जीवन के रेगिस्तान में अकेला नहीं छोड़ा, तूफानों  
में भी हाथ थामने के लिए भौतिक रूप से विमूर्ति दिव्यात्माएं  
प्रदान की हैं लेकिन फिर भी आप की याद तो आती ही है,  
फिर भी मूढ़ बुद्धि से पूछ रहा हूँ, **सद्गुरुदेव निखिल!** आप  
कहां हो?

तुम मेरे लिए अब नया इलजाम न ढूँढो।  
दे दिये जो इलजाम, वेही काफी है॥

सभी गृहस्थ शिष्य उस सिद्धाश्रम के सभी ऋषियों, मुनियों  
से आर्त स्वर में उनके श्री चरणों में नमन करते हुए पुकार रहे  
हैं। यदि इन गृहस्थ शिष्यों की ज्योति इस तूफान के प्रभाव से  
कम्पायमान नहीं होगी, इनके आशा के दीपक नहीं बुझेंगे,  
किन्तु कुछ शिष्य कर्तव्य विमूढ़ हो जायें, पुनः माया चक्र में  
फंस जायें, दिशाहीन हो जायें, अपने आपको भुला बैठे, तो  
इनको कोई दोष मत देना, ऐसा न हो। तभी तो फिर पूछ रहा  
हूँ। **सद्गुरुदेव निखिल!** आप कहां हो?

सिर से सीने की तरफ, पेट से पांवों की तरफ  
एक जगह चोट हो तो कहूँ, दर्द कहां-कहां होता है।

पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी ने जिस उद्देश्य से ये दीपक  
गृहस्थ शिष्यों के रूप में प्रज्वलित किये हैं, वह उद्देश्य पूरा  
हो, यह उद्देश्य कैसे पूरा हो? इस दीपक की ज्योति में तेल  
कैसे प्रवाहित हो? इस दीपक को कैसे तूफान से बचाया  
जाय? इसलिए आप हमें बचाते रहना, फिर भी आज पूछ रहा  
हूँ। **सद्गुरुदेव निखिल!** आप कहां हो?

शरीर का रोम-रोम उस हवा के, सुगन्ध के झाँके को  
स्पर्श करने के लिए बैचेन है, आत्मा अतृप्त है, उस झाँके के  
बिना आंखें आकाश मण्डल में उन तारा गण की ओर पथराई  
होकर मौन होकर निहार रही हैं कि **सद्गुरु निखिल!** आप  
कहां हो?

दुनिया ने जो जग्घा दिये, बयां तुमसे कर दिये।

तुमने जो जग्घा दिया, बयां किसी से कर न सका॥

# मंगल-शनि यंत्र

यह ज्ञानिविदित तथ्य है कि हम सौन्य व्यक्तियों की आपेक्षा छूट व्यक्तियों को ज्यादा ठकते हैं औव उन्हें ज्यादा नमस्कार फकते हैं। खुब व्यक्तियों को खचा भी जा सकता है, लेकिन यदि ग्रहों की विधि ही अवृद्धि नहीं है तो उनको खचना कंभव नहीं है। नवग्रहों में शनि औव मंगल छूट, छोथी, तामकी औव तीख प्रभाव बाले ग्रह माने गये हैं, जो अवृद्धि होने पर तत्काल व्यक्ति को ऊँचाइयों पर ले जाते हैं औव प्रतिष्ठित होने पर जीवन में अठिनतम पवित्रिति ले आते हैं। काथकों को मंगल एवं शनि ग्रहों की शांति के लिये यह अमूल्य उपहार क्षमत्पय मंगल-शनि यंत्र दिया जा बहा है। काथकों को इकाके लिये खिकी भी प्रकार के विधि विधान की आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल इक यंत्र को मंगलवाक, जो कि प्राणप्रतिष्ठा युक्त है, उक्ते मंगलवाक आधार शानिवाक को प्रातः कामाच्य पूजन फक गले आधार आजू पर धाकण फकना है। इक यंत्र को धाकण फकने मात्र को आपको न केवल मंगल एवं शनि ग्रह के कुप्रभावों को शांति ही प्राप्त होगी अलिंग आपके भाव्य निमण में भी इन ग्रहों आ योगकान प्राप्त होगा।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

### क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि “मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित ‘मंगल-शनि यंत्र’ 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें”, आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित ‘मंगल-शनि यंत्र’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

- : सम्पर्क :-

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

# गुरुरुद्धाम जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

## पर ये विव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं धिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

बुधवार, 27-02-08

यक्षिणी नाम से डरने की आवश्यकता नहीं है। यक्षिणी एक विशेष जाति से सम्बन्धित होती है। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर स्वयं इसी जाति से सम्बन्धित है। अतः यक्षिणी सिद्ध करने के उपरान्त धन-ऐश्वर्य आदि दूर कैसे रह सकते हैं, और यक्षिणी सिद्ध होने के बाद वह मित्रवत् रहती है, जिसके फलस्वरूप वह साधक के मार्ग में आने वाली छोटी -छोटी बाधाएं स्वतः ही समाप्त कर देती है। धनवर्षिणी धनदा यक्षिणी साधना साधक के जीवन की समस्त धन सम्बन्धी इच्छाएं पूर्ण करती हैं। यह साधना सम्पन्न कर साधक अपने जीवन में दरिद्रता को कोसों दूर धकेल देता है और सुख समृद्धियुक्त तथा ऐश्वर्ययुक्त जीवन की प्राप्ति करता है तथा यक्षिणी जीवन भर साधक के अनेक कार्यों को भी सम्पन्न करती है।

गुरुवार, 28-02-08

काली का स्वरूप सामान्य साधकों के लिये अत्यन्त डरावना है ऐसे स्वरूप की सीधे साधना करना प्रत्येक साधक के लिए दुष्कर है। इसीलिए उसे काली के उस सौन्दर्यतम स्वरूप की साधना करनी चाहिए जिसे सुमुखी काली के कहा गया है। दक्षिण काली का सर्वाधिक सुन्दरतम स्वरूप सुमुखी काली ही है। जो वाम मार्गी प्रयोग होते हुए भी गृहस्थ साधकों के लिये उपयुक्त है। सुमुखी काली तंत्र सिद्धि, वशीकरण, शत्रु मारण तथा भाग्यहीनता निवारण सभी में सहायक है।

जीवन में आने वाली नित्य बाधाओं और परेशानियों से मुक्ति प्राप्त करने में सुमुखी काली गुरु चरणों में बैठ कर सुमुखी काली प्रयोग सम्पन्न करने से बढ़ कर क्या सौभाग्य होगा आपके लिए, समाप्त कीजिए अपने जीवन की सभी विषमताओं को और आनन्द लीजिये आने वाले कल का।

सुमुखी काली प्रयोग

शुक्रवार, 29-02-08

गणपति कार्य  
सिद्धि प्रयोग

बेरोजगारी की समस्या आजकल इतनी अधिक बढ़ गई है, कि इससे पूरा युवावर्ग ही ग्रस्त है। वर्षों के सघन अध्ययन के बावजूद जब प्रयास के बाद प्रयास करने पर भी प्रतियोगी परीक्षाओं में एवं साक्षात्कार परीक्षाओं में सफलता नहीं मिलती तो जीवन में कुण्ठा आ जाती है।

भगवान गणपति विघ्न विनाशक हैं, किसी भी कार्य की असफलता के कई कारण होते हैं, ऐसे सभी विघ्नों का नाश भगवान गणपति की इस साधना द्वारा संभव होता है और गुरु आशीर्वाद से उसे शीघ्र ही मनोवांछित नौकरी अथवा व्यवसाय की प्राप्ति होती है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 240/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 460/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को क्रषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

### गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु-चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां विव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी इष्ट्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे विव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बारे में इन 3 दिनों के लिये 27-28-29 फरवरी

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकरा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पाते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही ग्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीआर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीआर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

### पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा

हम मनुष्य के रूप में जन्म लेकर गतिशील तो होते हैं, परन्तु यह हमारी गति काल की गति है, मृत्यु की ओर बढ़ने की गति है, जीवन को समाप्त करने की गति है, यह पूर्णता की ओर बढ़ने का पथ नहीं है, पर यदि गुरु मिल जाएं, तो वे हमको पूर्णता प्रदान कर सकते हैं। उपनिषद कह रहे हैं ह्य 'त्वं पूर्ण वै' . . . तुम पूर्ण हो सकते हो, किन्तु पूर्णता का बोध कौन करा सकता है? और यह बोध वो गुरु करा सकते हैं, जिनमें प्राणश्चेतना हो, जो ब्रह्मचेतना से युक्त हों, जो स्वयं पूर्णता की परिभाषा हों, जो मात्र पूर्ण ही ज्ञाहीं हों अपितु अपने स्पर्श से अनेकों को पूर्ण बना सकते हों, और यह 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' द्वारा ही सम्भव हो पाता है, जो कि जीवन को ब्रह्ममय बनाकर पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाने की क्रिया है। सदगुरु के साक्षात् परब्रह्म स्वरूप को आत्मसात् करने की प्रक्रिया होती है। इसी भावभूमि को पूर्णमदः पूर्णमिदं कहा गया है! यह वही दीक्षा है जो नववर्ष के शुभ अवसर पर गुरुदेव ने प्रदान की थी।

\* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है स्फकनता की ऊनाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शीर्घी प्राप्त कर लेने का, साधना में स्थिरि प्राप्त कर लेने का . . .

\* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निषुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह स्फकनता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .

\* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सायं ७ बजे प्रदान की जाएगी।

# Bhuvaneshwari Sadhana

The Sadhak who accomplishes this ritual becomes rich and powerful like Lord Indra! It is said in "Rig Veda" that only through the good Karmas of past lives and grace of the Guru can one obtain Bhuvaneshwari Sadhana.

When Lord Ram was being crowned his Guru Vashisht said to him - O Ram! In this world a poor man is treated with contempt even by relatives while a rich man is honoured even by strangers.

He further stated - In the world of Sadhanas there is no more powerful Sadhana for becoming prosperous than that of Goddess Bhuvaneshwari.

Lord Ram did just that and his reign was called Ramrajya in which there was prosperity and joy everywhere.

Even Lord Krishna accomplished this Sadhana and was able to found the wonderful city of Dwarka which was full of riches and wealth.

Lord Shiva has said that even a person who has been fated to be poor can become rich through this wonderful Sadhana.

Bhuvaneshwari is the Goddess who rules over the riches of the whole world and She is worshipped even by the gods and Yogis.

According to the great Yogi Gorakhnath following are the benefits of this Sadhana.

After this Sadhana has been done wealth starts to flow into one's life on its own. The person gains a magnetic personality and is easily can influence others, even his enemies.

He is ever protected from peril by the kind Goddess and he remains healthy and fit all through life. He also leads a happy family life and there never is any paucity in his life.

He gains respect and fame in the society and is honoured for his work. Bhuvaneshwari Sadhana is a key to success in life no matter which field one has chosen.

The Sadhana must be tried on a **Full Moon night** between 9 pm and midnight. Have a bath and wear yellow clothes. Sit facing North on a yellow seat.

Cover a wooden seat with a yellow cloth.

On a mound of rice grains place **Bhuvaneshwari Yantra**. On the Yantra place a **Bhuvantray rosary**. Offer vermillion, rice grains and rose petals on the Yantra.

Light ghee lamp and incense. On the right hand side of the Yantra place an Eishwarya Gutika.

Chant one round of Guru Mantra

Then chant 21 rounds of the following Mantra with a **Bhuvantray rosary**.

**Om Hreem Shreem Kleem  
Bhuvaneshwaryei Namah**

After this chant one round of Guru Mantra. Do this regularly for three days. Wear the Gutika in a thread around your neck. Drop the Yantra and rosary bundled, in a river or pond.

Offer food and gifts to a girl below ten years in age. After eleven days drop the Gutika in the river too. This is really a very effective Sadhana that cannot fail even in the present age of Kaliyug.

Sadhana articles - 300/-

Boon for the childless

Any Wednesday or full moon day

# Santaan Prapti Mangala Sadhana

An amazing and unfailing Sadhana that surely blesses one with a child.

Married life without children is like life in a desert. Without the delightful cries of children, their pranks, their jingling laughter everything appears so dull and purposeless. Ask a couple who have been married for the past several years and have not yet been visited by the stork and they shall tell you how colourless life can be without children.

One reason for the absence of children could be the affliction of planet Mars in the horoscope of the husband or the wife or both. A malefic Yoga arising due to the affliction of Mars could not only make married life unhappy due to frequent quarrels between the couple, but could also deny one children.

The Indian world of Sadhanas is full of rituals that could help one overcome various problems of life. One such Sadhana is the *Santaan Prapti Mangala Sadhana* that if tried with full faith and devotion could produce the desired result.

Many childless couples were gifted this Sadhana by revered Sadgurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali and in not one case did it fail to bless the couple with a child. In many of the cases even the best of doctors had declared that the married couples would never be able to have children. But due to the Sadhana even the impossible came out to be.

Married couples who wish to have children could try this wonderful Sadhana.

This Sadhana should be tried on a **Wednesday or Purnima (full moon day)**. Early morning try this Sadhana between 4 am and 6 am. Have a bath. Wear yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North. The wife should sit on the right side of the husband. She should not tie her hair and should let it remain loose. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it place

a steel plate. In the plate place a *Mangal Yantra*. On the Yantra put a betel nut.

Then chant one round of Guru Mantra and ask the Guru to bless you with success in the Sadhana.

Make a mixture of milk, water, curd, ghee and sugar. The husband should then chant one round of the following Mantra with Rock Crystal Rosary while the wife should pour the mixture on the Yantra and betel nut in a steady stream. By the time the one round is complete the betel nut should get fully immersed in the mixture.

***Om Bhoumeshwaraay Vam Purneshwaraay Namah***

After this the wife should sit on the left side of the husband. Place a *Santaan Prapti Yantra* in another steel plate. Offer vermillion, rice grains and flowers on it. Light a ghee lamp. Then chant three rounds of this Mantra with *two yellow Hakeek rosaries*.

***Om Purnendu Purneshwaraayei Yogaadhibal-prakataayei Putra Pradaatavyei Namah***

The husband and wife shall have one yellow Hakeek rosary each. The wife shall chant the Mantra with the husband and thus total six rounds shall be chanted. After Sadhana chant one round of Guru Mantra.

The next day drop all Sadhana articles in a river or pond except the yellow Hakeek rosaries. The husband and wife should wear their respective rosary daily for one or two hours and then keep it in the place of worship. They should wear it thus for one month and then drop the rosaries in a river or pond.

Without doubt this is a very powerful Sadhana whose results cannot fail to manifest provided it is tried with full faith and concentration.

Sadhana Articles - 450/-

12-13 जनवरी 2008

## ਮकर संक्रान्ति साधना शिविर, चंदपुर

शिविर स्थल : कर्मवीर दादासाहेब कम्भमवार जिला क्रीड़ा संकुल चन्द्रपूर, दुरदर्शन केन्द्राजवल, सिव्हील लाईन, चंद्रपूर  
आयोजक: चंद्रपूर: वतन कोकास - 094221-14621 ○ कांचन राठोड - 098223-18821 ○ राजेन्द्र वैद्य - 098502-70295  
○ सुभाष सिंह गौर - 094221-36388 ○ नंदु नागरकर - 094228-36067 ○ प्रविन नागरकर - 098238-63408 ○ पंकज  
नागरकर - 0999603-11344 ○ प्रा. वाय. बी. स्वान - 098223-09813 ○ विजय वैद्य - 093260-41487 ○ नारायण उपलवार  
- 098507-50774 ○ संजय सिंह गवालपंची - 099231-11301 ○ सुरेन्द्र तिवारी - 094221-37664 ○ आशिष दिक्षीत -  
094228-91268 ○ पवन कांडलकर - 098603-31210 ○ घुघुस: वासुदेव ठाकरे - 098817-31149 ○ दिपक येन्डे -  
098500-15587 ○ नरेश गिरी - 098905-46083 ○ सागर गौतम - 098815-18784 ○ दुलसिंह राठोड - 094201-18197  
○ नरसिंह अंकमवार - 094218-46549 ○ किन्हाके साहब - 098606-76217 ○ चिमुर: डॉ. सुरेश मेश्राम - 094217-  
20597 ○ विजय सोनेने - 099210-64220 ○ रामकृष्ण रणदिवे - 097640-28056 ○ विलास पोहीनकर - 094217-82793  
○ अनिल वाघे - 094217-20581 ○ शामराव जी कुंभारे ○ नामदेव कांमडी ○ देवराव चांदेकर ○ भास्करराव भारसाकले  
○ विकास फटींग ○ नरेन्द्र पिसे ○ राष्ट्रपाल डांगे ○ ब्रह्मपूरी: मनिष श्रीवास्तव - 098234-37768 ○ सुरेश सुर्यवंशी -  
094217-25902 ○ प्रा. शंकरराव केळझरकर - 094228-39040 ○ सुरेश मिसार - 07177-272343 ○ अशोक तुडलवार -  
094217-22019 ○ गुरुलीधर दुपारे सर ○ गजानन मातेरे ○ बंदुभाऊ बांगडे - 094228-39306 ○ रामकृष्ण इठावले ○ दादाजी  
नवलाखे ○ बल्लारपुर: प्रकाश डांगे - 094225-49476 ○ चंद्रया चितपटला ○ दुर्गाप्रसाद शुक्ला ○ प्रशांतराव जी  
विजेश्वर ○ माधवराज सोनुले ○ वरोरा: सचिन जाधव सर - 092262-41490 ○ राजुरा: डॉ. महेन्द्र अवचार - 098235-  
58389 ○ रामेश्वर महाजन - 07173-222235 ○ शेषराव खेखारे - 07173-223926 ○ भद्रावती: गणेश पैंदरे - 093701-84676  
○ वर्णी: महेश - 092261-76509 ○ योगेश झिलपे - 07239-228455 ○ प्रशांत मानगावकर - 092700-66321 ○ शितलाप्रसाद  
यादव ○ नर्मदा प्रसाद विश्वकर्मा ○ सुखदेव चव्हाण - 098229-47946 ○ जिवनसिंग चव्हाण - 07239-284318 ○ गडचिरोली:  
प्रदीप चुधरी - 094234-23849 ○ हसमुख लटके - 094221-50848 ○ नरेश - 094236-68899 ○ अरविंद कोडापे ○ हर्षवर्धन  
- 094218-17280 ○ संजय बिडवाईक ○ संतोष भांडेकर - 093700-42859 ○ दिपक रामने सर - 094218-54572 ○ सुरेश  
येरोजवार - 094236-46828 ○ यवतमाळ: श्रीकांत चौधरी - 099219-94731 ○ सेनापती मोने - 098508-73099 ○ अँड.  
रविन्द्र जाधव ○ हरिष राठोड ○ गजुभाऊ सोनकुसरे - 07239-248634 ○ अरुण हांडे - 094200-42553 ○ राजेन्द्र कोंबे -  
0723-2249514 ○ वरदी - 07184-285026 ○ विकास ○ नागपूर: किशोर सिंह बैस - 094233-59000 ○ मधुकर उरकुडे -  
094228-08433 ○ राहुल वाघमारे - 093711-838991 ○ राजेन्द्र सेंगर - 098230-19750 ○ देवचंद पटले - 098900-76356  
○ कन्हान: भाउरावजी ठाकरे - 093728-40421 ○ सुरेश गुरव ○ रामरावजी गुरारी ○ वर्धा: जीतेश देवतारे - 093700-  
76528 ○ गजुभाऊ ठाकरे - 094231-19721 ○ प्रदिप पाठक - 099236-58999 ○ अविनाश बुरांडे - 094226-37059 ○ भंडारा:  
प्रशांत परसोडकर - 093727-62957 ○ कमलाकर साठवणे - 094236-05631 ○ देवेन्द्र कांटखाये - 098810-10402  
○ नरेन्द्र काटेखाये - 092700-30170 ○ मनोज वालोकर - 099601-44833 ○ मुकेश मेश्राम - 07184-282645 ○ गोंदिया:  
चंदनलाल ठाकर - 093255-65715 ○ डी.के.भगत ○ रविन्द्र भोंगडे - 098229-49458 ○ के.एन. मोहाडीकर - 094228-  
34716 ○ आर.टी.पटले ○ कमलाकर चौरागडे - 098232-94900 ○ प्रशांत डोये ○ संतोष गौर ○ डी.के.डोये ○ तुमसर:  
नविन बेलफुलवार - 094228-30697 ○ विनय तिवारी - 093259-76919 ○ तिरोडा: शुक्राचार्य ठाकरे - 094236-06893  
○ बबलु बैस - 094234-24285 ○ बैतुल: आय.डी. कुमरे - 094253-04226 ○ एस.एल.धुवे ○ बोरगांव रेमंड: दशरथ  
वानखडे - 093298-28169 ○ अमरावती: सतिश भिवागडे - 093701-56631 ○ अरुण भातकुलकर - 093254-14682  
○ सुबोध जयस्वाल - 098903-34451 ○ साहेबराव बांते ○ परतवाडा: गनेश मवासे - 098225-74290 ○ राजेन्द्र राठोड  
○ अकोला: ज्ञानेश्वर टापरे - 093269-10838 ○ मास्कर कापडे - 098234-30108 ○ दिनेश कोरे - 098225-60901  
○ रविन्द्र अवचार - 099211-38349 ○ गोबरवाही: बंदुभाऊ खोब्रागडे ○

3 फरवरी 2008

### नवग्रह दोष निवारण साधना शिविर, गुम्बई

शिविर स्थल: सेन्ट्रल रेल्वे वेलफेर हॉल, परेल, अम्बेडकर रोड, वी.आय.पी. शोरूम के सामने, परेल (पूर्व), मुम्बई

मुम्बई: तुलसी महतो - 093230-61288 ○ दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○ अमरजीत गुप्ता - 099676-73807 ○ देवेन्द्र पंचाल ○ जयश्री बने ○ पियुष बेन ○ सुशीला बेन ○ मानवेन्द्र - 093217-88314 ○ नागसेन - 098197-49566 ○ अजय - 099204-05717 ○ बुद्धीराम पाण्डेय - 098190-00414 ○ राहुल पाण्डेय - 098925-56365 ○ योगेश मिश्रा - 098696-38717 ○ अभिषेक ○ अशोक - 098692-34397 ○ भास्करन - 099600-58894 ○ मनीर - 092245-04165 ○ नटुभाई - 093200-90040 ○ संतलाल पाल - 092210-70322 ○ गोपाल पाण्डेय - 093226-74321 ○ पुष्पा पाण्डेय ○ राज पोखरे ○ राकेश तिवारी - 098203-44819 ○ सतीश ○ अनिल भंगेरा ○ अशोक सोनी - 093226-09995 ○ श्रीमती दयालकर ○ द्विवेदी जी - 098211-81782 ○ कमलाक्रेन ○ राजेन्द्र ○ सुजीत मेहता ○ वसंत पुरबिया ○ विकास ○ विलास - 093220-95059 ○ विश्वकर्मा ○ वृदावन - 098190-53360 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

09-10 फरवरी 2008

### शिवत्व वंसतोत्सव साधना शिविर, रायबरेली

शिविर स्थल: महात्मा गांधी इंटर कॉलेज मैदान, बस स्टैण्ड के निकट, रायबरेली (उ.प.)

आयोजक: रायबरेली: जगदम्बा.सिंह - 098383-90535 ○ मोहन लाल वर्मा - 094157-22805 ○ लक्ष्मी शंकर शर्मा - 092365-61487 ○ जी.एस.मिश्रा - 0535-2702927 ○ ओम प्रकाश वर्मा - 093350-96025 ○ पुत्तल लाल - 094510-75272 ○ रामहर कृष्ण दयाल ○ राम चन्द्र श्रीवास्तव 'नील' ○ जगत नारायण श्रीवास्तव ○ अनिल कुमार श्रीवास्तव ○ आर.पी.सिंह ○ हरिश चन्द्र.त्रिपाठी ○ अजय सिंह ○ प्रदीप सिंह ○ रामलखन जायसवाल ○ छोटे लाल ○ प्रकाश यादव ○ राम दयाल ○ पी.सी. श्रीवास्तव ○ राजबहादुर यादव ○ उमेश तिवारी ○ शिव कुमार ○ रणधीर सिंह ○ उषा शर्मा ○ ममता सिंह ○ ज्ञानवरी सिंह ○ लीला मिश्रा ○ माधुरी शर्मा ○ कु.सोनाली सिंह ○ वैशाली नगर: सुशील कुमार त्रिपाठी ○ लखनऊ: बी.सी.शर्मा ○ अजय सिंह ○ जगदीश पाण्डेय ○ सतीश ठंडन ○ सन्तोष नायक ○ राम कुमार सोनी ○ लखीमपुर खीरी: राज कुमार रस्तोगी ○ अनिल कुमार गुप्ता ○ शाहजहापुर: वी.के.भाई ○ रामबाबू सक्सेना ○ रामकृष्ण निखिल ○ शक्ति सिंह ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

17 फरवरी 2008

### दसमहाविद्या साधना शिविर, भरुच

शिविर स्थल: सत्संग भवन, कसक फुवारा, रेल्वे स्टेशन के पास, भरुच, गुजरात

आयोजक: हितेश शुक्ल - 099989-75772 ○ आर.सी.सिंह - 02642-227556 ○ शेठवान साहनी - 098241-25625 ○ हरेश जोशी - 098255-23924 ○ प्रशांत भट्ट - 098241-01656 ○ विजयनाथ साहनी - 098980-32172 ○ आर.के.दास - 02642-225317 ○ हेमंत भट्ट - 098795-19497 ○ ठाकोर भाई - 02642-248049 ○ कौशिक त्रिवेदी - 099252-45899 ○ आर.सी. चौहान - 098252-45277 ○ योगेन्द्र वालीया - 02642-227659 ○ देवेन व्यास - 098795-77219 ○ शिवशंकर प्रसाद - 094271-57750 ○ किशोर गोंद - 098243-75499 ○ रमय - 093774-31545 ○ सी. अजमेरी - 098253-72502 ○ चेतन पटेल - 098254-29041 ○ पी.पी.सिन्हा - 094271-44283 ○ गोविन्द साहनी - 098243-45868 ○ बाबुलाल साहनी - 098241-32161 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

24 फरवरी 2008  
**बगलामुखी साधना शिविर, जालंधर**

शिविर स्थल : 'लक्ष्मी पैलेस' गोपाल नगर, वर्कशॉप चौक से गाजी गुल्ला फाटक की ओर, जालंधर (पंजाब)  
 आयोजक: जालंधर: विजय शर्मा - 094170-60121 ○ गिरीश निखिल - 094636-31989 ○ नवीन कुमार -  
 094632-53907 ○ कुलदीप राय चौहान - 0181-2253213 ○ प्रदीप सिंह 'राजा' - 094170-29821 ○ चन्द्रशेखर/  
 सोमनाथ - 099153-75022 ○ मनोज गौतम - 098885-11510 ○ पवन शर्मा - 098727-85786 ○ नागर शर्मा -  
 093567-34935 ○ सी.के.सिंह ○ सुरेन्द्र शर्मा - 094170-95840 ○ चण्डीगढ़: के.एल.शर्मा - 094173-11701/093565-  
 12539 ○ पठानकोट: अविनाश शर्मा - 094637-17018 ○ राजीव शर्मा - 094175-45867 ○ पुष्कर महाजन -  
 093175-10704 ○ अमृतसर: रवि शर्मा - 098884-60561 ○ बॉबी चौहान - 099152-97105 ○ बटाला: धर्मवीर जी -  
 098890-02045 ○ गुरदासपुर: सुनीता शर्मा - 098764-23969 ○ होशियारपुर: विनीत शर्मा - 094178-84102  
 ○ सुभाष चन्द्र बजाज - 01882-221769 ○ लुधियाना: महेन्द्र सिंह - 094170-39217 ○ धर्मपाल - 098761-21728  
 ○ सुधीर - 098726-55532 ○ फगवाड़ा: हरजिन्द्र - 099880-99339 ○ टांडा: बापू जी - 098159-86613 ○ धुमारवी:  
 सोहनलाल - 094186-36951 ○ हमीरपुर: राजकुमार दत्ता - 094186-56309 ○ जस्सूर: पीताम्बर दत्त - 098166-  
 81884 ○ कटुआ: सतपाल शर्मा - 094191-50472 ○ प्रवीण शर्मा - 094191-50536 ○ जम्मू: दुर्गा प्रसाद दत्ता -  
 094191-97409 ○ मंजूल रायजदा ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

05-06 मार्च 2008  
**महाशिवरात्रि साधना शिविर, भुवनेश्वर**

शिविर स्थल : जनता मैदान, स्वस्ति प्लाजा होटल के पास, भुवनेश्वर (उड़ीसा)  
 आयोजक: श्रीकिशन अग्रवाल - 0671-2308071/093374-07571 ○ प्रमोद कुमार दास - 099381-70010/94373-  
 12225 ○ शुभांशु दास - 094371-46388/06655-220307 ○ सुदर्शन जना - 099371-41108 ○ विश्वनाथ राय -  
 094372-29442 ○ मनोज कुमार पात्र - 094371-66775 ○ सदानंद पंडा - 094371-58514 ○ डॉ. सत्यवादी -  
 094373-58366 ○ रामपाल सेनापति - 094370-60796 ○ बिजय कुमार दास - 094373-12226 ○ प्रद्युम्न कुमार दास -  
 094339-45207 ○ हृषिकेश - 094373-15190 ○ राजेन्द्र कुमार दास - 099374-28817 ○ किशोर कवि - 094371-  
 85620 ○ ईश्वर कवि ○ प्रसन्न कुमार पटनायक - 06729-220493 ○ शंतनु कवि - 099377-52523 ○ प्रकाश कुमार  
 सामन्तराय - 094371-84122 ○ प्रसन्न साहू - 094373-86461 ○ शशिकेशर पंडा - 094373-48241 ○ रविन्द्र  
 कुमार महान्ती - 099381-68839 ○ बिजय कुमार बल - 094376-76455 ○ नीलमणि नंदा - 099373-97994  
 ○ जयंती बेहरा - 093373-33831 ○ एस.के.बेहरा ○ दिलीप दास - 094374-64693 ○ अचुत घोषी - 094374-  
 20052 ○ अरविन्द पुरसेट - 094370-51506 ○ भीमसेन बेहरा - 094374-87391 ○ गंगाधर महापात्र - 094370-  
 47584 ○ भीमसेन नंदा - 094375-78697 ○ प्रह्लाद दर्जी - 098610-94673 ○ बासुदेव भोई - 094377-08021  
 ○ रामस्वरूप पंडा - 099370-95403 ○ मुकेश अग्रवाल - 094371-54776 ○ शिवराम साहू - 099373-04628  
 ○ सानंदा बारिक - 094371-45983 ○ अरुण कुमार मिश्रा - 099371-03692 ○ मोहनलाल रोचवानी - 098613-  
 29382 ○ भुपेन कुमार दास - 094370-51400 ○ हनुमान ओसवाल - 06847-264736 ○ शिवनारायण अग्रवाल -  
 094371-54776 ○ रमेश पोद्दार - 098612-64611 ○ जोगीनाथ साहू - 092383-05762 ○ निरंजन नायक - 094370-  
 00092 ○ अभिजीत मजूमदार ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

# ॐ श्री बोद्ध विजयादृश श्रीमाली, जयपाल



## सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

ये ग्रंथ कोरे कागजों पर स्थाही से नहीं लिखे हैं,

अपितु चेतना से, शिष्यों के हृदय पत्र पर गहराई में झूब कर लिखे हैं

★ निरिवलेश्वरानन्द चिन्तन	40/-	★ मैं बाहे फैलाये खड़ा हूं	20/-
★ निरिवलेश्वरानन्द रहस्य	40/-	★ अप्सरा साधना	20/-
★ सिद्धाश्रम का योगी	40/-	★ बगलामुखी साधना	20/-
★ प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि	40/-	★ धन वार्षिणी तारा (महासरस्वती)	20/-
★ मातंगी साधना	40/-	★ शिष्योपनिषद्	20/-
★ भैरव साधना	40/-	★ दुलभीपनिषद्	20/-
★ दीक्षा संस्कार	30/-	★ गुरु संदेश	20/-
★ तांत्रोक्त गुरु पूजन	30/-	★ सिद्धाश्रम साधना सिद्धि	20/-
★ सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ विधान	20/-	★ नारायण सार	15/-
★ महाकाली साधना	20/-	★ नारायण तत्त्व	15/-
★ घोडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-	★ गुरु और शिष्य	15/-
★ तंत्र साधना	20/-	★ सिद्धाश्रम	15/-
★ भुवनेश्वरी साधना	20/-	★ दीक्षा	15/-
★ मैं सुगन्ध का झोंका हूं	20/-	★ गुरुदेव	15/-
★ हंसा उड़हूं गगन की ओर	20/-	★ साधना एवं सिद्धि	15/-

→ → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ← ←

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

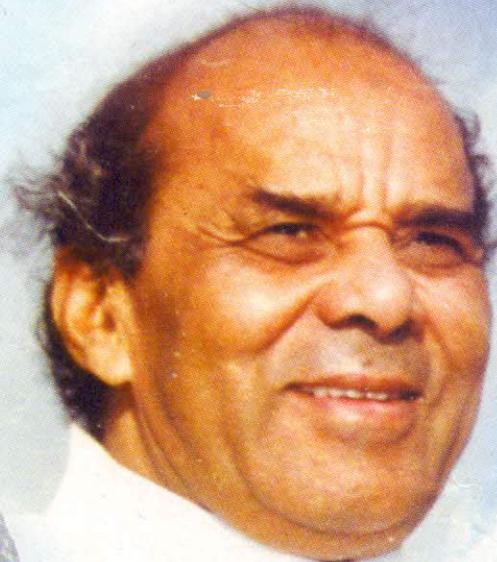
[creator of  
hinduism  
server]

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 06-07 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2006-08  
Licence to post Without pre payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2006-08



वृत्तावर्ष शुभं

अस्तु जयतु जयतु

माहः फटवटी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के  
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक  
05-06-07 फरवरी

वर्ष - 28

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक  
27-28-29 फरवरी

अंक - 01

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010  
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700